सामान्य भारतीय सांप

भारत-देश और लोग

सामान्य भारतीय सांप

रोमुलस व्हिटेकर

अनुवाद

सुधीर सेन

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

आवरण पृष्ठ : लेखक के सौजन्य से प्राप्त चित्र

ISBN 81-237-1459-9

पहला संस्करण : 1995 (शक 1917)

Original Title : Common Indian Snakes : A Field Guide (*English*)
Translation : Samanya Bharatiya Saanp (*Hindi*)

रु. 52.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित

समर्पण

मेरे मित्र

नाटेसन को

उसके परिहास व जंगल-ज्ञान की स्मृति में

'...समय-समय पर असंख्य सरिसृपों से उत्पन्न आतंक की गंभीरता उन सबको बिना सोचे-विचारे विषैला समझ लिए जाने से और भी बढ़ जाती है। अतः सांप के विष की रोधक औषधि की खोज के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि वास्तव में विषैले और विषहीन सांपों में अंतर स्पष्ट किया जाये।'

पैट्रिक रसैल

एन एकाउंट आफ इंडियन सर्पेंट्स
कलैक्टेड ऑन द कोरोमंडल कोस्ट, 1796

विषय-सूची

चित्रों की सूची

श्वेत-श्याम

रंगीन

प्राक्कथन

सांप स्वाभाविक रूप से अद्भुत होते हैं तथा जैविकी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। अतः स्वाभाविक है कि उनके चलने का कौतुकमय तरीका, उनका विष तथा उनकी संकुचन प्रणाली—ये सब विशेषताएं मिलकर उन्हें परभक्षी पशुओं का महत्वपूर्ण समूह बना देती हैं जिनकी अन्योन्य क्रिया जंगलों, रेगिस्तानों, मैदानी व पहाड़ी क्षेत्रों में प्राकृतिक संतुलन बनाए रखती है। सृष्टि में मनुष्य का उद्भव उनके महत्व को और बढ़ा देता है, क्योंकि चाय के बागानों, धान के खेतों, गांवों की झोपड़ियों तथा शहर के गोदामों के कारण कीड़े-मकोड़ों, मेंढकों व पक्षियों, चूहे-चुहियाओं आदि को रहने, खाने और संवर्धन के नये नये आश्रय मिल गये हैं। इनमें से बहुत से तो जहां जम गए, वहीं उनकी आबादी बेहिसाब फैल गयी और वे विनाशक जीव बन गये।

इस प्रकार का विस्तार तथा उनके भोजन की आपूर्ति में परिवर्तन के कारण सांपों की आबादी की सघनता और उनकी किस्मों में भी बदलाव आया। अधिकांश स्थितियों में यह वांछित लगा, क्योंकि बड़ी तादाद में सांप विनाशक जीवों का नियंत्रण करने लगे और इस प्रकार उन्होंने खाद्य आपूर्ति की रक्षा की। लेकिन कुछ सांप जहरीले होते हैं और साथ ही कुछ विषहीन सांप भी डरावने या खतरनाक सांपों की बिरादरी में रखे जा सकते हैं। इस संबंध में हम यही कह सकते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों में पाए जाने वाले सांपों की किस्मों, तथा कृषि के विकास और रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के प्रभाव के परिणामस्वरूप सांपों की आबादी में वास्तव में आए परिवर्तनों के बारे में बहुत कम जानकारी है। इसके अलावा, ऐसे सांपों के बारे में भी हमारे पास जानकारी का अभाव है, जो प्राकृतिक आवासों के संपूर्ण विनाश के कारण खत्म हो गए। हम यह भी नहीं जानते कि फसलों और विनाशक जीवों के बीच संतुलन बनाए रखने में इन सांपों की क्या भूमिका थी। अंततः हम यही जानते हैं कि कुछ दुर्लभ सांप (तथा कुछ आम सांप भी) ऐसे रसायनों व विषों का उत्पादन करते हैं जो बीमारी के अध्ययन के लिए बेहद दिलचस्प और कीमती हो सकते हैं। इस प्रकार इनका आर्थिक के साथ-साथ वैज्ञानिक महत्व भी है।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए भारत के आम सांपों के बारे में इस सरल-सुबोध गाइड का स्वागत किया जाना चाहिए तथा आशा की जानी चाहिए कि सांपों के बारे में अतिरिक्त अध्ययन के लिए यह एक प्रेरणा बनेगी। जैसे जैसे अधिक कामगार खेतों-मैदानों में जानवरों को देखते-समझते हैं तथा हम विशेष प्रजातियों के व्यवहार के

बारे में जानते-सीखते हैं, वैसे-वैसे हम न सिर्फ मानव के संपूर्ण ज्ञान-कोष में वृद्धि करते हैं बल्कि धरती के प्रबंधन के बारे में ज्ञात निर्णयों के बारे में आधार भी तैयार करते हैं जो अंततः हमारे अस्तित्व का आधार बनती है।

यूनिवर्सिटी आफ मिशिगन **कार्ल गैन्स**
एन्न आर्बोर

प्रस्तावना

दुनिया में सांपों की दो हजार से भी अधिक जातियां (स्पीशीज) हैं, जिनमें से 100 मिलीमीटर के अंधे सांप (वॉर्म स्नेक) से लेकर छह मीटर लंबे अजगर जैसे सांपों की दो सौ से अधिक जातियां भारत में पाई जाती हैं। ये सांप अधिकांश आवासों में पाये जाते हैं, उदाहरण के तौर पर गुनगुने समुद्र से लेकर तपते रेगिस्तान, दलदली क्षेत्रों, झीलों, खेतों तथा हिमालय की ऊंची पहाड़ियों पर—जिनमें से कुछ तो 5000 मीटर की ऊंचाई पर ग्लेशियरों के बीच भी रहते हैं।

इस पुस्तक में सभी भारतीय सांपों का विवरण नहीं है और न ही ऐसा कोई प्रयास किया गया है। इसमें सांपों की 30 प्रतिनिधि किस्मों के बारे में जानकारी जुटाई गई है, जिनमें से अधिकांश से एक औसत भारतीय (अंडमान निकोबार द्वीप समूह सहित) की कहीं न कहीं मुलाकात हो ही जाती होगी तथा साथ ही कुछ विशेष महत्व की जातियों से भी किसी न किसी क्षेत्र में मुठभेड़ हो सकती हैं। पुस्तक में जिन प्रजातियों का वर्णन है, उनमें से कई तो पड़ोसी देशों में भी पाई जाती हैं, लेकिन पुस्तक में भारत में पाये जाने वाले सांपों के ही क्षेत्र और विवरण दिए गए हैं। पुस्तक में भारतीय प्रायद्वीप में पाई जाने वाली सांपों की आम जातियों पर ही जोर दिया गया है। हिमालय तथा सुदूर उत्तर-पूर्व (असम) में पाई जाने वाली किस्मों को उतना महत्व नहीं दिया गया।

आशा की जाती है कि यह संस्करण चित्रों, सांपों के विवरणों, क्षेत्रीय आधार पर उनके वर्गीकरण तथा स्वभाव आदि के माध्यम से भारतीय सांपों की पहचान बता सकने की आवश्यकता को पूरा कर सकेगा। आर्थिक दृष्टि से सांपों का बहुत महत्व है—ये बहुत से कृंतकों को खत्म करते हैं। दुर्भाग्यवश, चिकित्सकीय दृष्टि से अपने विष के कारण कुछ बेहद उपयोगी सांप भी चिंता का विषय बने हुए हैं। यदि इस पहलू को छोड़ दिया जाए तो सांप मूलतः एक बेहद अद्भुत और आकर्षक जीव है, जैसा कि उनके बारे में शकुन-अपशकुन, अंधविश्वासों तथा लोगों के धार्मिक जीवन से जुड़े किस्से-कहानियों में वर्णन किया जाता है।

अधिकांश लोग स्वीकार करते हैं कि वो अनावश्यक रूप से सांपों से भय खाते हैं। आशा की जाती है कि यह छोटी सी पुस्तक सरिसृपों के इस वर्ग के प्रति आम आदमी की दिलचस्पी पैदा करेगी।

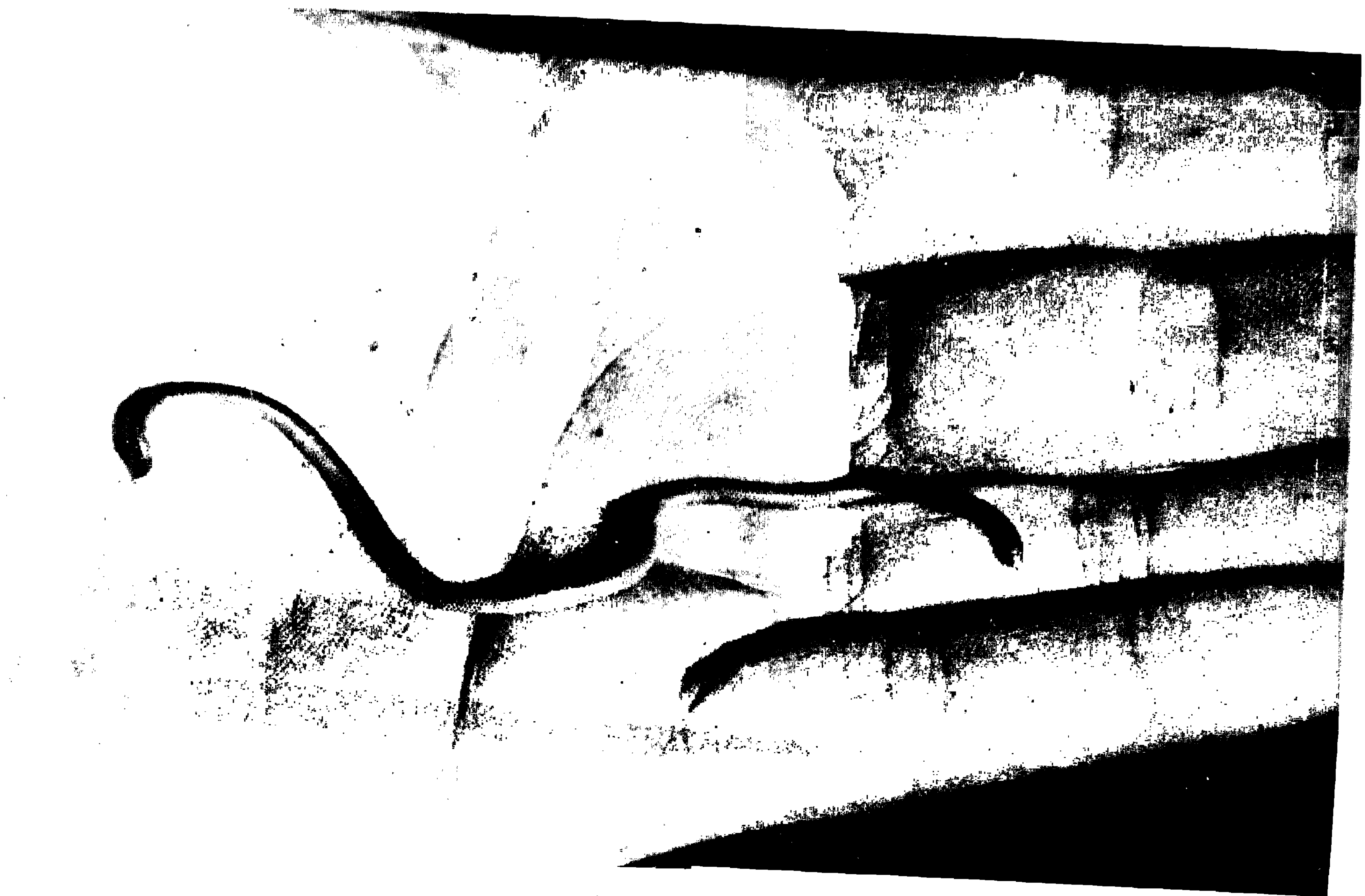
इस पुस्तक को तैयार करने में मुझे अनेक व्यक्तियों से मदद मिली है और मैं उन

सब का आभारी हूं। पिछले आठ वर्षों में सांपों के संग्रह तथा उनके क्षेत्रीय अध्ययन का अधिकतर कार्य इरुला जनजाति के हमारे सहयोगियों द्वारा किया गया, जिनका सांपों के प्राकृतिक इतिहास का ज्ञान सचमुच आश्चर्यजनक है। हमारे सांपों की देखभाल तथा अध्ययन संबंधी तथ्य जुटाने में स्नेक पार्क के बहुत से स्टॉफ कर्मियों, जिनमें सोलोमन पुष्पराज तथा एम.मणि शामिल हैं, का विशेष योगदान है। हमारे मानद सचिव श्री ए.एन. जगन्नाथ राव ने 1969 में मद्रास के स्नेक पार्क की स्थापना के समय से ही हमेशा हमें भरपूर सहयोग दिया है। सांपों के प्रति मेरी रुचि को प्रोत्साहन देने के लिए मैं अपनी मां तथा परिवार का भी आभारी हूं। इसके अलावा इरुलाओं से परिचित कराने के लिए हैरी मिलर, सांपों की तालिका इस्तेमाल के लिए डा. शर्मन ए.मिंटन, तथा सर्पदंश से संबंधित अध्याय को पढ़ने व उस पर टिप्पणी करने के लिए डा. एच.एलिटेर रीड का भी मैं हार्दिक धन्यवाद करता हूं। यहां मैं मद्रास के मौसम विभाग का भी उल्लेख करना चाहूंगा, जिनके सौजन्य से मुझे वर्षा के आंकड़े मिल सके।

पुस्तक की पांडुलिपि के विवेचनात्मक मूल्यांकन तथा सांपों की चाल-ढाल के तहत उनके विवरण के लिए मैं प्रोफेसर कार्ल गैन्स का ऋणी हूं। बंबई की नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के अध्यक्ष श्री जे.सी.डेनियल का भी मैं आभारी हूं, जिन्होंने कई मूल्यवान सुझाव देकर मेरा मार्ग-निर्देश किया। आभारी हूं शेल्डन कैंपबैल तथा स्वर्गीय चार्ल्स ई.शॉ का जिन्होंने मुझे अपनी पुस्तक 'स्नेक्स ऑफ द अमेरिकन वेस्ट' से सांपों के रेखाचित्रों के प्रयोग की अनुमति दी। मैं हार्दिक धन्यवाद करता हूं डा. योशियो सवाई और डा. एम.होम्मा का जिन्होंने मुझे सर्पदंश के आंकड़े उपलब्ध कराए। और अंत में हार्दिक आभारी हूं अपनी पत्नी जाहिदा का, जिसने इस पुस्तक में कई प्रारूप संपादित करने के साथ साथ टाइप भी किए।

रोमुलस व्हिटेकर

विषहीन सांप



सामान्य अंधा सांप

1. सामान्य अंधा सांप (कामन वॉर्म स्नेक)

टाइफलिना ब्रामिना (Typhlina bramina)

विशिष्ट लक्षण : छोटा, कृमि जैसा ; चिकने, चमकदार शल्कः भोथरा सिर और दुम, कोई पैटर्न नहीं।

औसत लंबाई : 12.5 सें.मी., जन्म के समय : 3.5 सें.मी. ; अधिकतम : 17 सें.मी. (चोंचदार अंधा सांप : 60 सें.मी.)।

विवरण : सामान्य अंधे सांपों का रंग लाली लिए हुए भूरा या काला होता है तथा उनके व्यापक रूप से परस्पर छादी चिकने, शल्क बहुवर्णी चमक-दमक लिए होते हैं। सरसरी तौर पर देखने में दुम से लेकर भोथरे सिर तक ये एक सामान्य केंचुए जैसे ही लगते हैं। दुम भी भोथरे सिर जैसी होती है लेकिन इसमें एक छोटी सी हड्डी मौजूद होती है; आंखें, बस, मुश्किल से दिख सकने वाले दो धब्बों जैसी होती हैं, जो शल्कों से ढकी होती हैं।

इनकी निचली सतह आमतौर पर फीकी होती है। इन्हें सांपों की बिरादरी का सिद्ध करने के लिए इनके शल्क तथा जीभ को आवर्धन करके देखने की आवश्यकता होती है। हमारे यहां पाए जाने वाले 14 प्रकार के दृष्टिहीन सांपों में यह जाति सबसे आम पाई जाती है। भारतीय सांपों में ये सबसे छोटे आकार के हैं तथा इनके बारे में पर्याप्त जानकारी भी उपलब्ध नहीं है। कुछ लोग इन्हें आदिम जाति के अथवा अविकसित सांप मानते हैं, लेकिन इतना तय है कि भूमिगत जीवनयापन के मामले में ये बेहद निपुण होते हैं। इनका संवेदिक व्यवहार और चलन क्रियाविधि वैज्ञानिकों के लिए खासी दिलचस्पी का विषय बने हुए हैं। अभी कुछ समय पहले तक इस सामान्य अंधे सांप का वैज्ञानिक नाम *टिफलोप्स ब्रामीनस* था, लेकिन फिर पता चला कि इस वंश में कई उपवंश भी हैं।

वितरण : ये अंधे सांप अंडमान सहित पूरे भारत में फैले हुए हैं। लक्षद्वीप में केवल इसी सांप के पाये जाने की रिपोर्ट है। इसके अलावा समुद्र की सतह से 1,000 मीटर तक ऊंचाई वाली भारतीय पर्वत शृंखलाओं पर भी यह सांप पाया जाता है।

आवास : अंधे सांप जमीन के नीचे चींटियों और दीमकों के बिलों में रहते हैं। इसके अलावा ये लकड़ी के लट्ठों, नम पत्तियों के नीचे, दलदली जंगलों की मिट्टी में तथा सूखे जंगलों व शहर के बाग-बगीचों में भी पाये जाते हैं।

स्वभाव : इस जाति के सारे सांप मादा होते हैं और अनिषेक जननीय यानी गर्भाधान के बिना ही दिये गये अंडों से इसका विकास होता है। प्रकट तौर पर इन आम अंधे सांपों के बहुत शत्रु हैं अतः ये सिर्फ रात को ही अपने बिलों से बाहर निकलते हैं। इनको पकड़ने या छूने पर ये एक बड़ी अप्रिय गंध छोड़ते हैं और साथ ही साथ अपनी दुम की नोक को

ऐंठते हुए डंक मारने का पूरा 'आभास' देते हैं। इनकी गंध से जहां दूसरे अंधे सांपों को इनकी उपस्थिति का पता चलता है, वहीं चींटियों तथा अन्य परभक्षी जीवों को अपने से दूर रखने में भी मदद मिलती है।

बच्चे : यह सांप स्वयं निषेचित 5 से 8 अंडे तक देता है, पर कब कब देता है—इस समायावधि का पता अभी नहीं चला है।

भोजन : स्पष्ट है कि ये कृमियों के साथ साथ नर्म शरीर वाले लार्वा तथा उन चींटियों और दीमकों के अंडों का भी सफाया कर जाते हैं, जिनकी सुरंगों में ये रहते हैं। मद्रास के स्नेक पार्क में रखे गये अंधे सांपों को केंचुओं की खुराक पर ही रखा गया है।

महत्व : सामान्य अंधे सांपों की इस जाति की व्यापकता तथा अस्तित्व से उस स्थान की मिट्टी के ताप और नमी का स्पष्ट पता चलता है। इधर चूंकि भारत में जंगल बड़ी तेजी से काटे जा रहे हैं, अतः आशंका है कि जंगल में पाये जाने वाले अंधे सांपों की कुछ जातियां लुप्त हो जायेंगी।

टिप्पणी : सामान्य अंध सर्प संभवतः विश्वभर में सबसे व्यापक तौर पर पाये जाते हैं। गुलदस्तों-गमलों (संयोगवश) के माध्यम से यह जाति विश्वभर में पहुंची हुई है, यहां तक कि सर्पविहीन द्वीपसमूह लक्षद्वीप, न्यूजीलैंड तथा हवाई में भी।

अहानिकर

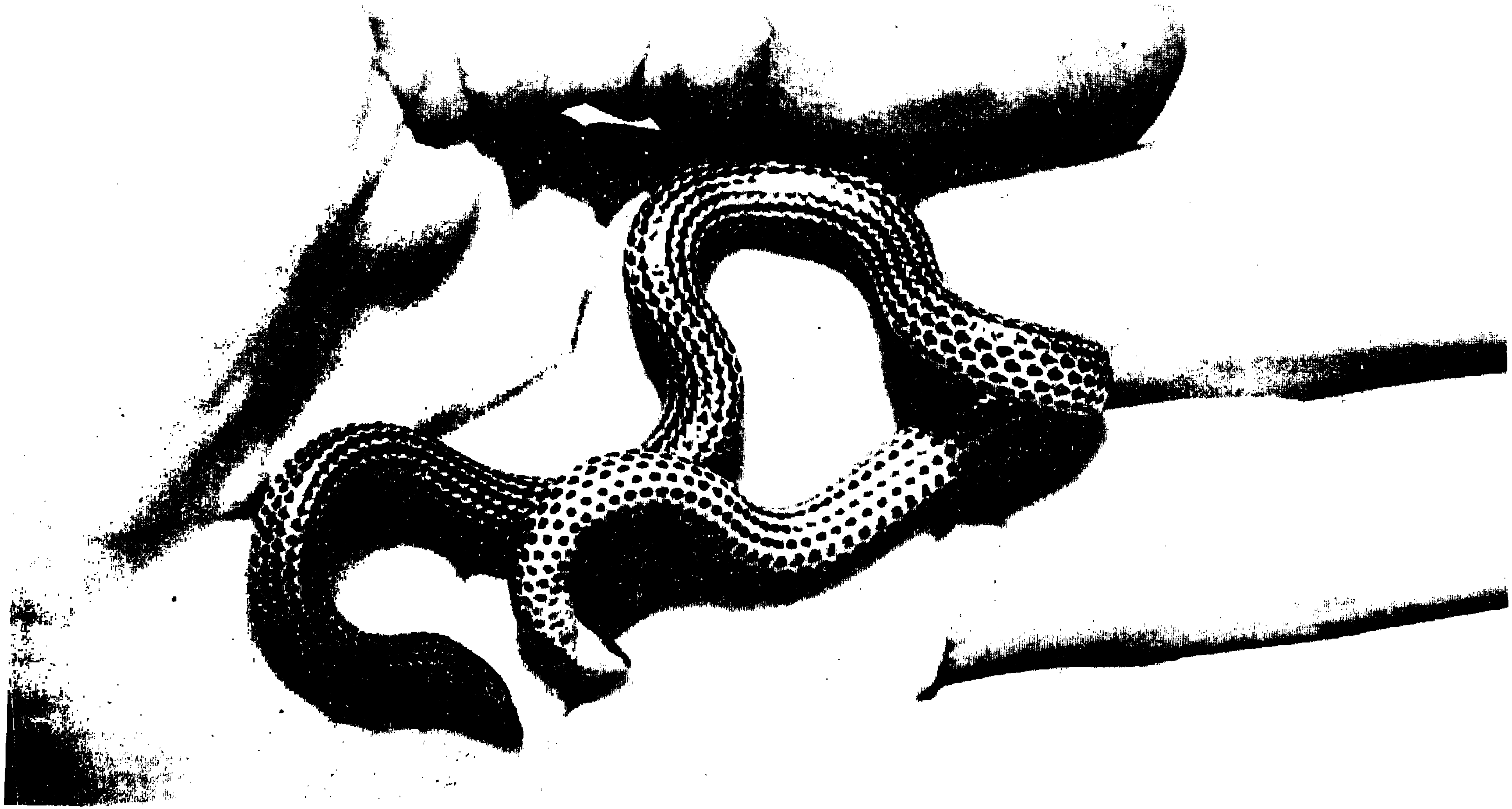
2. पेरॉटेट शील्डटेल स्नेक

प्लेक्ट्रूरस पेरॉटेटी (Plectrurus perroteti)

विशिष्ट लक्षण : छोटा, नुकीला सिर तथा भोथरी दुम, चिकना, चमकदार शल्क, निचली सतह आमतौर पर चमकदार रेखाओं से भरपूर।

औसत लंबाई : 44 सें.मी. तक, व्यास 11 मिलीमीटर।

विवरण : पेरॉटेट शील्डटेल्स का रंग भूरा, प्रत्येक शल्क पर लाली अथवा पीलापन लिए एक केंद्रबिंदु होता है। इनकी दुम का अधोभाग संतरई रंगत लिए होता है तथा कम उम्र के सर्पों की दुम के शीर्ष पर एक पीली रेखा होती है। सभी यूरोपेल्टिड सर्पों के सिर मजबूत और नुकीले दो नन्हीं आंखों वाले होते हैं। इनकी दुम छोटी और भोथरी तथा आखिर में दो छोटे बिंदुओं में बंटी होती है। इन सांपों की बहुवर्णी छटा की चमक दमक सर्वाधिक दर्शनीय तब होती है जब इन्हें धूप में रखा जाता है, लेकिन इस चमक का असली रहस्य तो उनके शल्कों में छिपा होता है, जो अपने पर धूल-मिट्टी की महीन सी परत भी चिपकने-चढ़ने नहीं देते। आमतौर पर शील्डटेल्स को देखकर केंचुए का सा भ्रम हो जाता है, लेकिन जहां केंचुओं की त्वचा ऊपर-नीचे हर तरफ से एक जैसी होती है, वहीं शील्डटेल्स की सभी जातियों के अंध सर्पों का अधोभाग चमकदार रेखाओं से भरपूर रहता है। दक्षिण



पेरॉटेट शील्डटेल स्नेक

तथा मध्य भारत और श्रीलंका के पहाड़ी क्षेत्रों में पाये जाने वाले 43 शील्डटेल्स अथवा यूरोपेल्टिडों में से एक हैं।

वितरण : पेरॉटेट शील्डटेल्स का अस्तित्व पश्चिमी घाट क्षेत्र से गोआ के दक्षिणी क्षेत्र तक होता है। एम.ए. स्मिथ के अनुसार नीलगिरी तथा अन्नामलाई क्षेत्रों में यह जाति काफी आम है। शील्डटेल्स की अन्य जातियां समूचे पश्चिमी घाट क्षेत्र की चुनिंदा ऊंचाइयों तथा आवास स्थलों पर पाई जाती हैं। बहरहाल, इन अंध सर्पों के वितरण में पर्याप्त संशोधन की आवश्यकता है।

आवास : यूरोपेल्टिड वन क्षेत्र में पाये जाने वाले सांप हैं। आमतौर पर यह सड़े-गले पत्तों, खाद-मिट्टी, लकड़ी के लट्ठों व चट्टानों के नीचे जमीन में 10 से 30 सें.मी. तक गहराई में सुरंगनुमा बिलों में रहता है। अधिक खुश्क मौसम में यह जमीन में और भी गहरा चला जाता है।

स्वभाव : सुरंग बनाने में कुशल यूरोपेल्टिड अधिकांश समय भूमिगत ही रहते हैं। रात के समय ये अपने बिलों से बाहर आ सकते हैं, वैसे बरसात के समय इन्हें काफी सक्रिय देखा गया है। मजेदार बात यह है कि ये अंधे सर्प छेड़ने पर भी काटते नहीं हैं।

बच्चे : शील्डटेल सर्प 3 से 5 तक जीवित बच्चे पैदा करते हैं।

भोजन : इन सर्पों का मुख्य भोजन केंचुए होते हैं, लेकिन ये कीटों के लार्वा भी खाते हैं, जिन्हें ये अपने बिलों में पकड़कर रख लेते हैं।

महत्व : हमारे देश में पहाड़ी जंगल जिस तेजी से समाप्त हो रहे हैं, उससे इस बात की पूरी आशंका है कि शील्डटेल्स तथा अन्य अनेक छोटे, कम परिचित वन्य जंतुओं की जातियां समाप्त हो जायेंगी और हम उनकी जैविकी के बारे में अनजान ही रह जायेंगे।

अहानिकर

3. भारतीय शैल अजगर (इंडियन रॉक पाइथन)

पाइथन मोल्यूरस (Python molurus)

विशिष्ट लक्षण : लंबे, मोटे शरीर वाला ; चिकना शल्क ; चमकदार धब्बे।

औसत लंबाई : 3 मीटर, जन्म के समय : 50 सें.मी. ; अधिकतम : 6 मीटर।

अन्य विवरण : भारतीय शैल अजगर एक भारी शरीर तथा चिकने शल्क वाला सांप है जिसकी दुम छोटी होती है तथा सिर भाले के फाल जैसा जरा नुकीला। इसके शरीर पर चमकदार धब्बे पीले से गहरे भूरे रंग के हो सकते हैं। पश्चिमी घाट के पर्वतीय वनक्षेत्र तथा असम में पाये जाने वाले अजगर अपेक्षाकृत श्यामवर्णी होते हैं, जबकि दक्षिण तथा पूर्वी तटीय क्षेत्र में पाये जाने वाले अजगर हल्के वर्ण के होते हैं। इनकी निचली सतह या तो सफेद, पीली या फिर हल्के संतरई रंग की होती है। इन अजगरों के गुदा छिद्र के दोनों



भारतीय शैल अजगर

तरफ 'भुजरोथ एड़' होती हैं, जो इनकी अवशेषी टांगों का प्रतीक होती हैं। नर अजगरों में ये अपेक्षाकृत बड़ी होती हैं। इन सांपों में गड्ढों में रहने वाले वाइपर किस्म के सांपों की तरह ही नासाद्वार के पास झिरी बनी हुई होती है, जिससे ये ताप का अंदाजा कर सकते हैं। भारत में अजगर की अन्य पाई जाने वाली जातियों में प्रमुख हैं—रीगल अजगर (*पाइथन रेटिकुलेटस*)—जो 10 मीटर से ज्यादा लंबा होता है और जो संभवतः विश्व का सबसे लंबा सांप है। यह निकोबार द्वीप समूह में पाया जाता है।

वितरण : यह लगभग समूचे भारत में पाया जाता है। ये नदी के मुहाने पर बसे मैंग्रोव वृक्षों से आच्छादित वनों, शुष्क गुल्म (झाड़ियों) से भरे वनों तथा समुद्री सतह से 2,000 मीटर ऊपर बसे घने, ठंडे बरसाती वनों में पाये जाते हैं।

आवास : हालांकि इन अजगरों में विभिन्न प्रकार के वातावरण में रह सकने की अपार क्षमता होती है, लेकिन इन्हें छिपने और शिकार करने के लिए काफी बड़े क्षेत्र की आवश्यकता होती है। अतः ये चट्टान की दरारों, गुफाओं तथा स्तनपायी जानवरों की छोड़ी हुई खोहों में रहते हैं। इसके अलावा खोखले पेड़ों तथा सामान्यतः किसी जलस्रोत के निकट घने नरकुलों (सरकंडों) के भीठों या मैंग्रोव वृक्षों की सघनता भी इनके प्रिय आवास स्थल होते हैं।

स्वभाव : दिन के समय धूप सेंकना या धूप में सोना अजगर को बहुत प्रिय है। रात को ये अपने शिकार की तलाश में इधर-उधर भटकते हैं या फिर किसी जलस्रोत के निकट खोह में छिपकर वहां आने-जाने वाले स्तनपायी जानवरों की ताक में बैठे रहते हैं। बहुत बड़े आकार के अजगर शिकार की टोह में दूर जाने से हिचकिचाते हैं, अतः वे अपना एक क्षेत्र बना लेते हैं तथा वहीं एक अनुकूल स्थान पर अपना ठिकाना भी कर लेते हैं। भारी-भरकम शिकार के बाद ये सुस्त पड़ जाते हैं और कभी कभी तो उसे पचाने के लिए कई कई दिन या कई हफ्ते तक आराम करते पाये गये हैं। एक पकड़े गए अजगर ने तो दो साल से भी अधिक समय तक उपवास रखा। यदि इनकी अच्छी देखभाल हो, तो पकड़े जाने पर ये सौम्य और पालतू बन जाते हैं।

बच्चे : मादा अजगर मार्च और जून के दौरान लगभग सौ अंडे तक देती है, जिनका आकार अमूमन बतख के अंडे जितना होता है और कभी कभी तो ये उससे भी बड़े आकार के होते हैं। मादा अजगर ये अंडे किसी सुरक्षित व निर्विघ्न खोह, गुफा या खोखली जगह में देती है तथा उसके बाद उनके ऊपर कुंडली मार कर 60 से 80 दिन तक पड़ी रहती है। इस दौरान वो अपने शरीर की मांसपेशियों का लयबद्ध तरीके से संकुचन करती है ताकि सभी अंडे अच्छी तरह सेए जा सकें और उन्हें सुरक्षा के साथ साथ सही ताप और नमी मिल सके।

भोजन : अजगरों का मुख्य भोजन नियतताप वाले जीवजंतु होते हैं—जिनमें चूहों और पक्षियों से लेकर गीदड़, कस्तूरी बिलाव, हिरण और जंगली सूअर जैसे बड़े वन्य प्राणी भी शामिल हैं। अपने शिकार का शिकार ये बड़ी चतुराई से और छिपकर करते हैं—अचानक ही उस पर झपटकर उसे अपनी गिरफ्त में लेकर फिर अपना शिकंजा कसते हैं। अजगर अपने शिकार को कुचलते नहीं, बल्कि अपने शिकंजे का इतना दबाव बना देते हैं जिससे

उसकी सांस और दिल की धड़कन बंद हो जाये। भारत में अजगर द्वारा किसी मनुष्य को खाये जाने की अधिकृत सूचना नहीं है। खेती को नुकसान पहुंचाने वाले जीवों का शिकारी होने के नाते अजगर जहां भी होते हैं, उपयोगी सिद्ध होते हैं।

महत्व : अजगरों का शिकार उनकी खूबसूरत खाल के लिए हर जगह बहुतायत से होता है। इस प्रकार सांपों की यह खूबसूरत किस्म कई क्षेत्रों से तो लगभग खत्म ही हो रही है। भारत सरकार ने अजगरों की खाल के निर्यात पर प्रतिबंध लगाकर इन्हें कुछ संरक्षण प्रदान करने की कोशिश की है। केरल तथा तमिलनाडु में पोलियार तथा अन्य जनजातियां अजगर का मांस खाती हैं तथा कई क्षेत्रों में इसकी चर्बी औषधीय प्रयोग के लिए उपयोगी मानी जाती है।

अहानिकर

4. माटी का सांप (कॉमन सैंड बोआ)

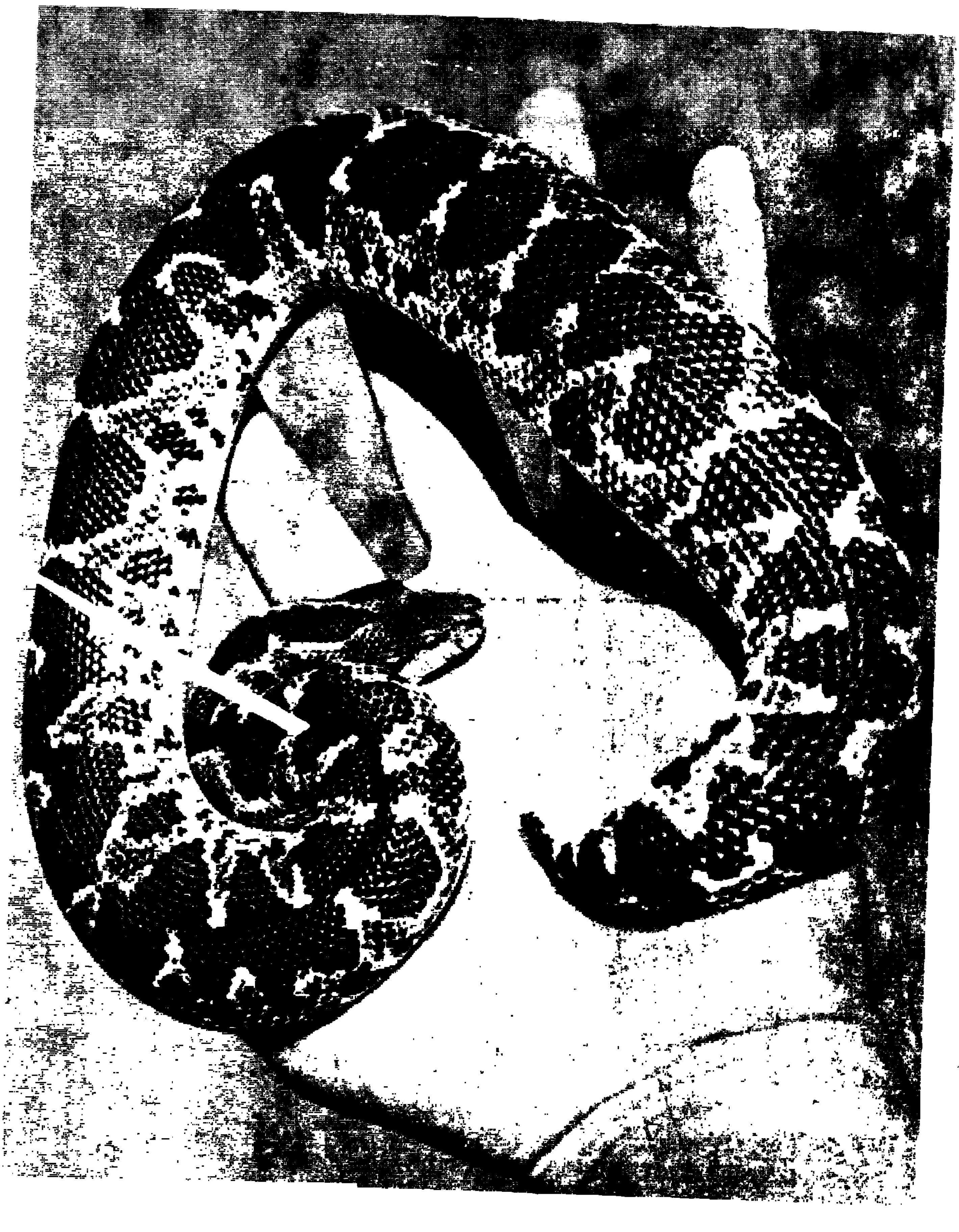
एरिक्स कोनिकस (Eryx Conicus)

विशिष्ट लक्षण : छोटा, भारी शरीर वाला ; औंधे शल्क ; बेहद खुरदरी दुम, स्पष्ट धब्बे।
औसत लंबाई : 50 सें.मी. ; जन्म के समय : 12.5 सें.मी. ; अधिकतम : 1 मीटर (मादा)
अन्य वितरण : माटी का सांप आमतौर पर पीला-सफेद से गहरा भूरा तक होता है, जिस पर काले अथवा लाली लिए भूरे धब्बों की असमान शृंखला दुम के छोर तक बनी होती है। देखने में यह एक डंडेनुमा सांप लगता है, जिसकी दुम खुरदरी और नाक चौकोर होती है। देखने में यह रसल घोणस (रसैल्स वाइपर) से काफी मिलता-जुलता है, पर रसल घोणस के शरीर पर धब्बे गोल और एक समान होते हैं।

वितरण : सांप की यह जाति देश के मैदानी व निचले पहाड़ी क्षेत्रों में सर्वत्र पाई जाती है, लेकिन बंगाल व असम में बहुत ही कम है या है ही नहीं।

आवास : यह सांप रेतीली मिट्टी, चूहे के बिलों, ईंटों के ढेर तथा चट्टानी क्षेत्रों में रहना अधिक पसंद करता है।

स्वभाव : माटी का सांप मुख्यतः निशाचर है तथा अंधेरा होने पर कृंतकों के ताजा बिलों की तलाश करता है अथवा किसी बिल में अपना शरीर छुपा कर, सिर और गर्दन बाहर निकाल कर शिकार की ताक में पड़ा रहता है। यही नहीं सूर्योदय के बाद भी हमने उसे इस तरीके से शिकार करते देखा है, जब उसने पक्षियों और छिपकलियों को पकड़ा। पहली बार पकड़े जाने पर यह सांप काफी डरपोक किस्म का लगता है, लेकिन प्यार से संभालने पर यह देखभाल किये जाने का आदी हो जाता है। इस सांप का आत्मरक्षा का प्रारंभिक पैंतरा इसका कुंडली मारकर बैठ जाना है, फिर यह अचानक ही उछल कर काटता है, जो यों तो थोड़ा पीड़ाकारक होता है लेकिन पूरी तरह निरापद होता है। माटी के सांप को जब



माटी का सांप

छेड़ा जाता है तो आदतन यह अपना सिर अपने शरीर के नीचे छिपा लेता है। दोमुंहे सांप के मुकाबले यह जमीन खोदने में कुशल नहीं है, अतः यह आसानी से खोदी जा सकने वाली रेतीली मिट्टी पसंद करता है।

बच्चे : माटी के सांप की मादा मई माह से जुलाई तक 6 से 8 जिंदा शिशुओं को जन्म देती है। ये बच्चे अपने माता-पिता की सुंदर प्रतिकृति ही होते हैं और दांतेनुमा शल्कधारी वाइपर सांपों से कुछ कुछ मिलते-जुलते लगते हैं।

भोजन : वयस्क माटी के सांप चूहे खाते हैं, लेकिन शिशु माटी के सांप कीटों, चूहों, छोटी छिपकलियों व सांपों को खाकर ही अपना गुजारा करते हैं। धीरे धीरे ये पक्षियों, बड़ी छिपकलियों और कृंतकों (रोडेन्ट) का शिकार करने में निपुण हो जाते हैं। ये सभी अपने शिकार को संकुचन पद्धति से मारते हैं।

महत्व : माटी का सांप यों तो एक प्रभावी कृंतक (चूहे-घूस आदि) नियंत्रक है, लेकिन अपनी सुंदर खाल के कारण ये खुद मनुष्य का शिकार हो रहे हैं। व्यापारी इन्हें 'शिशु अजगर' बताकर इनकी खाल का व्यापार करते हैं।

टिप्पणी : अपने देश के कई क्षेत्रों में माटी के सांपों के बारे में एक मूर्खतापूर्ण धारणा प्रचलित है कि इनके काटने या चाटने से कोढ़ या ऐसा ही कोई त्वचा रोग हो जाता है। संभवतः यह भ्रांत धारणा इस सांप की चित्तीदार खाल के कारण ही हो।

अहानिकर

5. दोमुंहा सांप (रैड सैंड बोआ)

एरिक्स जानाई (Eryx johnii)

विशिष्ट लक्षण : मध्यम आकार, बेहद भोथरी दुम और सिर वाला ; औंधे शल्क, कोई धब्बे या चित्ती नहीं।

औसत लंबाई : 75 सें.मी. ; जन्म के समय : 22 सें.मी. ; अधिकतम : 1 मीटर।

विवरण : दोमुंहे सांप का रंग कुल मिलाकर पर्याप्त भिन्नता लिए होता है—लाली लिए भूरे तथा चित्तीदार भूरे अथवा पीले से काले तक। इसका मोटा शरीर बिल खोदने की क्रिया के काफी अनुकूल रहता है। दोमुंहा सांप भारत के सबसे भद्दे दिखने वाले सांपों में से है। इसकी नाक बेलचे जैसी चपटी दिखती है और दुम तो इतनी भोथरी लगती है मानो इसकी पहचान आसान बनाने के लिए सिरे से काट दी गई हो। अतः देसी भाषा में आमतौर पर इसे दोमुंहा सांप कहा जाता है तथा यह संपेरों का बहुत ही प्रिय सांप है।

वितरण : यह सर्प मुख्यतः मैदानी इलाकों में ही पाया जाता है तथा भारत के समूचे खुश्क क्षेत्र में पाया जाता है। इसके अलावा तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश तथा उत्तर-पश्चिम के क्षेत्रों में भी आमतौर से देखा जा सकता है। यह मैदानी सांप है।



दोमुंहा सांप

आवास : दोमुंहा सांप रहने के लिए रेतीले स्थलों को अपेक्षाकृत अधिक पसंद करता है तथा अधिकतर कृंतक जाति के जीवों के बिलों में रहता है।

स्वभाव : यह मुख्यतः एक निशाचर यानी रात्रि में विचरने वाला सांप है। इसकी एक विशेषता यह है कि यह बेहद विनम्र स्वभाव का होता है यानी आसानी से वश में किया जा सकता है तथा माटी के सांप की तरह छेड़ने पर या पकड़ने पर काटता नहीं। बल्कि छेड़ने या पकड़ने का उपक्रम करने पर कुंडली मार कर अपना सिर छुपा लेता है। अपना सिर सुरक्षित रूप से छुपा लेने के बाद यह अपनी दुम को इधर- उधर हिलाकर कुछ हरकत कर सकता है ताकि सताने वाले का ध्यान बंट जाये। माटी के सांपों की पूंछों का भारी संख्या में क्षत-विक्षत हालत में मिलना इस बात का सबूत है कि यह हथकंडा या पैंतरा बहुत कारगर होता है।

बच्चे : जून के आसपास दोमुंहे सांप की मादा 6 से 8 जीवित शिशु सर्पों को जन्म देती है। बच्चे स्पष्ट रूप से पट्टीदार होते हैं।

भोजन : आहार और शिकार को मारने का तरीका वैसा ही है जैसा कि मिट्टी के सांप का। दूसरे सांपों का ये काफी नियमित रूप से आहार करते हैं। ये उन विरले सांपों में से हैं जो घूस या छछूंदर के अवरुद्ध बिलों में घुसपैठ करने में महारत रखते हैं। उल्लेखनीय है कि घूस या छछूंदर, चूहों की वो विनाशकारी जाति है जो धान की फसल की कट्टर दुश्मन होती है।

महत्व : दोमुंहे सांप सौभाग्यशाली हैं कि उन पर अभी सांपों के खाल व्यापारियों की ललचाई दृष्टि नहीं पड़ी और उन्होंने इन्हें अपनी व्यवसाय-सूची में शामिल नहीं किया है। इसके अलावा भारत के निरंतर बढ़ रहे मरुक्षेत्र से भी इनके संवर्धन को प्रोत्साहन मिल रहा है।

अहानिकर

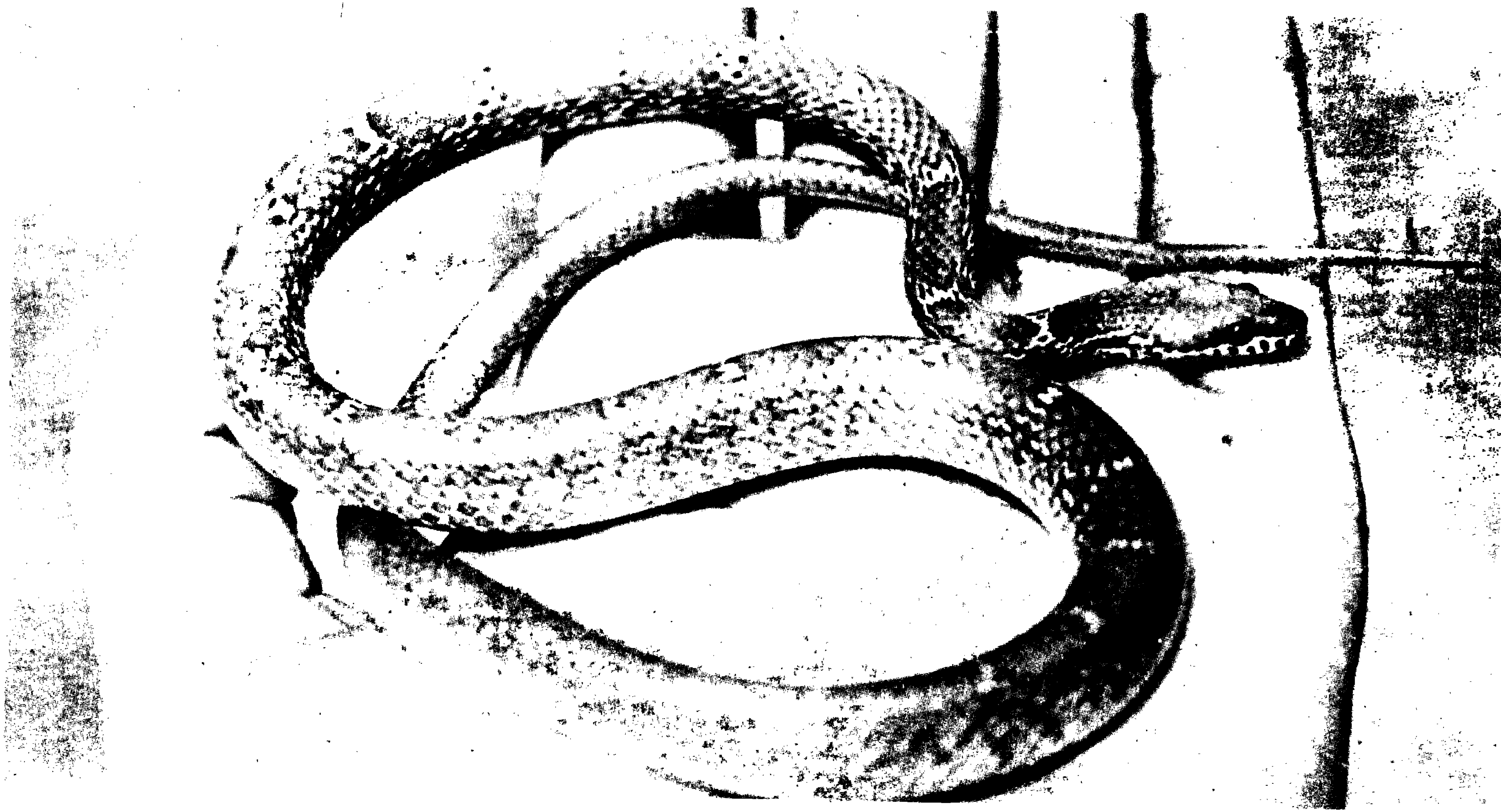
6. सामान्य संखारा (कॉमन वुल्फ स्नेक)

लाइकोडान ऑलिकस (Lycodon aulicus)

विशिष्ट लक्षण : छोटा, छरहरा, किसी के शरीर पर आड़ी चमकदार आड़ी पट्टियां, तो कोई बिना चमकदार पट्टियों के ; चिकने, चमकदार शल्क ; बाहर को उभरी हुई काली आंखें।

औसत लंबाई : 30 सें.मी. ; जन्म के समय : 14 सें.मी. ; अधिकतम : 80 सें.मी.।

विवरण : सामान्य संखारा धूसर, भूरे या काले रंग के होते हैं और इनके शरीर पर दस से बीस तक पतली सफेद या पीली पट्टियां बनी होती हैं। इनकी एकदम स्याह आंखें थोड़ी सी बाहर को उभरी हुई होती हैं, लेकिन पुतली दिखाई नहीं देती। इनकी छोटी जाति के सांपों की खाल तो इतनी झीनी या पारभासक होती है कि निचली सतह से इनके शरीर के अंदर के अंगों को आसानी से देखा जा सकता है। सामान्य संखारा का सिर जरा चपटा



सामान्य संखारा

और कुछ नोकदार होता है। इनके शल्क चिकने और चमकदार होते हैं तथा निचली सतह सफेद और निशानरहित होती है। आकार में ये छोटे होते हैं और इनके शरीर पर अक्सर चमकदार निशान या पट्टियां होती हैं। ये एक प्रकार का घरेलू सांप माना जाता है, जो कभी कभी घरों में भी रहता है। भारत में इस सांप की आठ जातियां हैं।

वितरण : सामान्य संखारा अंडमान निकोबार सहित पूरे भारत में पाया जाता है तथा पहाड़ी क्षेत्रों में भी 2,000 मीटर से भी अधिक ऊंचाई वाले स्थानों पर देखा जा सकता है।

आवास : यह सांप गुफाओं में और उनके आसपास, पत्थरों के ढेर में, खोखले वृक्षों में, पेड़ की छालों तथा अन्य सुरक्षित खुश्क स्थानों पर ही अपना डेरा जमाता है। मनुष्य के शौच स्थलों, ईंटों तथा सीमेंट की गुफाओं जैसे स्थान भी इसके पसंदीदा आवास होते हैं, जहां इसे भरपूर छिपकलियां खाने को मिलती हैं।

स्वभाव : लगता है कि सामान्य संखारा पक्का निशाचर है, क्योंकि दिन में तो इसे कभी देखा ही नहीं जाता। चढ़ने में ये बहुत कुशल होते हैं और बड़ी आसानी से खासी चिकनी दीवारों और वृक्ष के तनों पर चिपट सकते हैं। पहली बार छेड़ने या पकड़ने पर यह सांप आमतौर पर बिजली की सी फुर्ती के साथ काटता है। बड़े या वयस्क सामान्य संखारा का काटना काफी पीड़ादायी हो सकता है। इसके आगे के दांत काफी लंबे होते हैं, जिनके कारण इसे 'वुल्फ स्नेक' का नाम दिया गया है। लेकिन अक्सर इन दांतों को विषदंत मान लिया जाता है, पर यह निर्णय अच्छी तरह जांच-परख कर ही करना चाहिए कि ये जहर वाले दांत हैं या नहीं।

बच्चे : मद्रास क्षेत्र में इस सांप द्वारा दिसंबर-जनवरी में 5 से 7 अंडे तक दिये जाते हैं। वयस्कों की अपेक्षा इनके शिशु सर्पों के शरीर पर अधिक स्पष्ट और चमकदार पट्टियां बनी होती हैं।

भोजन : वयस्क सामान्य संखारा गोह व मरुगोधिकाओं का भोजन अधिक पसंद करता है, हालांकि वो संभवतः छोटी छिपकलियां और मेंढक भी खाते हैं। इनके आगे के लंबे दांत शिकार को पकड़ने में मदद करते हैं। शिकार को ये जिंदा ही निगलते हैं।

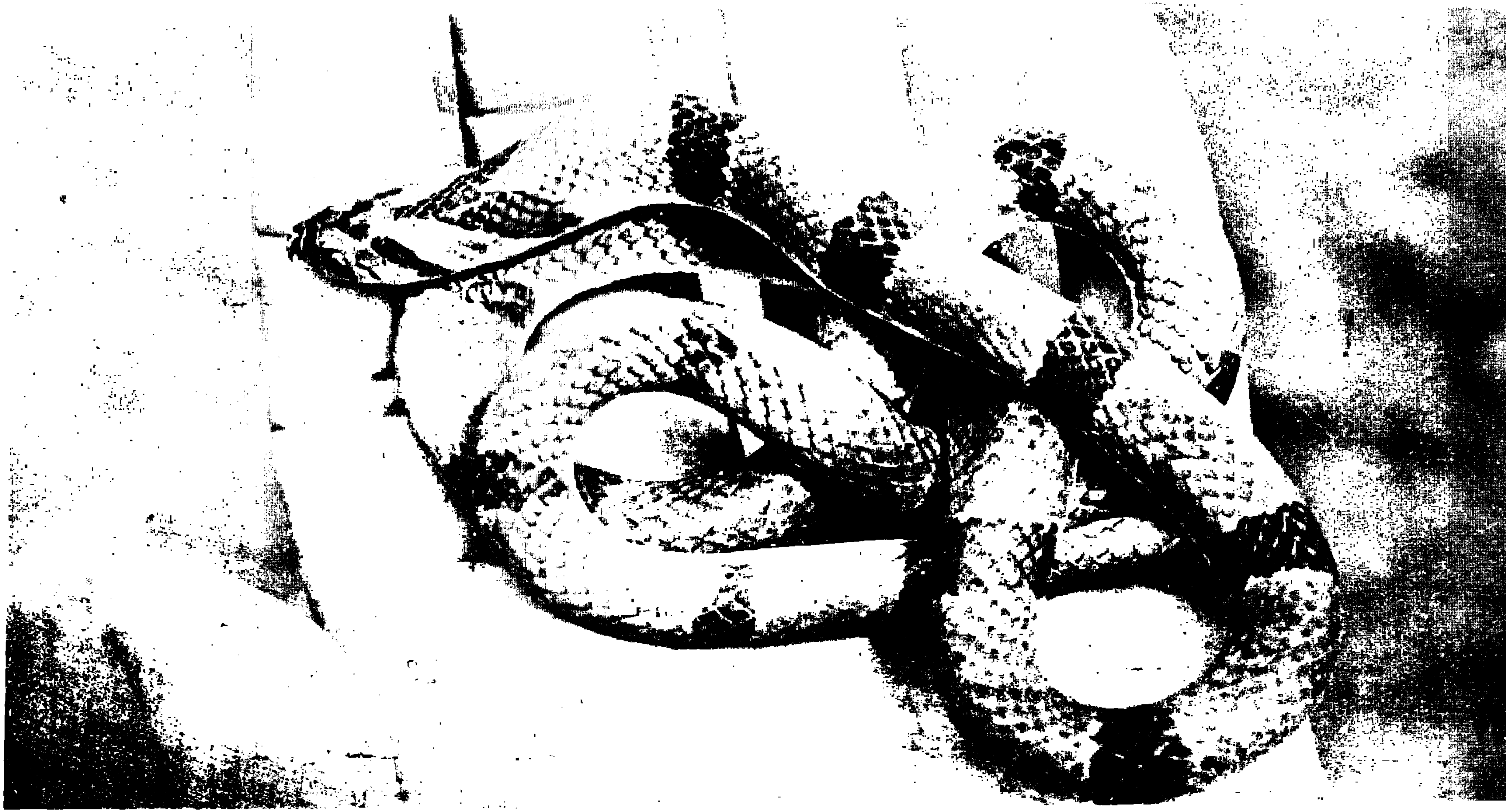
महत्व : यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि सामान्य संखारा को अमूमन करैत समझ कर मारा जाता है। हालांकि सांपों की यह किस्म काफी आम है, लेकिन यह कहीं भी बहुतायत में नहीं होता। दुख की बात है कि अधिकांश कालेजों व स्कूलों की नमूना संग्रह की सूची में इस सांप को भी शामिल कर लिया गया है।

अहानिकर

7. पट्टित कुकरी (बैंडेड कुकरी)

ओलिगोडान आर्नेन्सिस (Oligodon arnensis)

विशिष्ट लक्षण : छोटा ; चिकने, चमकदार शल्क ; पूरे शरीर पर स्पष्ट गहरी 'हेयर बैंड' पट्टियां तथा सिर पर अंग्रेजी के 'वी' आकार का विशिष्ट चिह्न।



पट्टित कुकरी

औसत लंबाई : 35 सें.मी. ; जन्म के समय : 8 सें.मी. ; अधिकतम : 64 सें.मी।

विवरण : पट्टित कुकरी सांप का वर्ण लाली लिए या धूसर भूरा होता है तथा इसके शरीर पर 10 से लेकर 20 तक काली गहरी भूरे रंग की पट्टियां बनी होती हैं। इसके सिर के अग्रभाग पर अंग्रेजी के 'वी' आकार या तीर की नोक जैसा विशिष्ट चिह्न होता है। इसकी निचली सतह सफेद होती है। इसके शल्क चिकने और चमकदार होते हैं तथा सिर पतला और आगे से चपटा या सपाट कुछ नोकदार होता है। आंखें गोल पुतली वाली होती हैं। कुकरी सांपों का नामकरण इनके वक्राकार दांतों के आधार पर किया गया है, जिनसे ये अपने से बड़ी छिपकली जैसे ताकतवर शिकार को मजबूती से पकड़ पाते हैं। पट्टित कुकरी सांप एशिया में पाई जाने वाली 34 कुकरी जातियों में सबसे आम जाति है जो दक्षिण एशिया से दक्षिण चीन तक और कुछ मलय द्वीपों तक में फैली हुई है। इसी प्रकार रसैल्स कुकरी नामक एक अन्य जाति भी काफी आम है, हालांकि रंग और इसका प्रतिरूप या पैटर्न पट्टित कुकरी से भिन्न है, लेकिन इसके सिर पर कुकरी जाति का परंपरागत 'वी' चिह्न वैसा ही बना होता है।

वितरण : यह भारत में सर्वत्र पाया जाता है। असम का सफेद पट्टियों वाला कुकरी सांप तो 2,000 मीटर ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में भी पाया जाता है।

आवास : हालांकि यह कभी कभी दीमक के टीलों में भी अपना आवास बनाता है, लेकिन 'वुल्फ' और 'कैट स्नेक' जाति की तरह पट्टित कुकरी भी मुख्यतः कंदराओं, दरीचों तथा वृक्षों की खोहों में ही रहना पसंद करता है और इस प्रकार के स्थल उसे टूटे फूटे पुराने खंडहरनुमा मकानों में आसानी से मिल जाते हैं।

स्वभाव : बरसाती ठंडी रातें इसे बहुत भाती हैं और तब यह खूब मस्ती में बाहर घूमता है। **यह कभी काटता ही नहीं।** छेड़खानी करने पर ऐंठ जाना और झटके देना इसकी आत्मरक्षा के खास पैंतरे होते हैं जैसा कि अमूमन 'करैत' करते हैं।

बच्चे : बैंडेड कुकरी सांप आमतौर पर 3 से 6 अंडे तक देते हैं। मद्रास में सितंबर के महीने में शिशु कुकरी सर्प देखे जा सकते हैं।

भोजन : मरुगोधिकाएं, गोह तथा छोटे चूहे इनका मुख्य भोजन हैं। एम.ए. स्मिथ के अनुसार ये पक्षियों और रेंगने वाले जीवों के अंडे भी बड़े चाव से खाते हैं। शिशु सर्प कीटों, उनके लार्वा और मकड़ियों को ही खाकर अपना गुजारा करते हैं।

महत्व : हालांकि यह बहुतायत में नहीं है और बहुत कम दिखाई देता है, पर यह बहुत सामान्य है, लेकिन इसके शरीर पर बनी पट्टियों के कारण आमतौर पर इसे 'करैत' समझ कर इसका शिकार किया जाता है।

8. हुर्वा (स्ट्राइप्ड कीलबैक)

एम्फीज्मा स्टोलेटा (Amphiesma stolata)

विशिष्ट लक्षण : छोटा, खुरदरे शल्क ; सिर से दुम तक बनी दो पीली सुस्पष्ट धारियां।
औसत लंबाई : 40 सें.मी. ; जन्म के समय : 9 सें.मी. ; अधिकतम : 80 सें.मी. (मादा)।
विवरण : हुर्वा सांप का पानी के सांपों से गहरा रिश्ता है और ये उनसे काफी मिलते-जुलते हैं। सच तो यह है कि ये सांप पानी में बड़े मजे से रहते हैं। इनके पिछले दांत काफी लंबे होते हैं, जिनकी मदद से ये मेंढक को आसानी से पकड़ सकते हैं। कुल मिलाकर इनका रंग हल्का या गहरा भूरा होता है, जिस पर गहरे कत्थई या पीले रंग की दो धारियां सिर से दुम तक बनी होती हैं। ये धारियां शरीर के मध्य भाग से दुम तक यानी शरीर के दूसरे या निचले अर्धांश में खासी चमकदार होती हैं। इसका सिर हल्का भूरा होता है तथा सिर का दायां-बायां हिस्सा (एक तरह से कनपटियां), होठों और ठुड्डी वाले स्थान सफेद होते हैं। मद्रास क्षेत्र में इसकी एक छोटी और अपेक्षाकृत भिन्न किस्म देखने में आती है, जिसकी आंखों के पीछे चौड़ी काली रेखाएं होती हैं। यही भारत का सामान्य घास में पाया जाने वाला सांप है।
वितरण : यह सांप 2,000 मीटर की ऊंचाई वाले पहाड़ी क्षेत्रों सहित समूचे भारत में पाया जाता है।
आवास : यह सांप धान के खेतों, पोखरों के किनारों, मोटी घास और झाड़ियों में रहना अधिक पसंद करता है।
स्वभाव : हुर्वा दिन में विचरता है तथा रात को चट्टानों के नीचे, बिलों में या पेड़ों की टहनियों अथवा झाड़ियों में सोता है। प्रजनन ऋतु में एक मादा हुर्वा छह या अधिक छोटे नर सांपों की देखरेख में रहती है। हुर्वा बेहद सौम्य प्रकृति के सांपों में माना जाता है। पहली बार पकड़े जाने पर भी यह बहुत कम काटता है। स्पष्ट है सांप पालने के शौकीनों का यह प्रिय सांप है। डराने पर कोई कोई हुर्वा अपने फण को छतरी की तरह फैलाकर एक कवच-सा बना लेते हैं जिस पर आपस में गुंथे हुए नीले, लाल या सफेद रंग-बिरंगे शल्क देखने में बेहद खूबसूरत लगते हैं।
बच्चे : कुछ समय पहले मद्रास के स्नेक पार्क में एक मादा हुर्वा ने एक दर्जन अंडे दिये थे। यों देखा गया है कि यह जाति वर्षभर अंडे देती है।
भोजन : मेंढक इनका प्रिय भोजन है। लेकिन हुर्वा छोटे मेंढकों, भेक (टोड), छोटी छिपकलियों, कृंतकों आदि को भी अपना आहार बनाते हैं। ये अपने इन शिकारों को जिंदा ही निगलते हैं। शिशु हुर्वा कीटों, टैडपोल और भेक के बच्चों तथा छोटे मुंह वाले मेंढकों (*माइक्रोहाइला*) को खाकर अपना पेट भरते हैं।
महत्व : बहुत आम और सामान्य प्रकार का सांप।



दुर्वा

टिप्पणी : हुर्वा सांप बगीचों में आम पाया जाता है। आमतौर से इसे नाग का बच्चा समझ लिया जाता है। और यही गलतफहमी इसकी जान की दुश्मन साबित होती है, क्योंकि नाग जाति का समझकर माली और घर के लोग इसे मार कर ही दम लेते हैं।

अहानिकर

9. हरा नाग (ग्रीन कीलबैक)

मेक्रोपिस्थोडान प्लंबिकलर (Macropisthodon plumbicolor)

विशिष्ट लक्षण : मध्यम आकार का; औंधे शल्क, घास जैसे हरे रंग का; छेड़ने पर यह अपनी गर्दन को चपटे फण (हुड) की तरह फुला लेता है, जिस पर अंग्रेजी के 'वी' आकार का चिह्न प्रमुखता से देखा जा सकता है।

औसत लंबाई : 55 सें.मी.; जन्म के समय : 7.5 सें.मी.; अधिकतम : 80 सें.मी.।

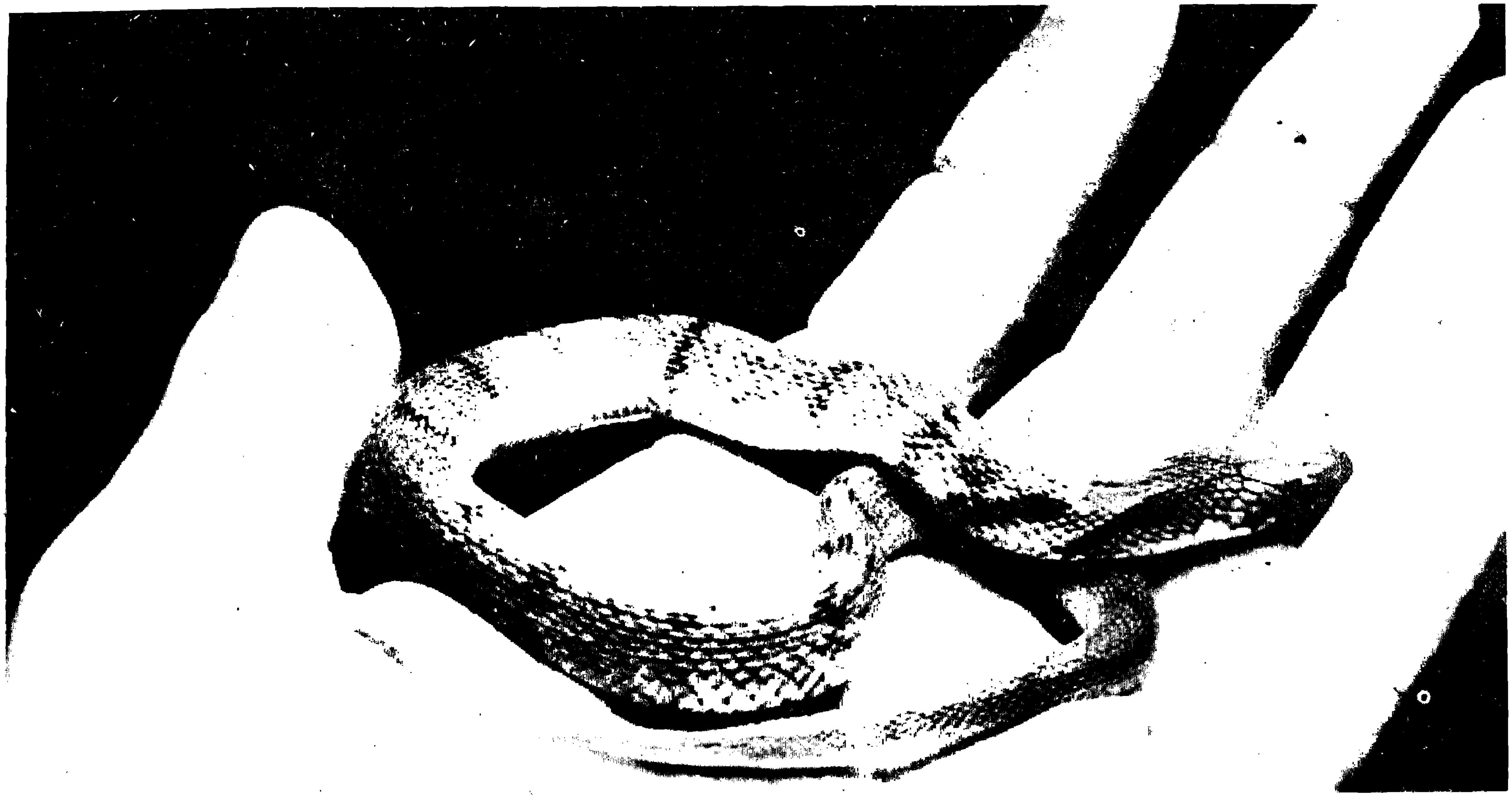
विवरण : इस नाटे और गठीले हरे नाग का रंग कुल मिलाकर चमकदार हरा होता है जिस पर अस्पष्ट और अनियमित काले रंग की आड़ी रेखाएं अंकित होती हैं। इसके सिर और गर्दन पर काफी स्पष्टता से अंग्रेजी के 'वी' आकार का उल्टा चिह्न बना हुआ होता है। छेड़ने पर यह चिह्न इसके 'फण' की सजधज बढ़ा देता है। इसकी खाल या त्वचा हल्की-सी चमकदार होती है जिस पर घने शल्क बने होते हैं। इसका सिर चौड़ा और गोल पुतली वाली बड़ी बड़ी आंखें होती हैं। इसकी निचली सतह कुछ भूरापन लिए सफेद होती है। शिशु सर्पों पर चमकदार चिह्न होते हैं। (देखें—बच्चे)

वितरण : भारत के वनों में समुद्र की सतह से 1,500 मीटर की ऊंचाई तक पाया जाता है।

आवास : हरा नाग मुख्यतः पहाड़ी तथा पठारी क्षेत्रों, घने सदाबहार हरे-भरे जंगलों तथा खुले पतझड़ी जंगलों को ही अपना आवास बनाते हैं।

स्वभाव : इस सांप के बारे में बहुत कम जानकारी है। जो थोड़ी-बहुत जानकारी है, उसके अनुसार डराये जाने पर ये अंग्रेजी के 'एस' शब्द के आकार में जम जाते हैं जैसाकि बहुत से दूसरे सांप करते हैं। छेड़छाड़ करने अथवा उत्तेजित करने पर खासे बड़े आकार का छत्र बनाते हुए थोड़ा पीछे हटकर फण उठा लेते हैं। एम.ए. स्मिथ ने इस सांप के बारे में टिप्पणी करते हुए लिखा है कि यह पूरी तरह सौम्य और अनाक्रामक है।

बच्चे : हरे नाग की मादा लगभग एक दर्जन अंडे देती है। आठ महीने अथवा एक साल की उम्र तक के युवा सर्पों का रंग काफी चमकदार होता है, जिस पर काली पट्टियां व चित्तियां प्रमुखता से देखी जा सकती हैं। गर्दन के निशान भी काफी स्पष्ट होते हैं।



हरा नाग

भोजन : हरा नाग अन्य किसी भी शिकार की अपेक्षा भेक को अधिक पसंद करता है। हरा नाग अपने इस शिकार को अपने पीछे के लंबे दांतों से अच्छी तरह पकड़ कर तालू से दबा लेता है।

महत्व : यह आम सांप नहीं है, लेकिन अनेक स्थानों पर पाया जाता है। हालांकि यह जंगलों में रहना अधिक पसंद करता है, लेकिन अब जंगल कम होते जा रहे हैं।

अहानिकर

10. पानी का सांप (चैकर्ड कीलबैक वाटर स्नेक)

जेनोक्रोपिस पिसकैटर (Xenochropis piscator)

विशिष्ट लक्षण : मध्यम आकार का; चमकदार, औंधे शल्क; काली नेत्ररेखा तथा शरीर पर विशेष चौखाने का पैटर्न।

औसत लंबाई : 60 सें.मी.; जन्म के समय : 12.5 सें.मी.; अधिकतम : 1.75 मीटर (मादा)।

विवरण : पानी के सांप रंगत में भिन्न भिन्न होते हैं—कहीं तो ये हल्की चित्तियों सहित काले रंग के होते हैं, तो कहीं काली सफेद चौखानेदार धारियों सहित चमकदार पीले रंग के। एक या दो काली नेत्ररेखाएं सुस्पष्ट होती हैं तथा सिर बेहद भोथरा और गर्दन से भिन्न होता है। इसके शल्क काफी स्पष्ट, औंधे और पूरे शरीर पर फैले होते हैं। इस सांप का शरीर भारी भरकम और चमकदार होता है। आमतौर पर इसकी निचली सतह एकदम सफेद और चमकदार होती है। भारत का यह सामान्य जल सर्प है, जो 'बहुप्रजनक', हर प्रकार की जलवायु में अपने को ढाल सकने वाला (अनुकूलनशील) तथा मीठे पानी में और उसके पास लगभग हर कहीं पाया जा सकने वाला है।

वितरण : यह समूचे भारत में पाया जाता है। ऊंचे पहाड़ी क्षेत्रों की नदियों, घाटों तथा हिमालय क्षेत्र में इसकी काली किस्म काफी आम पाई जाती है, लेकिन इसकी शक्ल-सूरत और आदतें परस्पर काफी मिलती-जुलती हैं। हिमालय क्षेत्र में 3,000 मीटर तक की ऊंचाई पर इसे देखा जा सकता है।

आवास : झील, तालाब, कुएं, नदियां, झरने तथा पानी भरे धान के खेत पानी के सांप के प्रिय आवास स्थल हैं।

स्वभाव : पानी के सांप दिन-रात सक्रिय रहते हैं तथा तालाबों के किनारों और धान के खेतों में अपना शिकार ढूंढ़ते हैं। इनका रात का ज्यादातर समय जमीन पर ही बीतता है। उत्तेजित किए जाने पर यह अपना सिर चपटा कर लेता है, और गर्दन की पसलियों को फैलाते हुए जरा तन जाता है। इसका यह रूप देखकर बहुत से लोग इसे नाग 'कोबरा' समझने की भूल कर बैठते हैं। यों पैर पड़ने या पकड़ने पर ये फटाफट काट भी लेते हैं,



पानी का सांप

लेकिन अगर इनके साथ 'सलीके' से पेश आया जाये तो ये जल्दी ही पालतू भी बन जाते हैं।

बच्चे : पानी के सांप की मादा आमतौर पर 20 से 40 तक अंडे देती है। मादा ये अंडे किसी चूहे के बिल में या उसकी बनाई सुरंग में या दीमकों के टीले में या फिर कुएं के अंदर बने किसी छेद अथवा दीवार या तालाब के बांध में देती है। इन अंडों से 60 या 70 दिन में बच्चे निकलते हैं और तब तक मादा बराबर इन्हें सेती या इनकी रखवाली करती है। मद्रास में दिसंबर से फरवरी के बीच ये सांप अंडे देते हैं, जबकि उत्तर भारत में इनका प्रजनन काल मार्च के आसपास होता है।

भोजन : शिशु सर्प टैडपोल और पानी में उपलब्ध कीटों को खाकर अपना गुजारा करते हैं। जैसे जैसे ये बड़े होते जाते हैं, इनके शिकार भी बड़े होते जाते हैं। उदाहरणतया मछली, मेंढक और कभी कभी कृंतक और पक्षी तक भी। आमतौर पर ये अपने शिकार को जिंदा ही निगलते हैं। इनके ऊपर के जबड़े के पीछे की ओर के लंबे मेंढक दांत मेंढकों को जकड़ लेते हैं और उन्हें पंचर कर देते हैं तब उनका निकल या बच पाना एकदम असंभव हो जाता है।

महत्व : इन जल सर्पों की खाल सांपों की खाल के व्यापारियों की खास वस्तु है। हालांकि भारत में यह सांप काफी आम है। लेकिन यह जान कर दुख होता है कि वर्षभर चलने वाले इनके शिकार के कारण इन सांपों की स्थानीय जनसंख्या खत्म होती जा रही है।

अहानिकर

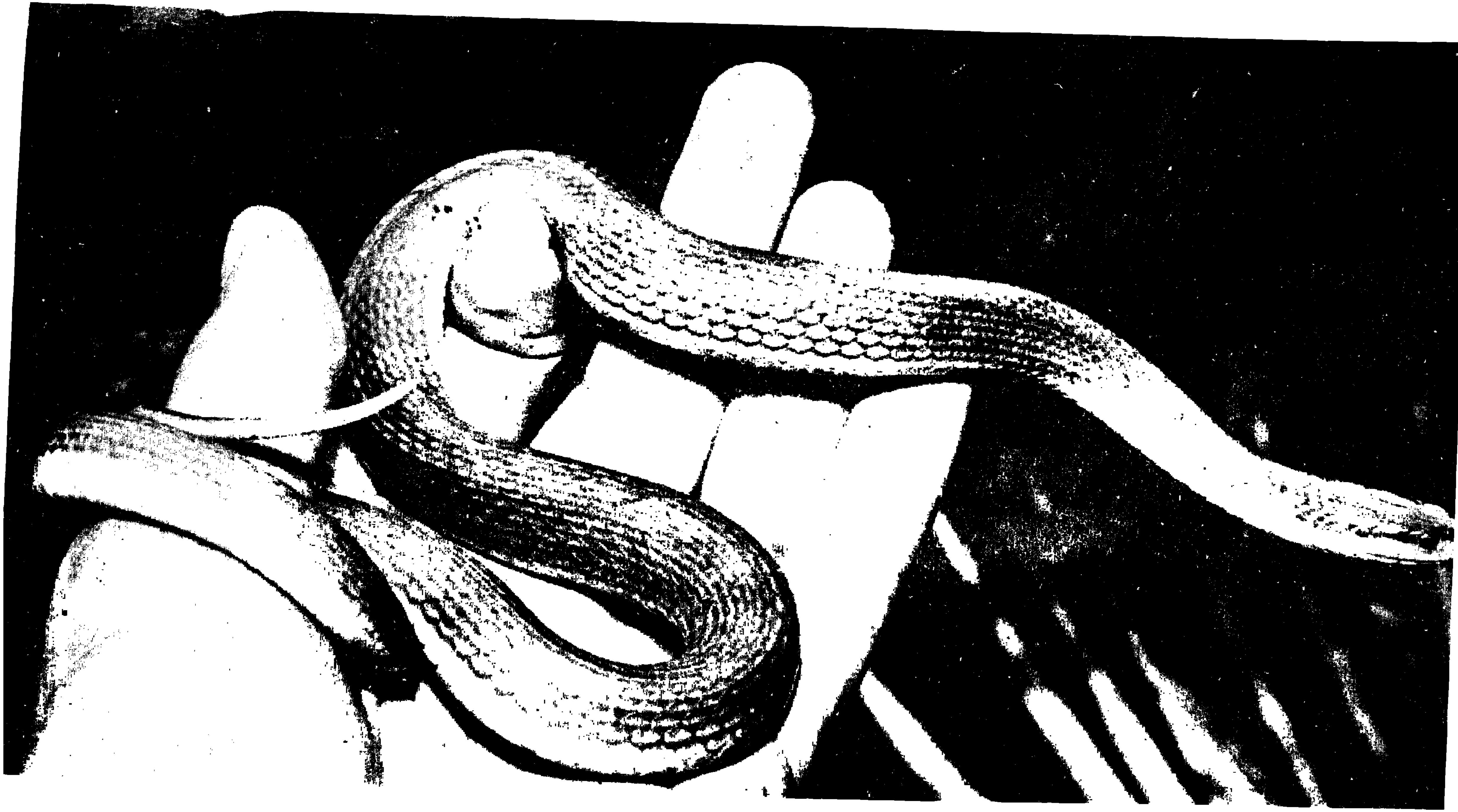
11. हरा पानी का सांप (ओलिव कीलबैक वाटर स्नेक)

एट्रेटियम शिस्टोसम (Atretium schistosum)

विशिष्ट लक्षण : छोटे से मझोले आकार का; औंधे व चमकदार शल्क; शरीर का पृष्ठ भाग जैतूनी हरा; अधोभाग पीला।

औसत लंबाई : 45 सें.मी.; जन्म के समय : 10 सें.मी.; अधिकतम : 1 मीटर।

विवरण : हरा पानी का सांप एक पतले सिर वाला सांप है। कुल मिलाकर इसका रंग शानदार जैतूनी हरा होता है, जिस पर किसी किसी सांप में शरीर के दोनों ओर लाल रंग की चमकदार धारी देखने को मिलती है। इसका अधोभाग या तो पीला होता है या फिर संतरई। दिलचस्प तथ्य यह है कि मादा की लंबाई नर के मुकाबले अधिक होती है। हरा पानी का सांप एक अन्य आम पाए जाने वाले जल सर्प 'एनहाइड्रिस' से मिलता-जुलता है। लेकिन चिकनी त्वचा वाला 'एनहाइड्रिस' नदियों और नदी के मुहानों की दरारों में रहना अधिक पसंद करता है। यह केरल, उड़ीसा तथा बंगाल में बहुतायत में पाया जाता है।



हरा पानी का सांप

वितरण : यह देश के प्राय द्वीप क्षेत्रों में आम पाया जाता है। उत्तर भारत में यह कहीं नहीं मिलता। यह समुद्र तल से 1,000 मीटर की ऊंचाई तक के क्षेत्रों में पाया जाता है।
आवास : तालाब और जलाशय इसके आवास हैं, जहां यह केकड़े के बनाये गये तथा अन्य दूसरे सुराखों में रहता है।
स्वभाव : अधिकतर दिन में सक्रिय यानी दिवाचर लेकिन रात में भी घूमता फिरता देखा गया है। पकड़े जाने पर यह सांप बिरले ही काटता है।
बच्चे : इस सांप का प्रजनन काल दिसंबर से मार्च होता है, जब मादा 12 से 30 अंडे तक देती है।
भोजन : यह सांप टैडपोल, मेंढक व मछलियां खाता है तथा उनका वैसे ही बगल से वार कर शिकार करता है, जैसे कि जल अथवा समुद्र में रहने वाले अन्य सांप करते हैं। यानी पहले तो यह अपने शिकार के बगल से तैरता हुआ निकल जाता है और फिर अचानक अपना सिर पलट कर उसे दबोच लेता है। यह भी देखा गया है कि यह सांप मच्छरों का लार्वा भी खाता है। मलेरिया और डी.डी.टी. के बढ़ते खतरे को देखते हुए हरे जल-सर्प की इस आहार-रुचि पर और अध्ययन की आवश्यकता है।
महत्व : यह सामान्य किस्म का आम सांप है। हालांकि कुछ लोग इसे पानी का नाग कहते हैं, लेकिन इस नाग 'छवि' के बावजूद लोग इस छोटे, अच्छी प्रकार छद्मावरण से युक्त सांप के प्रति सहिष्णु हैं। अतः इस सांप की जाति अन्यों की तुलना में काफी सुलभ है।

अहानिकर

12. अलंकृत सर्प (ट्रिंकैट स्नेक)

इलाफे हेलेना (Elaphe helena)

विशिष्ट लक्षण : मध्यम आकार का, पतला; चिकनी, चमकदार शल्क; आगे का शरीर हल्के वर्ण का और दुम गहरे रंग की।
औसत लंबाई : 70 सें.मी.; जन्म के समय : 25 सें.मी.; अधिकतम : 1.5 मीटर।
विवरण : अलंकृत सांप का रंग कत्थई तथा चाकलेटी भूरा होता है, जिस पर शरीर के अग्रभाग में हल्के रंग के पट्ट और चौखाने बने होते हैं। तथा पीछे के हिस्से में अगल-बगल दो काली विशिष्ट धारियां बनी होती हैं। इसके लंबोतरे सिर पर किसी प्रकार का चिह्न नहीं होता, आंखें बड़ी और गोल पुतली वाली होती हैं। हां, इसकी गर्दन के दोनों ओर दो छोटी काली रेखाएं होती हैं जो आगे बढ़ाने पर बीच में मिल कर अंग्रेजी के उल्टे 'वी' अक्षर का आकार ले सकती हैं। इसके अधोभाग का रंग मोतिया-सफेद होता है तथा शल्क चिकने और चमकदार होते हैं। इसकी आंख के सामने या आगे के शल्क छितरे हुए और



अलंकृत सर्प

छिद्र वाले होते हैं, जो संवेदक हो सकते हैं। अलंकृत सर्प की भारत में कुल नौ जातियां पाई जाती हैं। इनमें एक विशेष प्रकार का अलंकृत सर्प बेहद शांत प्रकृति का होता है जो अक्सर मैदानी व पहाड़ी क्षेत्रों में ठंडे मौसम में पाया जाता है।

वितरण : इस जाति का सांप समूचे भारत में पाया जाता है। हरा अलंकृत सर्प अंडमान में और 'मैंडेरिन अलंकृत सर्प' 4,000 मीटर ऊंचाई तक के हिमालय क्षेत्र में पाया जाता है।

आवास : गर्म मौसम में ये सांप दीमक के टीलों की गहराई में, चट्टानों के ढेर में तथा दरारों में छिपे रहते हैं। ठंडे मौसम में ये बाहर निकलते हैं तथा घने पत्तेदार पेड़ों और झाड़ियों में देखे जा सकते हैं।

स्वभाव : अलंकृत सर्प रात और दिन–दोनों समय सक्रिय रहते हैं। आमतौर पर शांत और शालीन रहने वाले इस सांप को जब छेड़ा जाता है, तो इनमें से कुछ तो अपनी गर्दन फुला लेते हैं, मुंह खोलकर पीछे हटते हैं तथा हमलावर पर फुर्ती से दंश मारते हैं। कभी कभी ये आत्मरक्षा में अपनी दुम को कंपकंपाते हैं। अलंकृत सर्प की यह प्रतिक्रिया या प्रवृति अमेरिका के बेहद विशिष्ट 'रैटल स्नेक' से काफी मिलती-जुलती है।

बच्चे : एक मादा अलंकृत सर्प छह से आठ तक लंबोतरे अंडे देती है। बच्चा सांप वयस्क सांपों से काफी मिलता-जुलता लगता है। इनका प्रजननकाल, लगता है, पूरे वर्षभर ही चलता रहता है। उदाहरणतया मद्रास स्नेक पार्क में एक मादा अलंकृत सर्प ने कुछ समय पूर्व फरवरी में आठ अंडे दिए, जिनसे अप्रैल के दूसरे सप्ताह में बच्चे निकले तथा एक अन्य मादा ने दिसंबर के मध्य में अंडे दिए तथा एक ने अगस्त के अंत में।

भोजन : वयस्क अलंकृत सर्प अमेरिका के प्रसिद्ध धामन सांप की ही तरह कृंतक भक्षी है, जो अपने शिकार को जकड़ कर मारता है। मौका पड़ने पर ये पक्षियों और उनके अंडों को भी चट कर जाते हैं। इनकी तुलना में शिशु अलंकृत सर्प कीटों तथा छोटी छिपकलियों को ही खाकर अपना काम चलाते हैं।

महत्व : अलंकृत सर्प कहीं भी बहुतायत में या आम नहीं हैं। कृषि भूमि और जंगल इनके प्रिय हैं, अतः कृषि भूमि का तीव्र विस्तार इनकी संख्या पर खास प्रभाव नहीं डाल पाया है। हालांकि यह सांप सुंदर और अक्सर लंबा होता है, लेकिन इतना सुलभ नहीं है कि सांपों की खाल के व्यापारियों का ध्यान इसकी ओर आकर्षित हो।

टिप्पणी : इस सांप के साथ एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि 'इरुलाओं' जैसी सांप पकड़ने वाली जाति भी इसे जहरीला समझे हुए है।

13. धामन (रैट स्नेक)

टाइयास म्यूकोसस (Ptyas mucosus)

विशिष्ट लक्षण : बड़ा, धारा रेखित; चमकदार शल्क, पृष्ठस्थ रेखाएं चौड़ी, सपाट; पतली गर्दन और बड़ी बड़ी आंखें।

औसत लंबाई : 2 मीटर; जन्म के समय : 32 सें.मी.; अधिकतम : 3.5 मीटर (नर)।

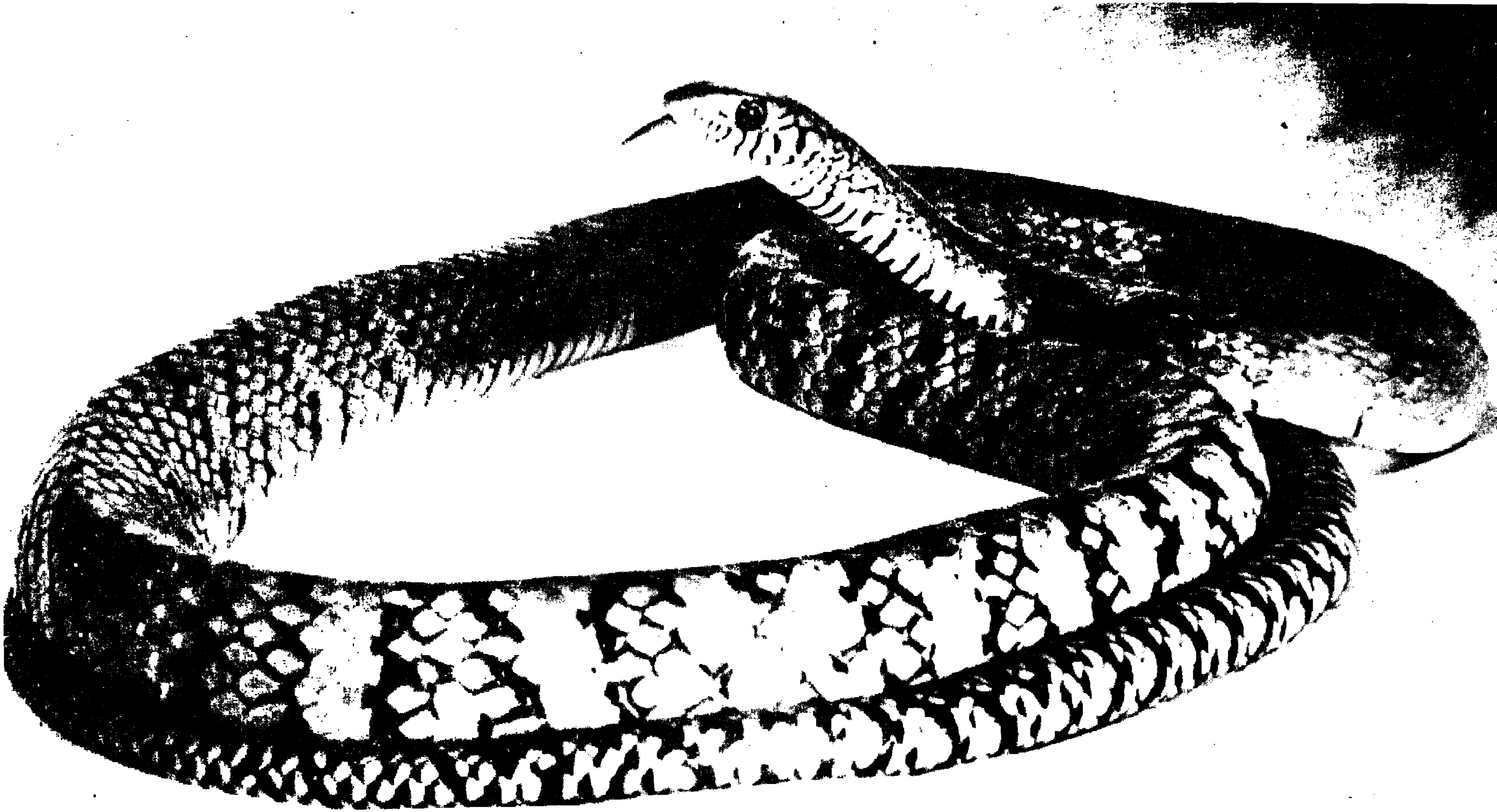
विवरण : काफी विस्तृत क्षेत्र में पाया जाने वाला यह आम सांप है तथा विभिन्न क्षेत्रों में इसके रंगों में काफी भिन्नता देखी गई है। उदाहरणतया, मैदानी क्षेत्रों में पाया जाने वाला धामन यदि हल्का पीला है, तो पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाने वाला एकदम काला भुजंग। इसके अलावा ये हरे, जैतूनी अथवा भूरे रंग के भी होते हैं। यों तो इसके समूचे शरीर का रंग एक जैसा होता है, लेकिन जब यह सांप आत्मरक्षा में अपना शरीर फुलाता है तो उस पर अंकित अंतराशल्क के चिह्न स्पष्टतः दिखते हैं। इसके अधोभाग पर आड़ी रेखाएं होती हैं, जो उत्तर भारत में पाई जाने वाली जाति में काफी प्रमुखता से देखी जा सकती हैं। अक्सर इसके निचले होंठ पर काली क्षैतिज रेखाएं बनी होती हैं। झलक भर देखने पर धामन नाग जैसा ही दिखाई देता है, लेकिन वास्तव में यह सांप नाग की अपेक्षा काफी लंबा और पतला होता है तथा इसका सिर भी गोलाकार की बजाय नुकीला और आंखें प्रमुखता से उभरी हुई होती हैं। अतः इनकी तुलना करते हुए दोनों जातियों की आंखों, सिर तथा गर्दन पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

वितरण : धामन समुद्र की सतह से 4,000 मीटर ऊंचाई तक के क्षेत्रों में अंडमान निकोबार सहित समूचे भारत में पाया जाता है।

आवास : यह परितर्वनशील सांप अपने को किसी भी पर्यावरण के अनुरूप ढाल सकता है। चूहे के बिल और दीमक के टीले (वांबियां) इसके पसंदीदा आवास हैं तथा ऊंची ऊंची घास, धान के खेत और भंडारगृह इसके प्रिय शिकारगाह।

स्वभाव : जैसा नाम वैसा काम। धामन आश्चर्यजनक रूप से चूहा भक्षक है। और चूंकि जहां मनुष्य रहते हैं वहां चूहों की कोई कमी नहीं रहती, अतः अन्य सांपों के मुकाबले इस सांप के दर्शन भी खूब होते रहते हैं। धामन की एक अन्य विशेषता यह है कि यह दिनचर है यानी दिन में घूमने वाला और मनुष्य के नजदीक रहने वाले अन्य जानवरों की तरह यह भी मनुष्यों की गतिविधियों को समझता है और सामने पड़ने से कतराता है। छेड़ने या हड़काने पर यह अपना गला फुला कर फुंकारते हुए खासी ताकत से दंश करता है। इसके काटने से मनुष्य को कोई हानि नहीं होती, पर दर्द काफी होता है। काफी क्रोध में आने पर नाग का हमशक्ल यह सांप उसकी तरह ही गले से गहरी गुर्राहट की ध्वनि करता है।

बच्चे : मादा धामन मार्च और जुलाई के बीच 8 से 16 अंडे तक जनती है, लेकिन इसे



धामन

सर्दी के महीनों में भी अंडे जनते देखा गया है। इन अंडों से लगभग 60 दिन बाद बच्चे निकलते हैं।

भोजन : हालांकि धामन मुख्यतः कृंतकों को ही अपना आहार बनाते हैं, लेकिन मेंढक, छिपकली, पक्षियों और छोटे सांपों तक को भी अपना भोजन बना लेते हैं। शिशु धामन मुख्यतः मेंढक ही खाते हैं, लेकिन उम्र के पहले ही वर्ष में ये मूषकों और चूहों का शिकार करना शुरू कर देते हैं। अपने शिकार को ये या तो जिंदा ही निगलते हैं या फिर इनके जबड़े और शरीर के दबाव से उसका काम तमाम हो जाता है।

महत्व : धामन तथा नाग लंबे अरसे से सांप की खाल के अनियंत्रित व्यापार का मुख्य आधार बने हुए हैं। परिणामस्वरूप जिन क्षेत्रों में ये सांप बहुतायत में पाए जाते थे, अब लगभग वहां से इनका नामोनिशान ही मिट चुका है। परिणामतः उन क्षेत्रों में कृंतकों की जनसंख्या में भयंकर वृद्धि हुई है। बहुत-सी जनजातियां इस खाल व्यवसाय से ही अपना गुजर-बसर करती हैं। लेकिन इन सांपों को प्रजनन का मौका देने के लिए ऋतुनिष्ठ नियंत्रण और इनकी विशिष्ट जाति को बढ़ाने के उद्देश्य से स्थायी फसल उगाने जैसे कार्यों से जहां इन सांपों के लुप्त होने का खतरा कम हो सकेगा, वहीं उन जनजातियों को अपनी जीविका मिल सकेगी और खेती बाड़ी पर भयंकर प्रभाव नहीं पड़ेगा। (फिलहाल स्थिति यह है कि वाणिज्य मंत्रालय ने सांपों की खालों के निर्यात पर तो पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया है, लेकिन घरेलू स्तर पर तो यह व्यापार चल ही रहा है और वह भी इनके प्रजनन काल की अनदेखी करते हुए।)

14. बैंडेड रेसर

आर्जीरोजेना फेशियोलेटस (Argyrogena fasciolatus)

विशिष्ट लक्षण : छोटे से मध्यम आकार तक का, पतला; चिकने शल्क, शिशु सर्पों पर चमकदार पट्टियां, वयस्क एक रूप, कोई पैटर्न नहीं।

औसत लंबाई : 75 सें.मी.; जन्म के समय : 15 सें.मी.; अधिकतम : 1.25 मीटर।

विवरण : बैंडेड रेसर हल्के या गहरे भूरे रंग का सांप है। शिशु सर्पों के शरीर पर नियमित अंतर से आड़ी-तिरछी सफेद पट्टियां बनी होती हैं। शिशु सांपों के सिर पर भी चमकदार सफेद चिह्न होते हैं। इनका सिर गर्दन की अपेक्षा थोड़ा चौड़ा होता है और नाक जरा नुकीली होती है। शल्क चिकने तो होते हैं, लेकिन चमकदार नहीं। इनका अधोभाग सफेद या पीलापन लिए होता है।

वितरण : भारत के अधिकांश मैदानी क्षेत्रों में पाया जाता है।

आवास : बेहद चौकस और फुर्तीला यह सांप ऊंची घास या झाड़ियों में ही अपना डेरा डालता है। ये सांप कृंतकों के बिलों, चट्टानों के ढेर तथा घनी झाड़ियों को अधिक—



बैंडेड रेसर

पसंद करता है।

स्वभाव : दिन के समय यह सांप स्फूर्तिवान और फुर्तीला रहता है। पकड़े जाने पर यह काट सकता है तथा गर्दन की पसलियों को फुला कर एक पतला 'छत्र-सा' बना सकता है। लेकिन पकड़े जाने के कुछ समय बाद यह शांत हो जाता है और धीरे धीरे अच्छा पालतू बन जाता है।

बच्चे : दक्षिण भारत में मादा बैंडेड रेसर अक्तूबर के महीने में 2 से 6 तक अंडे देती है।

भोजन : शिशु मेंढक तथा कीटों को खाते हैं, जबकि वयस्क बैंडेड रेसर खेतों के मूषक और चूहों को। कृंतकों को ये सांप उनके बिलों में घुस कर पकड़ते हैं और उन्हें जकड़कर अपने शरीर के संकुचन अथवा दबाव से निश्चल कर देते हैं।

महत्व : वनस्पति के विनाश तथा अत्यधिक चराई के परिणामस्वरूप बहुत से क्षेत्रों से इन सांपों का आवास खत्म हो रहा है।

अहानिकर

15. रजत बांसी (रॉयल स्नेक)

स्पालरोसोफिस डायडेमा (Spalerosophis diadema)

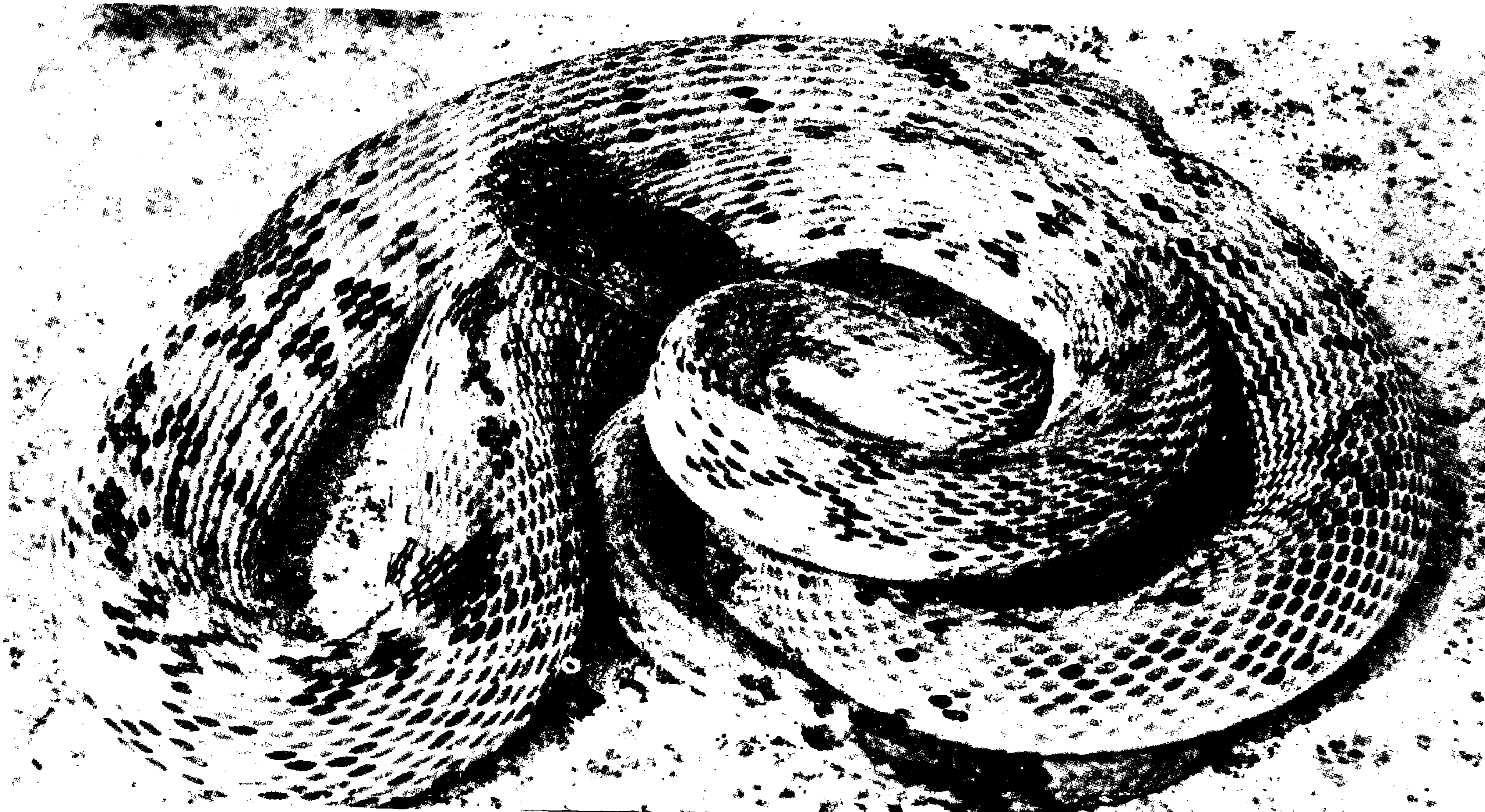
विशिष्ट लक्षण : मध्यम से बड़े आकार का; औंधे शल्क; शिशु सर्पों के शरीर पर एक समान धब्बे; वयस्क सांपों के शरीर पर काले अनियमित चिह्न और सिर काला।

औसत लंबाई : 1.5 मीटर; जन्म के समय : औसतन 25 सें.मी.; अधिकतम : 2 मीटर।

विवरण : रजत बांसी का रंग कुल मिलाकर या तो पीलापन लिए भूरा होता है या फिर संतरई, जिस पर दुम तक काले रंग के अनियमित चिह्न बने होते हैं। इनका सिर और गर्दन एकदम काले होते हैं। इनका अधोभाग चमकदार और हल्का गुलाबी होता है। इनके पृष्ठस्थ शल्क बड़े व सुस्पष्ट होते हैं तथा इनका शरीर सुंदर सतरंगी आभा लिए होता है। जहां तक जानकारी है, भारत का यह एकमात्र सांप है, जिसके शरीर पर बने चिह्न उम्र बढ़ने के साथ लगातार बढ़ते जाते हैं। शिशु सर्प वयस्क और बड़े सांपों से बहुत भिन्न होते हैं, उनके शरीर पर हल्के व एकरूप चित्तीदार चिह्न होते हैं तथा काले रंग का कोई चिह्न नहीं होता। चूंकि रजत बांसी काफी बड़ा होता है, अतः ये आसानी से नजर में आ जाते हैं और यही कारण है कि उत्तर भारत में अधिकांश संपेरे अक्सर इन्हें ही लिए घूमते हैं।

वितरण : रजत बांसी मुख्यतः राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के समुद्र की सतह से 2000 मीटर ऊंचाई तक के खुश्क क्षेत्रों में पाए जाते हैं। (संदर्भ के लिए राजनीतिक सीमांकन वाला कोई भी नक्शा देखा जा सकता है।)

आवास : यह सांप चूहों के बिल, चट्टानी क्षेत्रों और दरारों में रहता है। यह उत्तम ढंग



रजत बांसी

से और तेजी से चढ़ सकने वाला सांप है जो शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्रों में पेड़ों तथा झाड़ियों में पाया जाता है।

स्वभाव : ऐसा लगता है कि रजत बांसी मुख्यतः दिन में सक्रिय रहते हैं। शक्ल-सूरत और व्यवहार में यह अलंकृत सर्प से काफी साम्य रखता है, लेकिन उससे कहीं बड़ा होता है। इसके अलावा अलंकृत सर्प के मुकाबले यह सांप प्रतिक्रिया और गतिविधियों में आमतौर पर काफी फुर्तीला होता है। छेड़े जाने पर यह कुंडली मार कर आश्चर्यजनक रूप से काफी शोर के साथ फुंकारता है, लेकिन काटता बिरले ही है।

बच्चे : ये सांप भी अंडे ही जनते हैं, लेकिन किस महीने में और कितनी संख्या में, यह मालूम नहीं।

भोजन : रजत बांसी का प्रिय आहार है—कृंतक। लेकिन अक्सर छोटे पक्षियों और छिपकलियों को भी अपना शिकार बनाते रहते हैं।

महत्व : क्षेत्रीय उपलब्धता की दृष्टि से यह सांप ऊपर बताए सभी क्षेत्रों में आम पाया जाता है और कृंतकों का यह सिद्धहस्त शिकारी है। इन्हें भी बहुत से लोग जहरीला मान कर देखते ही मार देते हैं। नाग से स्पष्टतः भिन्न होने के बावजूद लोग इन्हें 'नाग' कहकर ही पुकारते हैं।

अहानिकर

16. लाल धामन (ब्रांजबैक ट्री स्नेक)

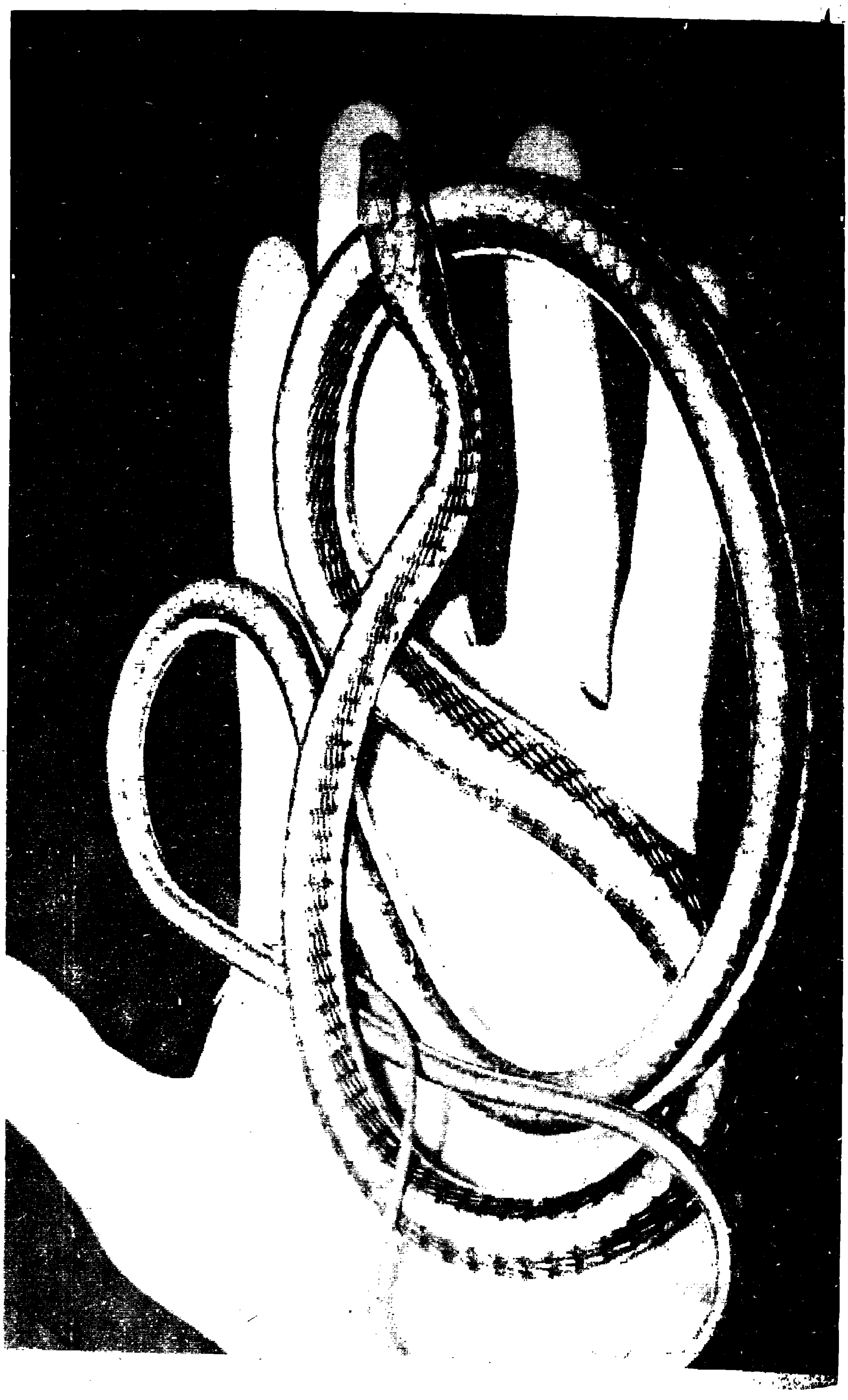
डेंड्रेलाफिस ट्रिस्टिस (Dendrelaphis tristis)

विशिष्ट लक्षण : मध्यम आकार का, बहुत पतला सांप; चिकने शल्क; इनके शरीर पर सिर से लेकर दुम तक चौड़े भूरे या कांस्य रंग की पृष्ठस्थ धारियां होती हैं।

औसत लंबाई : 1 मीटर; जन्म के समय : 15 सें.मी.; अधिकतम : 1.5 मीटर।

विवरण : लाल धामन लंबे और पतले होते हैं तथा इनका सिर चपटा और आंखें बड़ी होती हैं। अगल-बगल से यह गहरे भूरे या काले रंग का होता है, जिसके पृष्ठ पर बीचों-बीच कांस्य रंग की चौड़ी धारी होती है। इनका अधोभाग या तो सफेद, भूरा अथवा हल्के रंग का होता है। शिशु लाल धामन वयस्कों से काफी मिलते-जुलते हैं, लेकिन उनके शरीर पर हल्के रंग के पट्ट होते हैं जो पहले साल में लुप्त हो जाते हैं। इनके पेट के शल्कों के बाहरी किनारे दांतेदार होते हैं, जो शरीर के दोनों ओर बीज या सलवट जैसे दिखते हैं, ये सांप को ऊपर चढ़ने में मदद करते हैं। भारत में लाल धामन की आठ जातियां पाई जाती हैं, जिनमें से अधिकांश पहाड़ी जंगलों में रहती हैं।

वितरण : लाल धामन अंडमान निकोबार द्वीप समूह सहित भारत भर में पाया जाता है। हिमालय क्षेत्र में यह समुद्र की सतह से 2,000 मीटर की ऊंचाई तक पाया जाता है।



लाल धामन

आवास : लाल धामन पेड़ों, नीची झाड़ियों, बबूल जैसे कंटीले पेड़ों, ताड़ के पेड़ व पनई ताड़ के वृक्षों पर रहता है।

स्वभाव : यह काफी चौकन्ना रहने वाला सांप है। चलते समय यह अपने शरीर के अग्रभाग और गर्दन को ऐसे अद्भुत ढंग से हिलाता है, मानो लहराता हुआ नृत्य कर रहा हो। ऐसी ही 'नृत्य मुद्रा' यह छेड़े जाने पर भी धारण कर लेता है। इस सांप की एक अन्य विशेषता यह है कि यह दिनचर है और गर्मियों के दिनों में दोपहर के सबसे गर्म समय में भी बेहद सक्रिय रहता है। उत्तेजित किए जाने पर लाल धामन अपनी गर्दन और शरीर फुला लेता है जिससे अंतरा शल्कों की सफेद और लौहवर्णी नीली छटा दिखने लगती है। हमला करने और काटने में भी यह फुर्तीला है, लेकिन 'ढंग' से संभालने पर शांत भी हो जाता है। अन्य सांपों के मुकाबले इन्हें गिरने से डर नहीं लगता, अतः ये एक डाल से दूसरी डाल पर खूब फुदकते रहते हैं तथा दस-बीस मीटर की ऊंचाई से जमीन पर कूदने से भी नहीं घबराते। ये सांप आमतौर पर खुले में ही पाये जाते हैं और कभी-कभार ही छुपते हैं।

बच्चे : एक मादा लाल धामन लगभग छह लंबे पतले अंडे देती है। मादा अंडे या तो पेड़ की खोह में या फिर किसी पक्षी के पुराने घोंसले में देती है। मद्रास में एक मादा लाल धामन ने अप्रैल के प्रथम सप्ताह में सात अंडे दिए, जिनमें से मई के अंतिम दिन बच्चे निकले।

भोजन : इनका मुख्य भोजन मेंढक व छिपकलियां हैं। पेड़ के मेंढकों तथा छप्पर की छतों में छिपी-घूमती छिपकलियों का शिकार इनके लिए रोजमर्रा की सी बात है। इस शिकार के कारण अक्सर इनका सामना मनुष्य से हो जाता है और तब शिकार के चक्कर में ये शुद ही शिकार बनने लगते हैं।

महत्व : यह आम और सामान्य प्रकार का सांप है।

टिप्पणी : इस अहानिकर सांप के बारे में अनेक भ्रामक कहानियां बताई-सुनाई जाती हैं। तमिलनाडु में तो एक किस्सा यह प्रचलित है कि यह सांप काटने के बाद पेड़ पर चढ़ जाता है ताकि अपने शिकार का क्रियाकर्म देख सके।

अहानिकर

17. उड़न सर्प (फ्लाइंग स्नेक)

क्रॉयसोपेलिया ओर्नाता (Chrysopelea ornata)

विशिष्ट लक्षण : छोटे से लेकर मध्यम आकार का, पतला; चिकने शल्क; काले, पीले और लाल रंग के खूब चमकदार प्रतिरूप।

औसत लंबाई : 1 मीटर; जन्म के समय : 20 सें.मी.; अधिकतम : 1.75 मीटर।

विवरण : पतला, तीव्रगामी और रंग-बिरंगा यह सांप एकबारगी देखने में ऊर्जा-पुंज सा



उड़न सर्प

लगता है। इसका पृष्ठभाग काला है, जिस पर पीले अथवा सफेद रंग के सुंदर आड़े पट्ट तथा चित्तियां और लाल गुच्छे से बने होते हैं। इनका अधोभाग हरापन लिए होता है तथा पेट के शल्कों पर पार्श्वीय क्रीज या सलवट बनी होती है जो लाल धाम्मन की तरह ही इनके लिए भी चढ़ने में मददगार होती है। इनका सिर चमकदार पट्टियों से सज्जित होता है। इनके सिर और धड़ की सज्जा व रंग भौगोलिक स्थितियों के अनुरूप अलग अलग होता है। इनके शल्क चिकने व कुछ कुछ चमकदार होते हैं।

वितरण : उड़न सर्प का विस्तार दक्षिण-पश्चिम के पहाड़ी जंगलों तथा उत्तर-पूर्व के जंगलों, उत्तर बिहार और उड़ीसा के क्षेत्रों में समुद्र तल से 2,000 मीटर ऊपर तक पाया जाता है। इस सांप की एक अन्य जाति पैराडाइज उड़न सर्प *(सी. पैराडिसी)* अंडमान द्वीप के नारकोंडैम क्षेत्र में आम पाया जाता है।

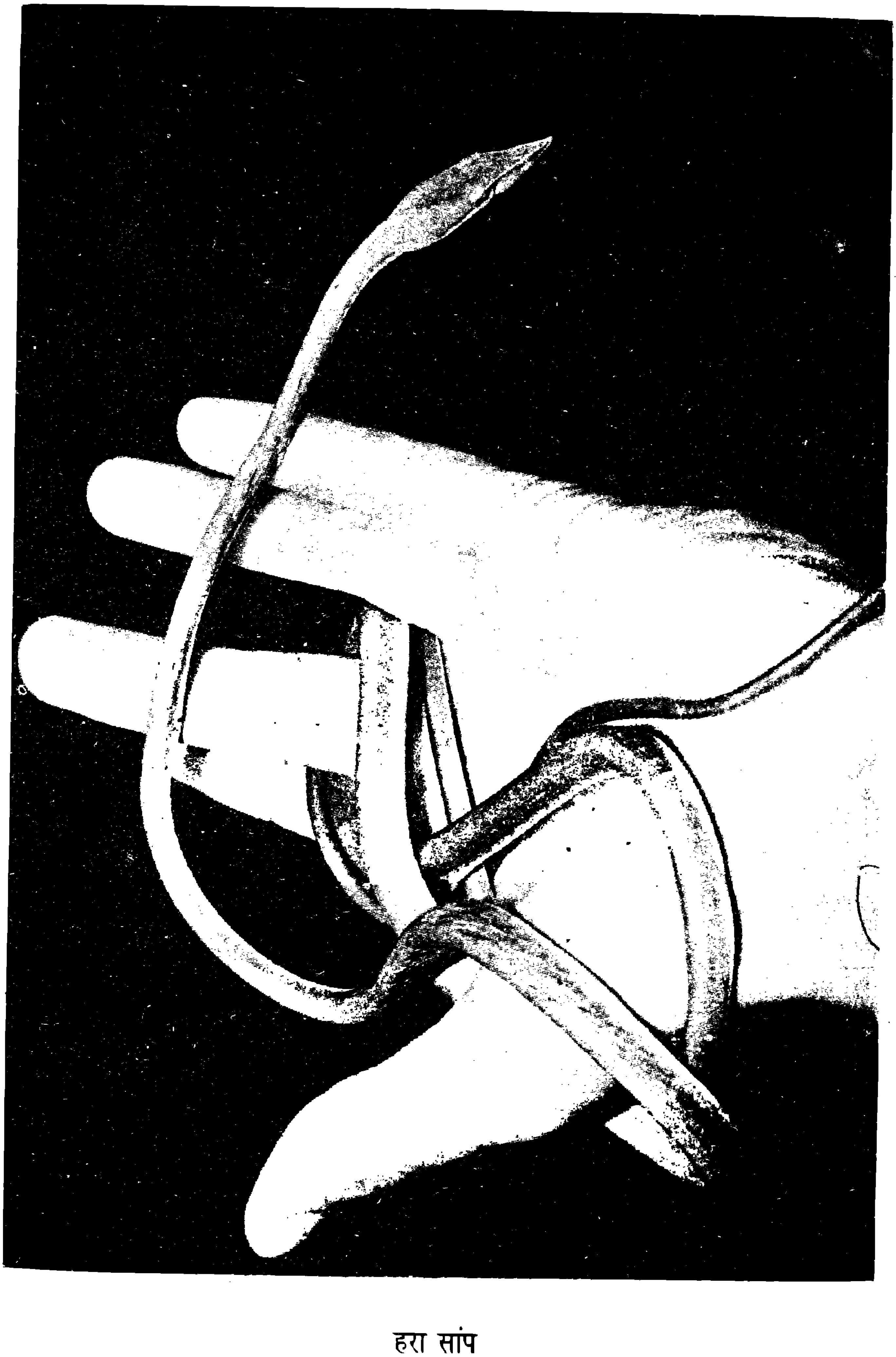
आवास : लगता है यह बड़े वृक्षों और घने जंगलों में अपना डेरा बनाना अधिक पसंद करता है। (लेकिन श्रीलंका और थाइलैंड में तो यह घरों और बाग-बगीचों के आसपास ही पाया जाता है।)

स्वभाव : लाल धामन की ही तरह यह सांप भी दिन में सक्रिय रहता है। अच्छी कुदान होने के कारण यह परभक्षण यानी दूसरों का शिकार होने से बच जाता है। इसकी कुदान क्षमता इतनी अधिक है कि यह पेड़ों की बहुत ऊंची शाखाओं से भी कूद सकता है। मिशिगन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने तो इस सांप की उड़ान की कई फिल्में बनाकर उनका अध्ययन-विश्लेषण किया है। यह देखा गया कि कूदते वक्त यह सांप अपनी पसलियां फैलाता है और अधोभाग का संकुचन करता है। चौड़े होने की इस क्रिया से उड़न सर्प ग्लाइडर की तरह उतरता है, और धड़ाम से गिरने से साफ बच जाता है। एक पेड़ से दूसरे पेड़ की शाखा पर इसे कूदते देखना सचमुच में अपने आप में एक आश्चर्यजनक अनुभूति है।

बच्चे : एम.ए. स्मिथ के अनुसार एक उड़न सर्प मादा 6 से 12 अंडे तक जनती है। बंगाल में इसका प्रजनन काल फरवरी-मार्च होता है।

भोजन : आदतों में उड़न सर्प लाल धामन से भिन्न नहीं है। मेंढक और छोटी-बड़ी छिपकलियां खाना इनका मुख्य आहार है। कभी कभी ये छोटे पक्षियों और उनके अंडों को भी खाते हैं। हालांकि इसके पीछे के विषदंत और हल्की-सी विषैली लाट इसके शिकार को निश्चल करने में कुछ सीमा तक सहायक हो सकते हैं, लेकिन प्रकटतः यह अपने शिकार को जिंदा ही निगलता है।

महत्व : इस पुस्तक के लेखक पश्चिमी घाट क्षेत्र (कालाकाडु-तमिलनाडु) से अभी इस जाति का एक ही सांप ढूंढ पाए हैं और लगता है कि यह सांप वहां काफी दुर्लभ है। इसके विपरीत बंगाल के जैव-आपूर्ति बाजार में यह नियमित रूप से जिंदा मिलता है। दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि यह सांप यूरोप और अमेरिका के सांप के शौकीनों में बेहद प्रिय है, अतः कुछ बरस पहले तक इसका खासा निर्यात होता रहा है। संपेरे इसे 'बेहद जहरीला' कह कर प्रचारित करते हैं। इसका अर्थ यह निकला कि सांप जितना रंग-बिरंगा होगा, उतना ही खतरनाक भी होगा, अतः सूरमाओं के सूरमा ही रंग-बिरंगी जाति को संभाल सकते हैं।



हरा सांप

18. हरा सांप (वाइन स्नेक)

अहैतुल्ला नासुटस (Ahaetulla nasutus)

विशिष्ट लक्षण : मध्यम से बड़े आकार तक, पतला; चिकने, मगर फीके शल्क; बेहद नुकीला सिर तथा चमकदार हरी रंगत।

औसत लंबाई : 1 मीटर; जन्म के समय : 20 सें.मी.; अधिकतम : 2 मीटर (मादा)।

विवरण : हरे सांप लंबे और पतले होते हैं तथा इनका सिर बेहद नोकदार होता है। पूरा शरीर समान रूप से तोते की तरह हरा होता है। किसी किसी के शरीर पर सफेद या पीली रेखा होती है जो पीठ या पृष्ठभाग के शल्कों को उदर भाग के शल्कों से अलग करती है। (दक्षिण भारत में 2,300 मीटर की ऊंचाई के पर्वतीय क्षेत्र में एक जाति देखने में आई है जिसका रंग गुलाबी लाल है।) इनका अधोभाग हल्का हरा या पीला होता है। उत्तेजित होने या किए जाने पर ये अपनी गर्दन और शरीर फुला लेते हैं, जिससे इनके शल्कों में अंतर्निहित काले-सफेद रंग उभर कर दिखने लगते हैं और पूरा शरीर काली-सफेद पट्टियों से भरा लगता है। जैसा कि पहले बताया गया है कि इनके शल्क चिकने तो होते हैं, पर चमकदार नहीं। इनकी क्षैतिज रूप से अंडाकार आंखें भारतीय सांपों में अपने किस्म की अनोखी मिसाल है। हालांकि यह सांप काफी आम है, लेकिन ये इतने छद्मावरण में होते हैं कि बहुत ही कम दिखते हैं।

वितरण : उत्तर-पश्चिम तथा गंगा बेसिन के अधिकांश भाग को छोड़कर यह सांप समूचे भारत में समुद्र की सतह से 2,500 मीटर तक की ऊंचाई के क्षेत्रों में पाया जाता है।

आवास : मैदानी क्षेत्रों में यह नीची झाड़ियों और पेड़ों से लेकर पहाड़ी क्षेत्रों में बरसाती जंगल के पेड़ों पर पाया जाता है।

स्वभाव : देखे जाने से बचने के लिए हरे सांप अपने आकार और रंग पर निर्भर करते हैं। ये बहुत तेज चल सकते हैं। उत्तेजित किए जाने पर ये अपना मुंह कुछ ज्यादा ही चौड़ा खोल कर अपने शरीर को डरावने अंदाज में फुला लेते हैं। इनके तथाकथित 'विषदंत' मुंह में पीछे की ओर होते हैं और ये अपने शिकार को जबड़े से तब तक दबोचे रखते हैं, जब तक इन दांतों से निकलने वाले हल्के जहरीले विष से वे मर नहीं जाते। प्रजनन काल के दौरान ये एक दूसरे से गुंथ कर गुच्छा-सा बना लेते हैं और समूहों में पेड़ों की शाखाओं से लटके हुए देखे जा सकते हैं।

बच्चे : मद्रास क्षेत्र में हरे सांप की मादा अगस्त से नवंबर माह के दौरान लगभग आठ जीवित बच्चे जनती है। ये बच्चे अपने माता-पिता की प्रतिकृति होते हैं और इनकी नाक थोड़ी ऊपर को उठी हुई होती है।

भोजन : हरे सांप का मुख्य आहार छिपकलियां, मेंढक, मूषक तथा छोटे पक्षी हैं। श्रीलंका में इन्हें मछलियों को पकड़ते और खाते देखा गया है तथा इस पुस्तक के लेखक ने तो

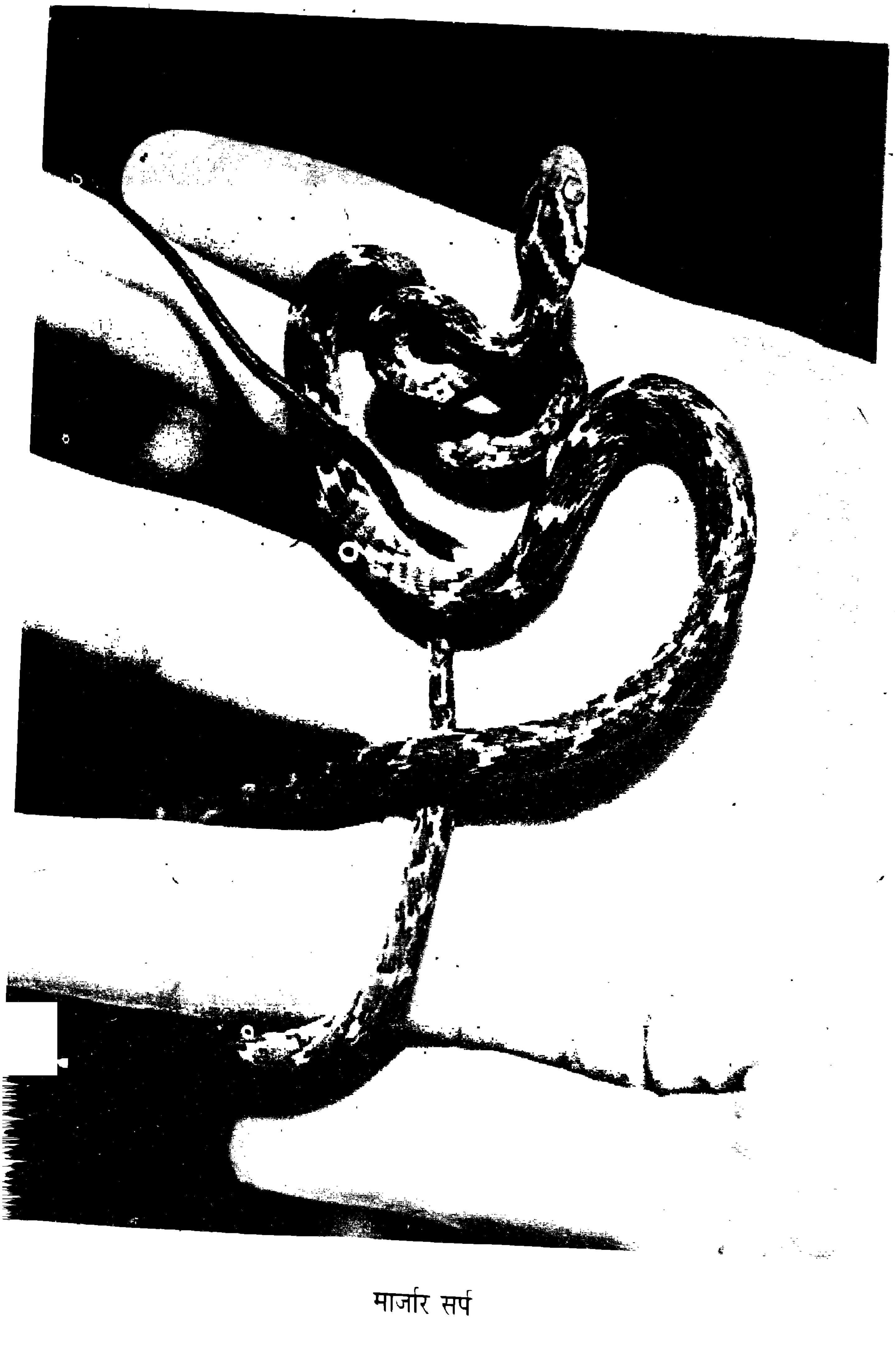
हरे सांप को एक शील्डटेल सर्प खाते हुए देखा है।
महत्व : यह एक आम सांप है। हालांकि यह सांप अहानिकर है, लेकिन लोग इससे काफी भय खाते हैं। यही कारण है कि लोग इसे देखते ही मार डालते हैं। कुछ क्षेत्रों में एक बेहद मूर्खतापूर्ण धारणा यह है कि हरा सांप उछल कर मनुष्य की आंखों पर वार करता है और उन्हें बाहर निकाल लेता है।

अहानिकर

19. मार्जार सर्प (कॉमन कैट स्नेक)

बोईगा ट्रिगोनाटा (Boiga trigonata)

विशिष्ट लक्षण : छोटे से लेकर मध्यम आकार तक का; बहुत पतला; चिकने शल्क; बेहद पतली गर्दन; बाहर को उभरी हुई आंखें; चपटा सिर; सुस्पष्ट प्रतिरूप।
औसत लंबाई : 65 सें.मी.; जन्म के समय : 25 सें.मी.; अधिकतम : 1.25 मीटर (मादा)।
वितरण : मार्जार सर्प का शरीर लंबा और पतला होता है और इसकी दुम और भी पतली होती हुई एक नोक जैसी होती है। इसका रंग हल्का-भूरा या कत्थई होता है जिस पर जरा गहरे रंग की टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं बनी होती हैं। इसके सिर के शीर्ष भाग पर स्पष्ट 'वाई' आकार का चिह्न बना होता है। इसका अधोभाग सफेदी लिए हुए या कत्थई होता है। किसी किसी सांप के पेट पर शल्कों पर एक छोटा-सा धब्बा होता है। इसके शल्क चिकने तो होते हैं, पर चमकदार नहीं। मार्जार सर्प को लोग अक्सर आरी शल्क वाले घोणस सांप समझ बैठते हैं। महाराष्ट्र के महार इन्हें लंबा फूर्सा कहते हैं। लेकिन सच तो यह है कि गोल-मटोल घोणस सांप के मुकाबले मार्जार सर्प लंबे और पतले होते हैं। भारत में मार्जार सर्प की ग्यारह किस्में पाई जाती हैं। मार्जार सर्प की दूसरी जातियां अधिकतर पहाड़ी हैं—इनमें से एक 'फार्स्टन्स मार्जार सर्प' की लंबाई तो दो मीटर तक होती है। इसकी एक अन्य किस्म है 'अंडमान मार्जार सर्प', जो सिर्फ अंडमान निकोबार में ही पाई जाती है।
वितरण : मार्जार सर्प यों तो समूचे भारत में पाया जाता है, लेकिन इसकी बहुतायत मैदानी क्षेत्रों में ही है। हिमालयी मार्जार सर्प, समुद्र तल से 3,000 मीटर ऊंचाई तक के क्षेत्रों में पाया जाता है।
आवास : तमिल में मार्जार सर्प को 'पाम लीफ स्नेक' कहते हैं, क्योंकि दिन के समय ये पनई ताड़ के पत्तों में कुंडली मार कर पड़े रहते हैं। दिन के समय पनई ताड़ के अलावा ये किसी ठंडे स्थान पर भी आराम करते देखे जा सकते हैं—उदाहरणतया झाड़ियों के बीच, घरों के छप्परों में अथवा पेड़ की डाल के नीचे।
स्वभाव : इनकी बिल्ली जैसी बाहर को उभरी हुई आंखें तथा लंबी और बेहद हल्की लपलपाती जीभ इसके निशाचर होने का प्रमाण है। इनके विषदंत पीछे हटकर होते हैं,



मार्जार सर्प

जिनमें पकड़े गए शिकार को निष्क्रिय कर डालने के लिए हल्का विष भरा होता है। ये आक्रमण नहीं करते तथा छेड़े जाने पर अपनी आत्मरक्षा में और भी कस कर कुंडली मार कर बैठ जाते हैं तथा पीछे हटकर अपनी दुम कंपकंपाते हैं। धकियाने और कोंचने पर ये कभी एकदम उल्टे हो जाते हैं और ऐसा नाटक करते हैं मानो मर गए हों।

बच्चे : मार्जार सर्प की मादा अक्तूबर माह के आसपास अंडे देती है। एक मादा लगभग सात अंडे देती है।

भोजन : इसका मुख्य आहार छोटी-बड़ी छिपकलियां हैं, लेकिन ये मूषकों और छोटे पक्षियों का शिकार भी करते हैं।

महत्व : दक्षिण भारत के कई क्षेत्रों में इसे आम सांप माना जा सकता है, लेकिन अन्य अविशिष्ट और निशाचर सांपों की तरह यह भी बिरले ही दिखता है।

अहानिकर

20. श्वानमुख जल सर्प (डॉग-फेस्ड वाटरस्नेक)

सेरबेरस रिन्कोप्स (Cerberus rhynchops)

विशिष्ट लक्षण : मध्यम आकार व मोटे शरीर का; फीके नौतल जैसे शल्क; गर्दन की अपेक्षा सिर अधिक चौड़ा; छोटी छोटी आंखें, पृष्ठभाग का प्रतिरूप अस्पष्ट; लेकिन उदर भाग पर अंकित चौखाने काफी स्पष्टता से उजागर।

औसत लंबाई : 60 सें.मी.; जन्म के समय : 15 सें.मी.; अधिकतम : 1.25 मीटर (मादा)।

विवरण : जैसा कि ऊपर बताया गया है, श्वानमुख जल सर्प भारी शरीर वाला सांप है, जिसकी आंखें व नथुने सिर पर जरा ऊपर को होते हैं। कुल मिलाकर इसका रंग धूसर स्लेटी होता है, जिस पर कभी कभी काले रंग की अस्पष्ट-सी अनियमित क्रास पट्टियां बनी होती हैं। इनकी आंखों से दो काली रेखाएं पीछे की ओर चली आती हैं। इनके अधोभाग पर काली और सफेद पट्टियों का चेक जैसा डिजाइन बना होता हैं। शल्क फीके रंग के और बहुत नौतलित होते हैं। भारतवर्ष में पश्च 'विषदंता' दलदल के सांपों की छह और जातियां पाई जाती हैं।

वितरण : अंडमान निकोबार सहित यह सांप सभी समुद्र तटीय क्षेत्रों में पाया जाता है।

आवास : यह सांप नदी के मुहानों अथवा ज्वारनद मुखों के चट्टानी तथा कीचड़ भरे स्थानों जैसे मैंग्रोव-दलदल, नमक के पोखरों तथा संकरी-खाड़ी जैसे स्थानों पर अपना डेरा बनाता है। हालांकि यह सांप खारे पानी वाले स्थानों को ज्यादा पसंद करता है, लेकिन इस पुस्तक के लेखक ने इसे समुद्र तट से मीलों दूर धान के खेतों में मछली पकड़ने के लिए लगाये गये जालों में देखा है।



श्वानमुख जल सर्प

स्वभाव : श्वानमुख जल सर्प मुख्यतः निशाचर प्रतीत होता है, लेकिन इसे दिन के समय समागम और भोजन करते हुए देखा गया है। ये तटीय रेखा के निकट चट्टानों के नीचे और केकड़ों के बिलों में रहते हैं। इन स्थानों पर छिपे छिपे इनका सिर ही नजर आता है। गहराई में तल से करीब करीब लगते हुए जब ये तैरते हैं तो इनकी लंबी, संवेदी जीभ पूरे विस्तार में बाहर निकलती रहती है। इस सांप की विशेषता यह है कि यह बहुत ही शानदार फुर्तीला तैराक है। और जमीन पर जब इसे डराया जाता है तो यह उछल कर एक ओर हो अपना बचाव करता है।

बच्चे : फरवरी और मई के मध्य मादा जल सर्प 6 से 30 जिंदा शिशु सर्पों को जन्म देती है। एक सप्ताह या उससे अधिक समय तक ये शिशु सर्प अक्सर अपनी मां के इर्दगिर्द समूहबद्ध रहते हैं।

भोजन : यह सांप कई जातियों की मछलियों को खाता है, जिनमें कांटेदार मछली तिलापिआ तथा क्लेरियस जैसी शिंबाटी (कैट फिश) भी शामिल हैं। इसके अलावा यह सांप मेंढक भी खाता है।

महत्व : हालांकि इस सांप का दुरुपयोग नहीं हुआ है, लेकिन समुद्रतटीय आवास में दिनोंदिन आ रही कमी तथा खारे पानी के जलमार्गों में बढ़ते प्रदूषण से यह अछूता नहीं रहा है। विचित्र सी बात है कि एम.ए. स्मिथ ने इस सांप को एक दुर्लभ सांप माना, पर सच तो यह है कि भारत में यह सांप बहुतायत से पाया जाता है।

विषैले सांप



21. करैत (कॉमन करैत)

बंगरस सिरूलियस (Bungarus caeruleus)

विशिष्ट लक्षण : मध्यम आकार का; चिकने, चमकदार शल्क; गर्दन के मुकाबले सिर थोड़ा चौड़ा; काला भुजंग रंग जिस पर सुस्पष्ट सफेद रेखाएं अंकित रहती हैं।

औसत लंबाई : 1 मीटर; जन्म के समय : 25 सें.मी.; अधिकतम : 1.75 मीटर (नर)।

विवरण : सामान्य करैत चिकने, चमकदार शरीर के नीली आभा लिए काले रंग के सांप हैं, गोल सिर गर्दन से थोड़ा भिन्न होता है। इसकी रंगत जाति के अनुरूप एक-दूसरे से भिन्न होती है। यदि ताजी ताजी केंचुल उतारे एक जाति के करैत का रंग गहरा लौहवर्णी नीला-काला होता है, तो केंचुल उतारने को तैयार करैत का रंग पीली आभा लिए फीका नीला धूसर होता है। इसके पूरे शरीर पर लगभग 40 पतली क्रास सफेद रेखाएं होती हैं। कुछ करैत बच्चों और वयस्कों की रीढ़ के पहले या शुरू के एक-तिहाई भाग पर सफेद रेखाओं की जगह सफेद धब्बे हो सकते हैं। लेकिन रंगों में यह विभिन्नता तथा एक समान काले रंग के परिवर्ती सांप कुछ चुनिंदा भौगोलिक जातियों में ही देखे जाते हैं। सामान्य करैत का अधोभाग सफेद होता है। कभी कभी करैत को सामान्य संखारा (*लाइकोडन* जाति) समझने की भ्रांति हो जाती है, लेकिन संखारा इससे काफी छोटा और चपटा, पर कुछ कुछ नुकीले सिर वाला होता है। भारत में पाई जाने वाली छह करैत जातियों में 'सामान्य करैत' सबसे अच्छी तरह जानी गई करैत जाति है, तथा चार बड़े, और खतरनाक सांपों में एक है। सामान्य और गाओमन करैतों के अलावा, अन्य करैत जरा दुर्लभ किस्म के करैत हैं, जो पूर्वी हिमालय और असम में ही पाए जाते हैं।

वितरण : करैत समुद्र तल से 1,700 मीटर ऊंचाई तक, जिसमें अंडमान और निकोबार द्वीप समूह शामिल हैं, भारत के अधिकांश क्षेत्रों में पाया जाता है। बंगाल, असम और उड़ीसा में यह अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है, वहां गाओमन आम पाया जाने वाला सांप है।

आवास : करैत एक मैदानी सांप है, अतः रेतीली मिट्टी, दीमक के टीले, छोटे कृंतकों के बिल, ईंटों व मलबे के ढेर उसके छिपने-रहने के बेहतरीन स्थल हैं। हालांकि देश के कुछ भागों में काफी आम हैं (उदाहरणतया तमिलनाडु के तटीय क्षेत्र में), लेकिन फिर भी बहुत ही कम दिखाई देते हैं।

स्वभाव : दिन के समय में करैत खेतों में रहने वाले मूषकों और घूसों के बिलों में छिपा रहता है या आराम करता है। यह सांप निशाचर है, इसीलिए दिन में दिखाई नहीं देता। नर करैत को अपने इलाके और अपनी 'मर्दानगी' का बड़ा अहसास रहता है—यानी यह दूसरे नर करैत को अपने इलाके में शिकार और प्रेम नहीं करने देता। यह इतना हेकड़ी वाला सांप है कि जब इसे पकड़ कर उस पिंजरे में डाला जाता है, जिसमें नूमने के लिए और सांप होते हैं तो यह जबरदस्त फूं-फां करता है, झटके दे-देकर तांडव करता है और

कभी कभी तो इसे काटने या दंश मारने का दौरा-सा हो आता है। करैत के विषदंत छोटे होते हैं और अपने शिकार को यह 'बुलडॉग' की तरह पकड़ता है। रात को यह बेहद सक्रिय और गतिमान होता है।

बच्चे : मद्रास में मादा करैत मार्च से मई के दौरान 8 से 12 अंडे तक देती है, इन अंडों में से मई और जुलाई के बीच बच्चे निकलते हैं। उत्तर भारत में यह एक महीने बाद अंडे देती है। मादा करैत नाग तथा अन्य सांपों की तरह बच्चे निकलने तक अपने अंडों के पास रहती है।

भोजन : इनका मुख्य भोजन सांप, छिपकलियां ओर कृंतक होते हैं। करैत सही अर्थों में स्वजाति भक्षक यानी अपनी ही बिरादरी के सांपों को खाने वाला है। यही कारण है कि जब इनका कोई झुंड पकड़ा जाता है तो उसमें से कुछ छोटे करैत गायब रहते हैं। सांपों में हुर्वा तथा हरे पानी के सांप इनके प्रिय आहार मालूम पड़ते हैं।

महत्व : करैत एक आम सांप है जो कुछ क्षेत्रों में बहुतायत में पाया जाता है। ये मनुष्यों की बस्ती के आसपास ही रहते और शिकार करते हैं। इसके बावजूद इन्हें मनुष्यों से कोई परेशानी नहीं होती, क्योंकि निशाचर होने के कारण इनकी गतिविधियां गुप्त ही रहती हैं।

विष : करैत का विष बेहद जहरीला होता है जिससे तंत्रिका पक्षाघात जैसा हो जाता है। इस प्रभाव के कोई विशिष्ट चिह्न परिलक्षित नहीं होते, अतः मरीज में किसी प्रकार के पक्षाघात चिह्नों के उभरने पर नजर रखनी चाहिए तथा उसे तत्काल विषरोधी चिकित्सा देनी चाहिए।

विषैला

22. गाओमन (बैंडेड करैत)

बंगरस फैसिएटस (Bungarus fasciatus)

विशिष्ट लक्षण : मध्यम से बड़े आकार का; चिकने, चमकदार शल्क; पीठ पर पीले-काले रंग की चौड़ी पट्टियां।

औसत लंबाई : 1.5 मीटर; जन्म के समय : 25.30 सें.मी.; अधिकतम : 2.25 मीटर।

विवरण : गाओमन एक बड़ा, सुस्पष्ट काली-पीली पट्टियों वाला सांप है। इसकी रीढ़ या मेरु रज्जु खासी बड़ी होती है तथा दुम अपेक्षाकृत मोटी और भोथरी होती है। इसका सिर गोलाई लिए हुए शरीर से थोड़ा भिन्न होता है। शरीर पर बनी पट्टियां अधोभाग पर फीकी रहती हैं।

वितरण : यह समुद्र की सतह से 1,500 मीटर ऊंचाई तक के क्षेत्रों में पाया जाता है, जिनमें—असम, बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा शामिल हैं। इनके अलावा यह मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में भी देखा गया है।



गाओमन

आवास : गाओमन किसी जल-स्रोत के निकट बने दीमक के टीलों और कृंतक के बिलों में अपना ठिकाना बनाते हैं। ये अक्सर गांवों के निकट भी अपना डेरा जमाते हैं ताकि इन्हें कृंतकों और पानी की सुविधा बनी रहे। खुले खेत इनके पसंदीदा मैदान हैं।
स्वभाव : सभी करैतों की तरह यह रहस्यमय करैत भी सिर्फ रात ही में निकलता है। स्वभाव से गाओमन डरपोक और शांत प्रकृति के होते हैं। सांपों के व्यवसायी इन्हें पकड़ते समय कोई खास एहतियात नहीं बरतते, लेकिन बताते हैं कि यह सांप रात में सक्रिय होता है। अन्य भारतीय निशाचर सांपों की ही तरह इस खूबसूरत सांप की आदतों के बारे में बहुत ही कम जानकारी है।
बच्चे : मद्रास के स्नेक पार्क में बंगाल की एक मादा गाओमन ने अप्रैल माह में 12 अंडे दिए, जिनमें से 61 दिन बाद 6 अंडों में से बच्चे निकले।
भोजन : गाओमन की आहार तालिका भी वही है जो सामान्य करैत की है। हां, ये मौका पड़ने पर सामान्य करैतों को भी खा जाते हैं। स्नेक पार्कों तथा अन्य स्थलों पर पकड़ कर रखे गए गाओमन, जल सर्पों तथा छोटे चूहों को खाते हैं। आमतौर पर इनका शिकार पकड़े जाने के 10 से 20 मिनट के अंदर दम तोड़ देता है जो संभवतः इसके विषदंश के अलावा जबड़ों के दबाव से दम घुटने से मरता है।
महत्व : यह सांप काफी आम होते हुए भी बिरले ही दिखाई पड़ता है।
विष : गाओमन का विष बहुत विषैला होता है। लेकिन यह सांप काटता बहुत कम है और भारत में तो इसके काटे से किसी के मरने की जानकारी नहीं है। हां, इसके जहर को निष्प्रभावी करने के लिए भारत में अभी तक कोई विषरोधी औषध नहीं बनी है। इसके विष को निष्प्रभावी करने के लिए यदि किसी निकटतम स्थान से विषरोधी औषध मिल सकती है, तो वह है बैंकाक का 'क्वीन साओवाभा इंस्टीट्यूट'।

विषैला

23. तनु प्रवाल सर्प (स्लैंडर कोरल स्नेक)

कैलोफिस मेलानुरस (Callophis melanurus)

विशिष्ट लक्षण : छोटा और पतला; चमकदार शल्क; काला, भोथरा सिर; दुम काली, सिंदूरी और नीली।
औसत लंबाई : 25 से 35 सें.मी. तक; व्यास : 5 मि.मी.।
विवरण : पतले छरहरे प्रवाल सर्प का रंग हल्का भूरा होता है और चित्तियां अस्पष्ट होती हैं। इसका सिर और गर्दन काले होते हैं तथा सिर के शीर्ष पर दो सुस्पष्ट पीले रंग के धब्बे होते हैं। इसकी दुम के आधार तथा दुम के छोर पर काले रंग का एक जीर्ण-शीर्ण



तनु प्रवाल सर्प

सा छल्ला होता है। इसका अधोभाग समान रूप से गुलाबी-लाल गुदाद्वार पर चमकीला सिंदूरी तथा दुम का अधोभाग नीलाभ होता है। इसका सिर भोथरा होता है और चौड़ाई गर्दन जितनी ही होती हैं। इसके शल्क चिकने होते हैं और साथ ही थोड़े चमकदार भी। भारत में पाई जाने वाली पांच प्रवाल सर्प जातियों में तनु प्रवाल सर्प एक है। इस जाति के अलावा अन्य चार जातियां पश्चिमी घाट और पूर्वी हिमालय के पहाड़ी जंगलों में पाई जाती हैं।

वितरण : यह सांप मध्य भारत तथा उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र को छोड़ कर भारत के अधिकांश मैदानी क्षेत्रों में पाया जाता है। *मैक्लेलैंडी* प्रवाल सर्प हिमालय में 4,000 मीटर की ऊंचाई तक पाया जाता है।

आवास : लेखक ने तनु प्रवाल सर्प मद्रास के पास समुद्रतटीय झाड़ियों के जंगल, पत्तियों के नीचे, ईंटों व मलबे के ढेरों में तथा रेतीले खंडों में स्वयं देखे हैं।

स्वभाव : यह सांप मुख्यतः निशाचर है, लेकिन कभी कभी सर्द महीनों में भोर के समय भी इसे सक्रिय देखा गया है। तनु प्रवाल सर्प रेतीली मिट्टी को खोदने में या रेतीली मिट्टी में घर बनाने में माहिर होते हैं, जहां ये चुपचाप बिना हिले-डुले शिकार की ताक में घंटों पड़े रहते हैं। ऐसी स्थिति में सिर्फ इनका सिर ही नजर आता है। सर्प उद्यानों आदि स्थानों पर रखे गए प्रवाल सर्प अपना अधिकांश समय रेत के नीचे बिताते हैं। छेड़े जाने पर ये अपनी दुम मोड़ कर उसे हिलाते हैं, जिससे इनके अधोभाग की चकित कर डालने वाली रंग-बिरंगी छटा बरबस आदमी का ध्यान अपनी ओर खींच लेती है और उसका ध्यान सांप के सिर से हट जाता है।

बच्चे : इस संबंध में इससे ज्यादा कुछ नहीं पता कि भारत में पाए जाने वाली सभी प्रवाल सर्प जातियां अंडे ही देती हैं। उत्तर भारत में पाई जाने वाली जातियों को जुलाई-अगस्त में 6 से 14 अंडों के साथ देखा गया है। (*सी.मैक्लेलैंडी*)।

भोजन : मद्रास के स्नेक पार्क में रखे गए प्रवाल सर्प अंधे सांपों को खाते हैं।

महत्व : इन सांपों से संबंधित जो साहित्य मिलता है, उसके अनुसार ये दुर्लभ सांप हैं। यह जंगलों में पाई जाने वाली जाति है और हमारे देश से जंगल तेजी से नष्ट हो रहे हैं, अतः निस्संदेह ये सांप भी बेहद दुर्लभ होते जा रहे हैं।

विष : कोबरा के इन नन्हें संबंधियों के विष प्रकार के बारे में कोई जानकारी नहीं है। लेकिन धारीदार प्रवाल सर्प एक मीटर से भी ज्यादा लंबा होता है और यह मनुष्य के लिए खतरनाक साबित हो सकता है।

24. भारतीय (द्विनेत्रांकी) नाग [इंडियन (स्पैक्टेकल्ड) कोबरा]

(नाजा नाजा नाजा) (Naja naja naja)

विशिष्ट लक्षण : मध्यम से बड़े आकार का; चिकने, चमकदार शल्क, सिर और गर्दन चौड़े; गर्दन के अधोभाग पर काली चौड़ी पट्टी; गर्दन के शीर्ष पर विशिष्ट हुड या फण के चिह्न।

औसत लंबाई : 1 मीटर; जन्म के समय : 25 सें.मी.; अधिकतम : 2 मीटर (नर)।

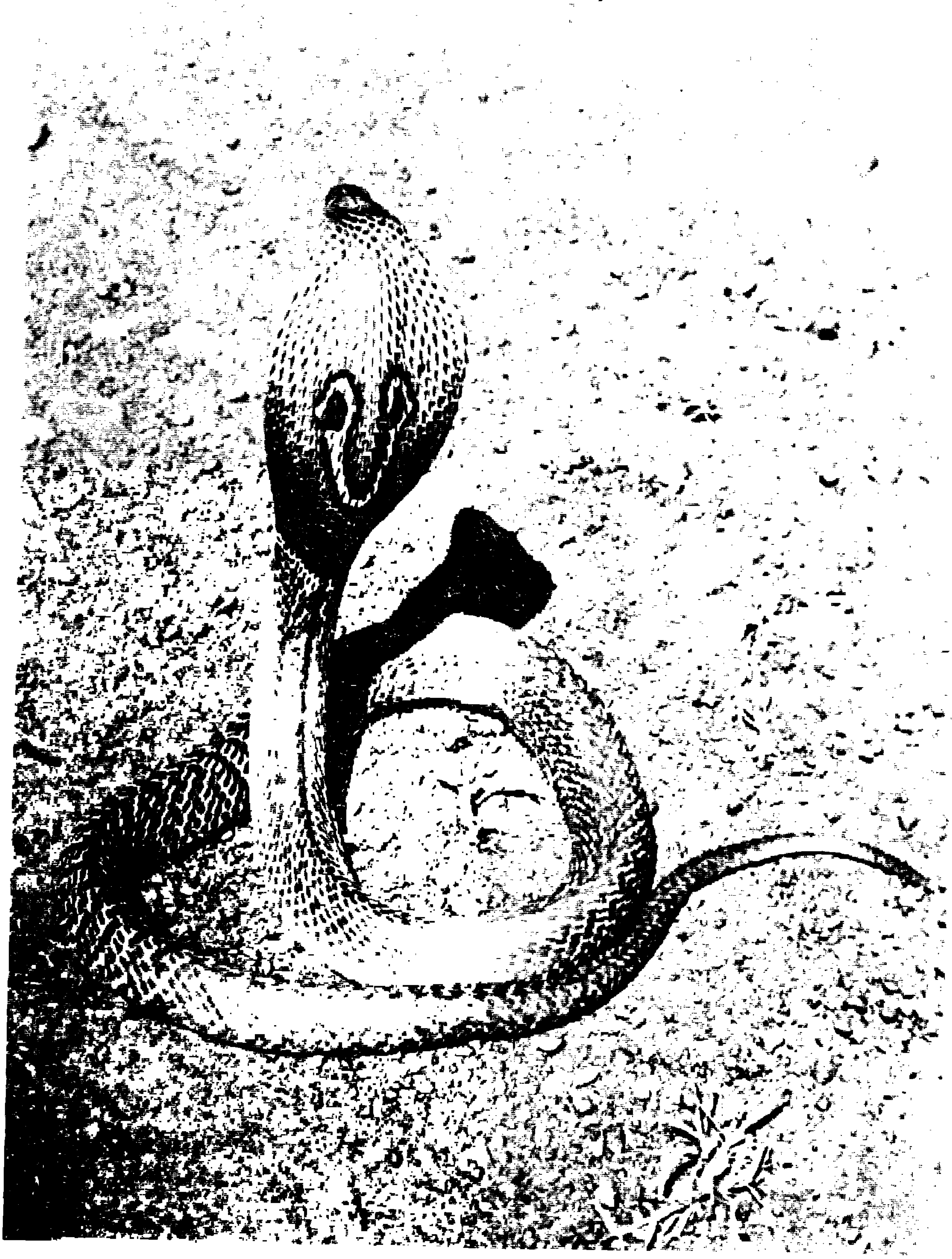
विवरण : यह नाग चिकने शल्क, काली आंखों, चौड़ी गर्दन, चौड़ा सिर तथा मध्यम आकार वाला सांप है। इसके रंग भिन्न भिन्न हो सकते हैं, उदाहरणतया—यह काला या गहरा भूरा हो सकता है और पीली आभा लिए सफेद रंग का भी। इसका अधोभाग आमतौर पर सफेद या पीलापन लिए होता है, जिसकी गर्दन पर चौड़ी, काली पट्टी बनी होती है। इसके शरीर पर आमतौर पर चित्तीदार सफेद या पीला डिजाइन अंकित होता है, जो कभी कभी विषम पट्टियों या ऊबड़-खाबड़ पट्टियों जैसा लगता है। इसके फण पर सुप्रसिद्ध डिजाइन ऐसा लगता है मानों दो छल्लों को जोड़ दिया गया हो। कभी कभी तो यह डिजाइन फण जैसा नहीं होता या यह भी हो सकता है कि यह चिह्न हो ही नहीं। उत्तर-पश्चिम भारत में पाया जाने वाला कोबरा काले रंग का होता है तथा इसके फण का डिजाइन मुश्किल से ही दिखता है यानी काफी धुंधला होता है। अक्सर नागों को गलती से भारतीय धामन समझ लिया जाता है, जिसकी गर्दन और सिर नाग की अपेक्षा काफी पतले होते हैं। इसके अलावा भारतीय धामन तीन मीटर तक लंबा होता है, जबकि भारतीय नाग की अधिकतम लंबाई दो मीटर ही होती है।

भारत में आमतौर पर नागों की तीन उप-जातियां मानी गई हैं, जिनमें नाग सांप अधिकतम क्षेत्र में पाया जाता है तथा यह चार बड़े खतरनाक सांपों में से एक है। नाग की छह जातियां एशिया में और नौ अफ्रीका में पाई जाती हैं। उत्तर-पश्चिम भारत तथा पाकिस्तान में पाया जाने वाला काला स्याह नाग एक अन्य उप-जाति या भौगोलिक प्रजाति है। फण पर सुपरिचित डिजाइन का न होना तथा रंग के अलावा यह नाग सांप से बहुत मिलता-जुलता है।

वितरण : यह भारत भर में पाया जाता है तथा हिमालय में समुद्र तल से 4,000 मीटर तक ऊंचे क्षेत्र में पाया जाता है।

आवास : नाग धान के उपजाऊ क्षेत्रों में खूब पाये जाते हैं, क्योंकि वहां इन्हें खाने को चूहे तो खूब मिलते ही हैं, साथ ही रहने को उनके बनाए बिल भी बहुतायत में उपलब्ध होते हैं। पर इनकी अनुकूलन क्षमता गजब की है, अतः ये देश के बेहद खुश्क क्षेत्रों में भी देखे जा सकते हैं। अन्न भंडार, दीमक के टीले, मिट्टी के बांध तथा चट्टानों के ढेर इसके प्रिय आवास-स्थल हैं। जहां जितने अधिक चूहे होंगे, वहां उतने ही अधिक नाग भी मिलेंगे।

स्वभाव : जैसा कि पहले बताया गया है, नाग चूहों के बिलों में (अक्सर गांवों के आसपास)



भारतीय (द्विनेत्रांकी) नाग

रहते हैं। यह शर्मीला किस्म का सांप है, अतः यथासंभव मनुष्य की निगाह से दूर ही रहता है। अपनी गर्दन की पसलियों को फैला लेना तथा अपने क्षेत्र में अतिक्रमणकारी को डराने के लिए अपने फण स्थित चमकीली 'आंखों' से भयभीत करना अथवा चेतावनी देना इसके हथकंडे होते हैं। ज्यादा उत्तेजित होने पर ये श्वास-द्वार से तेजी से हवा निकालते हुए फुंकारते हैं। अफ्रीका की कुछ नाग जातियों के सांप तो उत्तेजित होने पर प्रबल फुंकार के साथ इतने वेग से विष-उलटते हैं कि उनके विष की बौछार दो मीटर दूर तक जा सकती है। इसके मुकाबले भारत के उत्तर-पूर्व क्षेत्र में पाया जाने वाला नाग अपेक्षाकृत कम दूरी तक विष वमन करता है। नाग शाम के समय ही निकलना और शिकार करना पसंद करता है। अन्य सांपों की ही तरह यह भी बरसात में काफी सक्रिय हो जाते हैं।

बच्चे : मादा नाग मई से जुलाई के बीच (क्षेत्रीय स्थिति के अनुसार) 12 से 30 तक अंडे देती है। अंडे देने के लिए मादा आमतौर पर या तो चूहे का बिल या फिर दीमक का टीला चुनती है। अंडों से बच्चे निकलने में लगभग 60 दिन लगते हैं और इस दौरान मादा बिना इधर-उधर हुए अंडों के पास ही रहती है। इस दौरान वह अधिकतर निराहार ही रहती है। शिशु नाग अपने माता-पिता की पूर्णतः प्रतिकृति ही होते हैं। आमतौर पर अडों से निकलने के एक-दो सप्ताह बाद ये बच्चे इधर- उधर हो जाते हैं। कभी कभी एक ही बिल में एक से अधिक अंडों के झुंड दिए जाते हैं। नाग तथा अन्य बहुत से सांप साल में कई बार प्रजनन कर सकते हैं।

भोजन : शिशु सर्प कीटों, छिपकलियों, छोटे-बड़े मेंढकों तथा छोटे सांपों को खाते हैं। जैसे जैसे ये बड़े होते जाते हैं, ये क्रमशः कृंतकों, छोटे-बड़े मेंढकों, और पक्षियों को खाना पसंद करते हैं। लेखक ने नाग को मानीटर छिपकली को निगलते हुए भी देखा है। सामान्यतः ये शिकार पर अपनी पकड़ तब तक बनाए रखते हैं, जब तक कि वह निष्क्रिय नहीं हो जाता।

महत्व : अधिकांश क्षेत्रों में इनकी सुंदर खाल के लिए इन्हें पकड़ा और मारा जाता है। सन् 1973 से नाग की खाल का निर्यात भारत सरकार के नियंत्रण में है, लेकिन इस नियंत्रण के बावजूद बाजार में नाग की खाल की भरमार रहती है। कुछ चर्मशोधक कारखाने तो एक दिन में हजारों खालें बेचते हैं। चूंकि नाग कृषि भूमि को अधिक पसंद करता है, अतः जंगलों को साफ करके कृषि भूमि तैयार करने से सांप की खाल के व्यापारियों को लाभ ही हुआ है।

विष : नाग का विष सीधा शिकार के तंत्रिकातंत्र पर असर करता है। इससे नाग द्वारा डसे जाने पर पहले तो दम घुटने लगता है, फिर दिल काम करना बंद कर देता है। आमतौर पर दंश के साथ नाग उतना जहर नहीं छोड़ता जिससे कि मृत्यु हो सके लेकिन नाग के काटने पर उसका इलाज तुरंत और अनिवार्य रूप से कराना चाहिए। यों नाग के विष पर व्यापक अनुसंधान चल रहा है। बंबई के टाटा मेमोरियल कैंसर इंस्टीट्यूट में शोध के दौरान पाया गया है कि नाग के विष के कुछ तत्व मूषकों के एक विशेष प्रकार के कैंसर ऊतकों को नष्ट कर सके हैं। यही नहीं, 'कोबरॉक्सीन' तथा 'नाइलोक्सीन' जैसी प्रभावी दर्दनाशक औषधियां भी नाग के विष से बनाई जाती हैं। (हिन्सन, वैस्कॉट एंड डनिंग, यू.एस.ए.)



भारतीय (एकनेत्रांकी) नाग

25. भारतीय (एकनेत्रांकी) नाग [द इंडियन (मोनोकल्ड) कोबरा]

(नाजा नाजा काओथिया) (Naja naja Kaouthia)

विशिष्ट लक्षण : मध्यम आकार का; चिकने, चमकदार शल्क; चौड़ा सिर, चौड़ी गर्दन, हुड का सुस्पष्ट चिह्न, लेकिन 'स्पैक्टेकल्ड कोबरा' के चिह्न से काफी भिन्न।

औसत लंबाई : 1 मीटर; जन्म के समय : 20 सें.मी.; अधिकतम : 1.5 मीटर (नर)।

विवरण : मोनोकल्ड नाग की खाल अपेक्षाकृत अधिक चमकीली होती है, हुड या फण भी अधिक गोलाई लिए, पर छोटा होता है। इसके अलावा इसका सिर भी 'स्पैक्टेकल्ड कोबरा' के सिर की तुलना में छोटा होता है। इनके रंगों में पर्याप्त भिन्नता होती है, उदाहरणतया–पीलेपन से हरितिमा लिए भूरा या काला–जिस पर ऊबड़-खाबड़-सी पट्टियां बनी होती हैं। इसके छत्र पर सफेद रंग का सुस्पष्ट उपनेत्र सा बना होता है। इसका अधोभाग पीलापन लिए सफेद होता है। 'मोनोकल्ड कोबरा' देखने में तो 'स्पैक्टेकल्ड कोबरा' जैसा ही लगता है, लेकिन दोनों में अनेक छोटी छोटी भिन्नताएं हैं।

वितरण : दरअसल 'मोनोकल्ड कोबरा', नाग की एक ऐसी उप-जाति है जो समस्त उत्तर-पश्चिम भारत, उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों, बिहार, उड़ीसा तथा अंडमान व समूचे बंगाल और असम में पाई जाती है।

आवास : 'स्पैक्टेकल्ड कोबरा' की अपेक्षा यह नाग अधिक गीले क्षेत्रों में रहना अधिक पसंद करता है।

स्वभाव : एकनेत्रांकी नाग (जो कहीं कहीं 'बंगाल कोबरा' के नाम से भी जाना जाता है) मुख्यतः निशाचर है। छेड़े जाने पर ये अपना फण फैलाकर फुंफकारते हुए आक्रमणकारी को डराता है। लेकिन काटता तभी है, जब इसके पास आत्मरक्षा का कोई चारा न बचा हो। अन्य सांपों की ही तरह नागों का स्वभाव भी एक-दूसरे से काफी भिन्न होता है। उदाहरणतया कुछ नाग ऐसे होते हैं, जो सीधे-सादे होते हैं और उत्तेजित नहीं होते, लेकिन अधिकांश बहुत ही सक्रिय और फुर्तीले होते हैं। जैसा कि हमेशा होता है, मौका मिलते ही ये बच कर भाग निकलते हैं।

बच्चे : इनके अंडे और अंडों के समूहों का आकार 'स्पैक्टेकल्ड कोबरा' के अंडों की तुलना में संभवतः छोटा होता है। बहरहाल, मादा मोनोकल्ड जनवरी से मार्च के दौरान अंडे जनती है।

भोजन : नाग की यह उप-जाति अनियततापी का शिकार अधिक पसंद करती है, उदाहरणतया–मछली और छोटे सांप। वैसे ये चूहे और मेंढक भी खाते हैं।

महत्व : इनकी सुंदर खाल के कारण इनका जमकर शिकार किया जाता है।

विष : इनका विष 'स्पैक्टेकल्ड कोबरा' के विष की तुलना में कम जहरीला होता है। इसके काटे के लिए हाफकिन विषरोधी काफी प्रभावकारी दवा है।



नागराज

26. नागराज (किंग कोबरा)

ऑफियोफैगस हन्ना (Ophiophagus hannah)

विशिष्ट लक्षण : बड़े आकार का; चिकने, चमकदार शल्क, शरीर के अग्रभाग पर सुस्पष्ट हल्के क्रास पट्ट ; सिर पर काले किनारों वाले बड़े शल्क।

औसत लंबाई : 3 मीटर; जन्म के समय : 50 सें.मी.; अधिकतम : 5 मीटर (नर)। (थाईलैंड में 6 मीटर तक)।

विवरण : विशालकाय नागराज का बड़ा सिर गर्दन के मुकाबले थोड़ा चौड़ा होता है। जैसा कि पहले बताया गया है, इसके सिर के शल्क काले किनारों वाले होते हैं और इनका रंग पीलापन लिए भी होता है और गहरा जैतूनी हरा भी, लेकिन दुम अक्सर एकदम स्याह काली होती है। पीठ पर पीली पट्टियां उड़ीसा और उत्तर प्रदेश में पाए जाने वाले हल्के रंग के नागराज के शरीर पर ज्यादा अच्छी तरह दिखाई देती हैं। नागराज विश्व का सबसे बड़ा विषैला सर्प है।

वितरण : भारत में एक प्रकार से यह दुर्लभ ही है तथा यह पश्चिमी घाट के घने जंगलों और उत्तर भारत के पहाड़ी जंगलों तक सीमित है। इनका सीमित क्षेत्रीय विस्तार नीलगिरी की पहाड़ियां, पालनिस तथा पश्चिमी घाट में गोआ तक, हिमालय के गिरिपाद से (2,000 मीटर ऊंचाई तक) जो लाहौर से शुरू होकर उत्तर भारत होते हुए असम तक चली जाती हैं– तक है। इसके अलावा उड़ीसा, बिहार, पश्चिम बंगाल तथा अंडमान के क्षेत्रों में भी यह पाया जाता है।

आवास : पश्चिमी घाट क्षेत्र और असम में नागराज सामान्यतः कम ऊंचाई से लेकर समुद्र से 1,200 मीटर ऊंचाई तक फैले चाय और कॉफी के बागानों में पाया जाता है। ऐसा लगता है, नागराज को भारी वर्षा और घने झाड़-झंखाड़ जैसी विशेष स्थितियों की जरूरत होती है, लेकिन फिर भी ये पहाड़ी क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं हैं। अंडमान क्षेत्र, उड़ीसा (भीतार कनीका) तथा बंगाल के सुंदरवन में नदी मुहानों पर फैले मैंग्रोव वृक्षों के दलदली क्षेत्रों में भी नागराज पाए जाते हैं।

स्वभाव : इस शानदार सांप की आक्रामक प्रकृति के बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है, लेकिन यह विवरण कल्पनात्मक अधिक है, तथ्यगत कम। दक्षिण भारत और अंडमान क्षेत्र में हमारी मुठभेड़ नागराज से हो चुकी है और हमने पाया कि यह एक डरपोक किस्म का सांप है जो आक्रमण करने से हिचकिचाता है तथा जो मौका मिलने पर बच निकलने से नहीं चूकता। अफ्रीका के दो प्रसिद्ध मैदानी सरीसृप विज्ञानियों, (हरपेटोलाजिस्ट) सी. पी.जे. इयोनिडेस तथा जे.एच.ई. लीके ने 15 मादा नागराजों को उस समय पकड़ा जब वे अपना घरौंदा बना रहे थे। उनके संबंध में वे लिखते हैं—पंद्रह मादा नागराजों को पकड़ने की प्रक्रिया के दौरान तब तक उन्होंने कोई आक्रामक तेवर नहीं दिखाया जब तक कि

सांप पकड़ने वाली विशेष हंडी से उन्हें पक्की तौर पर नहीं पकड़ लिया गया....इस प्रकार के अनुभव प्रचलित लोक-विश्वासों के बिल्कुल विपरीत हैं और यह पक्की तौर पर सिद्ध करते हैं कि सामान्य परिस्थितियों में अंडे सेने की चिंता में मगन मादा नागराज किसी भी प्रकार से आक्रमणकारी नहीं होती। यों नागराज को खेतों या मैदान में देखा जाए तो वह वास्तव में काफी डरावना लगता है और उस वक्त आदमी और सांप दोनों ही तेजी से पीछे हटने का प्रयास करते हैं। हां, यदि सांप को रोका या घायल किया जाता है तो वह मुंह खोलकर गहरी फुंकार के साथ आक्रमणकारी पर हमला कर सकता है। कुल मिलाकर नागराज एक विशेष चौकन्नेपन और बुद्धिमता से काम लेता है, जो अन्य सांपों में आमतौर पर देखने में नहीं आती।

बच्चे : भारत में पाए जाने वाले नागराज की प्रजनन प्रक्रियाओं के बारे में बहुत ही कम जानकारी उपलब्ध है। अंडमान क्षेत्र में एक मादा नागराज जून के महीने में बांस के जंगल में अपने 'घोंसले' में बीस अंडों के साथ देखी गई। मादा नागराज अपने शरीर की मदद से पत्तियों (अमूमन बांस की) को इकट्ठा करके लगभग 30 सें.मी. ऊंचा एक 'शंक्वाकार' घोंसला बनाती है। इस घोंसले की तलहटी में अंडे जनने के बाद मादा पत्तियों के ढेर के ऊपर कुंडली मार कर लगभग दो महीने या तब तक बैठी रहती है जब तक कि अंडों से बच्चे नहीं निकल आते। और इस दौरान वह लगभग निराहार ही रहती है। उसकी उपस्थिति मानीटर छिपकली और नेवले जैसे परभक्षियों को अंडों से परे रखती है। दुनिया में नागराज ही एक ऐसा सांप है जो घोंसला बनाता है, हालांकि अजगर और अन्य सांप भी अपने अंड-पुंजों के चारों ओर कुंडली मार सकते हैं और उन्हें से भी सकते हैं।

भोजन : नागराज मुख्यतः सांप ही खाते हैं और कभी कभी छिपकलियों का स्वाद भी चख लेते हैं। धामन और चैकर्ड सांप जैसे लंबे सांप इनका खास शिकार होते हैं। मद्रास के स्नेक पार्क में एक चार मीटर लंबे नर नागराज ने चार महीनों में डेढ़-डेढ़ मीटर लंबे पंद्रह धामन खा डाले। पाया गया कि एक धामन को मारने में नागराज को औसतन पंद्रह मिनट का समय लगा। संभवतः नागराज अपने शिकार का गला दबोच कर, उसका दम तो घोंटता ही है, साथ ही अपने दांतों के जरिए जहर देकर उसके शरीर को विषाक्त भी कर देता है।

महत्व : तेजी से समाप्त हो रहे जंगलों के कारण नागराज दुर्लभ होते जा रहे हैं और एक प्रकार से इनका भविष्य अनिश्चित है। अमूमन बागानों में मनुष्य से आमना-सामना होने के कारण ही ये ज्यादा मारे जाते हैं। सच तो यह है कि नागराज के अस्तित्व के प्रति खतरे को देखते हुए भारत में इन्हें संरक्षित जाति घोषित कर देना चाहिए।

विष : इसका विष नाग सांप के विष से कम घातक यानी कम जहरीला होता है। लेकिन इसकी विष ग्रंथियां इतनी बड़ी हैं कि 6 सी.सी. तक विष इकट्ठा रह सकता है, जो एक हाथी को मारने के लिए पर्याप्त है। इसकी विषरोधी औषध सिर्फ थाईलैंड में ही उपलब्ध है। इस सांप के काटे से आदमी के मरने का एकमात्र प्रामाणिक उदाहरण है मिस्टर

स्लेटर नामक एक अंग्रेज का, जिसने धूप खा रहे नाग के सिर पर पैर रखने की बेवकूफी की। इस पर नागराज ने तिलमिलाकर उसके घुटने के ऊपर काट लिया (जे बी एन एच एस, खंड 30, पृष्ठ 706)।

विषैला

27. हुक नासीय समुद्री सर्प (हुक-नोज्ड सी स्नेक)

एनहाइड्रीना शिस्तोसा (Enhydrina schistosa)

विशिष्ट लक्षण : मध्यम आकार का; असामान्य, फीके शल्क; शरीर चपटा तथा दुम चपटी और चप्पू के आकार की।

औसत लंबाई : 60 सें.मी.; जन्म के समय : 15 सें.मी.; अधिकतम : 1.5 मीटर।

विवरण : हुक नासीय समुद्री सर्प खासा छोटा, भारी बदन वाला सांप होता है। इसकी नाक कुछ कुछ चौकोर होती है तथा इसके ऊपर के जबड़े के अग्रभाग की नोक नीचे के जबड़े से एक हुक की तरह मिल जाती है। कुल मिलाकर इसका रंग भूरा होता है और इसकी पीठ पर गोलाकार काले धब्बे बने होते हैं। इसके शल्क दानेदार और खुरदरे होते हैं। शरीर के पिछले हिस्से और अधोभाग का रंग सफेद होता है। इसकी दुम चपटी और छोटे चप्पू के आकार की होती है।

वितरण : हुक नासीय सर्प भारत के समुद्र तटों तथा समुद्र तटीय द्वीपों में पाया जाता है। भारत के समुद्र तटीय पानी में पानी के सांपों की जो 20 से अधिक किस्में पाई जाती हैं, 'हुक नोज्ड' सांप उनमें सबसे आम है।

आवास : ऋतु के अनुसार यह गहरे समुद्र में पाया जाता है, लेकिन आमतौर पर यह तटीय क्षेत्र को अधिक पसंद करता है। यही कारण है कि उप-तटीय जल में मछली पकड़ने के लिए लगाए गए जाल में अक्सर पकड़ में आ जाता है।

स्वभाव : समुद्री सांपों के बारे में सामान्य जानकारी बहुत कम है। मद्रास के स्नेक पार्क में कई वंशों के समुद्री सांप पाले जा रहे हैं। ये सांप रात और दिन के अधिकांश समय में सक्रिय रहते हैं और विरले ही विश्राम करते हैं। जागे रहने पर ये लगातार तैरते रहते हैं। ये गजब के गोताखोर होते हैं और करीब 100 मीटर तक की गोताखोरी कर सकते हैं। इसके अलावा पानी के अंदर ये अधिकतम पांच घंटे तक रह सकते हैं। समुद्री सांपों में विशेष ग्रंथियां होती हैं जो पानी में नमक की अधिकता को खत्म कर देती हैं। मछेरों को इन सांपों से कोई डर नहीं लगता और वे इन्हें जाल में से दुम पकड़ कर उठा लेते हैं और वापस समुद्र में फेंक देते हैं। अन्य सभी समुद्री सांपों की तरह यह जाति भी बहुत कम काटती है तथा इसके काटे से मौत की घटनाएं भी बहुत कम हैं। भारत में अभी तक किसी ऐसी घटना की जानकारी नहीं है जब समुद्र में नहा रहे किसी व्यक्ति को समुद्री सांप द्वारा काटा गया हो।



हुक नासीय समुद्री सर्प

बच्चे : जलस्थली समुद्री सांप को छोड़कर, शेष सभी समुद्री सांप 2 से 5 तक जीवित शिशु सर्पो को जन्म देते हैं। (मद्रास के स्नेकपार्क में छोटे सिर वाले एक समुद्री सांप ने कुछ समय पहले अप्रैल में 4 जिंदा शिशु सर्पों को जन्म दिया था।)

भोजन : हुक नासीय समुद्री सर्प का मुख्य भोजन मछली है। इसका विष इतना तेज जहरीला होता है कि तेज गति वाले और हाथ से फिसल जाने वाले शिकार देखते ही देखते लकवे जैसी हालत में आ जाते हैं।

महत्व : हुक नासीय सर्प आम समुद्री सांप है और इसका दुरुपयोग नहीं हो रहा है। इसके विपरीत जलस्थली समुद्री सांप हांगकांग और सिंगापुर के निकट हजारों की संख्या में मारे जाते हैं—कुछ जातियां मांस के लिए, तो कुछ अपनी खाल के लिए।

टिप्पणी : जल-थल में विचरने वाले सांप अंडे जनते हैं। अंडे जनने के लिए हजारों की तादाद में ये सांप समुद्र तट के पास छोटे चट्टानी द्वीपों में आते हैं। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में यह सांप आम है तथा अपना घरौंदा बनाने और धूप सेंकने के लिए ये अक्सर तट पर आते रहते हैं।

विष : हुक नासीय समुद्री सर्प का विष नाग के विष से चार से आठ गुना तक अधिक जहरीला होता है। अन्य समुद्री सांपों का विष भी कम विषैला नहीं है। इस सांप की काटने में सामान्यतया प्रवृति न होने के साथ साथ इसकी विष संक्रमण पद्धति नाग और घोणस सांपों के मुकाबले उतनी सक्षम नहीं है। इस सांप के काटे के लिए विषरोधी औषध जापान और आस्ट्रेलिया में बनती है।

विषैला

28. रसल घोणस (रसैल्स वाइपर)

वाइपेरा रसैली (Vipera russellii)

विशिष्ट लक्षण : मध्यम से बड़े आकार का; मजबूत नौतलित शल्क, शरीर पर स्पष्ट, चमकदार शृंखला (चेन) का पैटर्न; बड़ा तिकोना सिर।

औसत लंबाई : 1 मीटर, जन्म के समय : 24 सें.मी.; अधिकतम : 1.8 मीटर (नर)।

विवरण : रसल घोणस भारी शरीर का, खुरदरे शल्क वाला सांप है। इसकी आंखें खड़ी पुतली वाली होती हैं तथा आमतौर पर इसके शरीर पर बहुत चमकदार पैटर्न बना होता है। इसके शरीर का रंग सामान्यतः भूरा या पीलापन लिए होता है, जिस पर गहरे गोल धब्बे बने होते हैं जिनके किनारे सफेद और काले होते हैं। क्षेत्रीय स्थितियों के अनुसार इनके अधोभाग के रंग में भिन्नता है। उदाहरणतया पश्चिमी क्षेत्र की प्रजाति का अधोभाग सफेद होता है, जबकि दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र की प्रजाति के अधोभाग पर चित्तियां भी होती हैं। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में पाई जाने वाली इस सांप की किस्म में तो चित्तियों की भरमार होती है। इस सांप में भी रंगों की भिन्नता आम पाई जाती है। छोटा व मोटा शरीर, तिकोना सिर/



रसल घोणस

व सामान्य आकार से इन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है। शृंखला पैटर्न इनकी सबसे अच्छी पहचान है। रसल घोणस शक्ल-सूरत में मोटे और अहानिकर माटी के सांप से मिलते-जुलते हैं, लेकिन माटी के सांप की दुम अपेक्षाकृत छोटी और भोथरी होती है तथा उनके शरीर पर बना पैटर्न भी इतना सुगठित नहीं होता। इसकी तुलना में रसल घोणस की पीठ पर बने सिलसिलेवार धब्बों से इनका अंतर सुस्पष्ट है। यह सांप भारत में पाए जाने वाले चार बड़े और खतरनाक सांपों में से एक है। लैवेंटाइन घोणस दूसरा बड़ा भारतीय घोणस है। भारी शरीर और भूरे रंग का यह सांप कश्मीर के कुछ हिस्सों में पाया जाता है और यह डेढ़ मीटर तक लंबा होता है।

वितरण : रसल घोणस समूचे भारत के मैदानी और पहाड़ी क्षेत्रों में 3,000 मीटर ऊंचाई तक पाया जाता है।

आवास : यह सांप पहाड़ी क्षेत्र के खुले मैदानों तथा कृषि भूमि से लगे मैदानी झाड़ भरे जंगलों में भी आराम से रह सकता है। बहुत गर्म मौसम में ये दीमकों के टीलों में और चूहों के बिलों में पाए जाते हैं, लेकिन चट्टानों की दरारें, मोटी पत्तियों के ढेर, घास, कांटेदार झाड़ियां व नागफनी के पौधे इनके अधिक संभावित ठिकाने होते हैं। इसके अलावा केवड़े की झाड़ियां और सैंचुरी के पौधे भी इनके प्रिय आवास होते हैं।

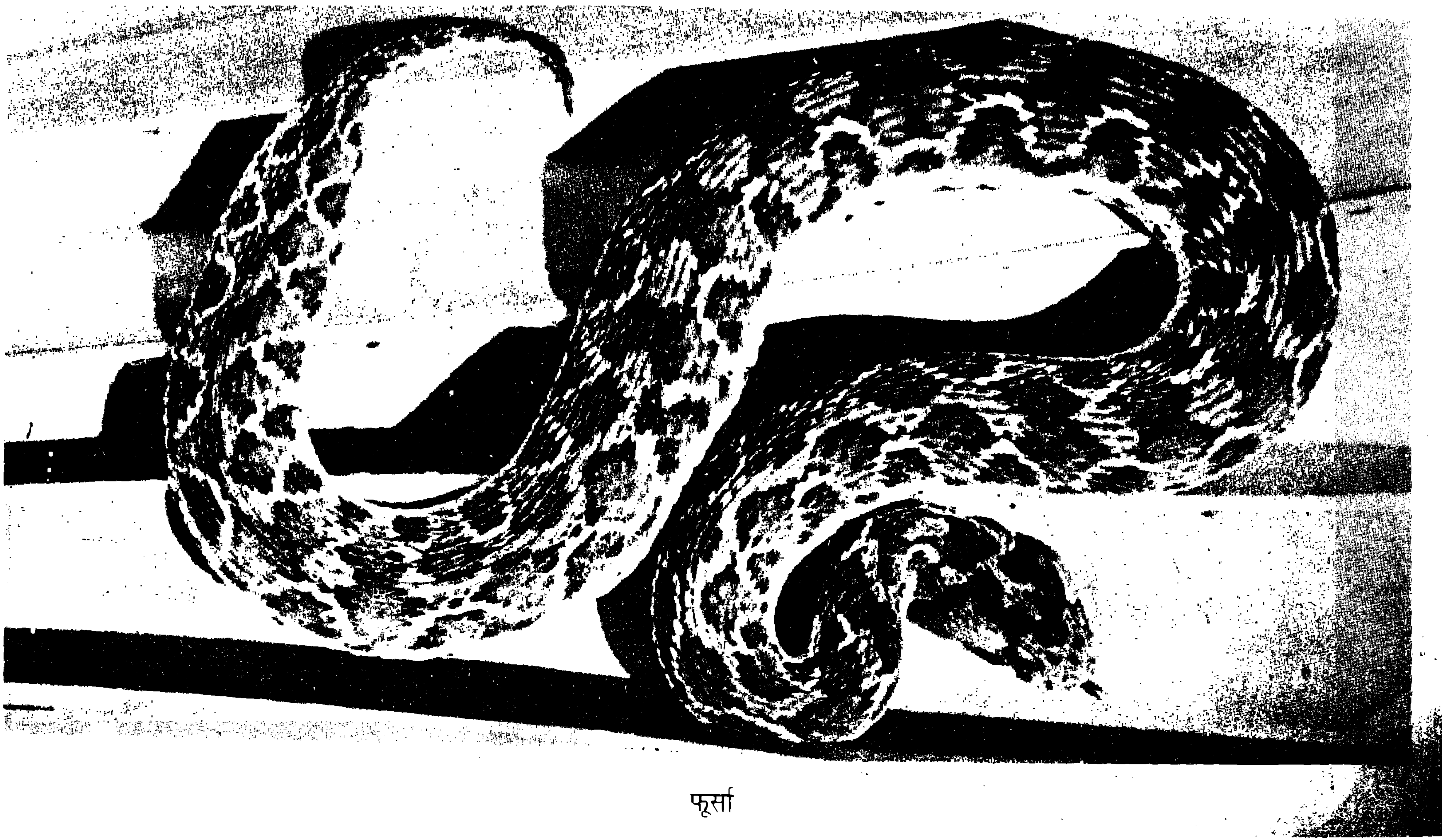
स्वभाव : रसल घोणस हालांकि देखने में बेहद सुस्त लगते हैं, लेकिन भड़काए जाने पर आकस्मिक संवेग से ये बेहद तेजी से भाग सकते हैं। ये जोर से फुंकारते हैं और आत्मरक्षा में काटते हैं। ये डरपोक किस्म के होते हैं और नाग तथा अन्य धारारेखित सांपों के मुकाबले (जो बच कर भाग निकलने में बड़े तेज होते हैं) आदमी के सामने पड़ने से कतराते हैं। इनके काटे की अधिकांश घटनाएं बागानों व कृषि भू-भागों में होती हैं जब वहां काम करने वाले मजदूर आदि असावधानीवश घनी झाड़ियों में हाथ डाल देते हैं या पैर रख देते हैं या फिर अंधेरे में किसी घोणस पर पैर रख बैठते हैं।

बच्चे : मादा रसल घोणस मुख्यतः मई और जुलाई के बीच 20 से 40 तक जीवित शिशु सर्पों को जन्म देती है। ये अपने माता-पिता की शानदार प्रतिकृति होते हैं।

भोजन : शिशु सर्प, बंदीगृह में, स्वजाति भक्षक होते हैं तथा दूसरे सांप भी खा जाते हैं। इसके अलावा छिपकलियों, मूषकों, स्थलीय केकड़ों और संभवतः बिच्छू व अन्य संधिपाद प्राणियों को भी ये अपना शिकार बनाते हैं। वयस्क पूरी तरह से कृंतक भक्षी लगते हैं, और संभवतः कभी कभी पक्षियों को भी अपना शिकार बना लेते हैं। दक्षिण भारत में इस सांप का मुख्य भोजन जरबिल (*टैटेरा इंडिका*) है।

महत्व : रसल घोणस दक्षिण भारत में चर्म उद्योग का मुख्य स्रोत है। वर्षभर इसके अत्यधिक शिकार के कारण कुछ क्षेत्रों से यह पूरी तरह लुप्त हो गया है।

विष : भारतीय सांपों में इसका काटना सबसे खतरनाक दंशों में माना जाता है, अतः इसके काटे का इलाज तुरंत और काफी बड़ी मात्रा में विषरोधी औषध से करना चाहिए। इसका बेहद विषैला विष खून को प्रभावित करता है तथा औषधीय प्रयोग में इसका प्रयोग रक्तस्राव रोकने तथा रुधिर विज्ञान संबंधी अध्ययन के लिए किया जाता है।



फूर्सा

29. फूर्सा (सॉ-स्केल्ड वाइपर)

एकिस कैरीनेटस (Echis carinatus)

विशिष्ट लक्षण : छोटा; मजबूत नौतलित शल्क; सिर गर्दन की अपेक्षा अधिक चौड़ा; हल्का रंग; सिर के शीर्ष पर क्रॉस का सुस्पष्ट निशान।

औसत लंबाई : दक्षिण भारत में : 30 सें.मी.; उत्तर भारत में : 50 सें.मी.; जन्म के समय : 8 सें.मी.; अधिकतम : 80 सें.मी.।

वितरण : ऊबड़-खाबड़ शल्क वाले इस सांप की आंखें बड़ी बड़ी, गर्दन की अपेक्षा अधिक चौड़ा सिर तथा शरीर भारी होता है। इसके शल्क बेहद नौतलित होते हैं। फूर्सा का रंग भूरा, हरापन लिए भूरा अथवा रेत जैसा होता है, तथा इसकी पीठ पर काले रंग का टेढ़ा-मेढ़ा पैटर्न होता है तथा इसके सिर पर क्रॉस अथवा भाले जैसा विशिष्ट चिह्न बना होता है। इसके सफेद अधोभाग पर भूरे रंग की चित्तियां होती हैं। दुम छोटी और ठूंठ जैसी होती है। भारत में जो चार बड़े और विषैले सांप पाए जाते हैं, फूर्सा उनमें सबसे छोटा हैं। दक्षिण भारत में यह छोटे आकार के कारण मनुष्य के लिए कम खतरनाक होता है। लेकिन उत्तर की किस्म का आकार खासा बड़ा होता है, जिस कारण चार बड़े सांपों की बिरादरी का यह सदस्य काफी खतरनाक होता है।

वितरण : यों तो फूर्सा समूचे भारत में पाया जाता है, लेकिन अधिकांशतः मैदानी इलाकों में इसका विस्तार ज्यादा है। उत्तर-पश्चिम भारत में 2,000 मीटर तक ऊंचाई के पर्वतीय क्षेत्रों में भी इसके पाए जाने की खबर है। कुछ क्षेत्रों में तो ये बहुतायत में मिलते हैं, उदाहरणतया महाराष्ट्र के रत्नगिरी जिले में तथा पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के कुछ भागों में।

आवास : यह सांप मैदानी इलाकों के खुश्क, रेतीले अथवा चट्टानी तराई के क्षेत्रों में रहना अधिक पसंद करता है। घने जंगलों और ऊंचे पहाड़ी क्षेत्रों में यह नहीं पाया जाता। आराम के लिए यह सांप चट्टानों के नीचे, पेड़ की छाल के पीछे, कांटेदार पौधों तथा अन्य खुश्क छिपे हुए स्थानों को पसंद करता है। लैटेराइट मिट्टी के मैदान, गोल पत्थरों के नीचे की जगह तथा छोटी पहाड़ियों पर हल्की कांटेदार झाड़ियों के जंगल और खुला और खुश्क मैदानी क्षेत्र फूर्सा के प्रिय बसेरे हैं।

स्वभाव : फूर्सा मुख्यतः निशाचर बिरादरी का सांप है। दिन के उजाले में यह तभी निकलता है जब इसे ठंडी, बरसाती रात झेलनी पड़ी हो और यह धूप सेंकना चाह रहा हो। दिन के समय यह चट्टानों के नीचे, झाड़ियों के बीच में अथवा बिलों में छिपा रहता है। वैसे बेहद उमसभरी अथवा बरसाती रातों में यह विशेष रूप से सक्रिय रहता है तथा अंधेरा हो जाने पर गर्म सड़कों अथवा ठोक कर बनाए गए रास्तों के कई कई चक्कर लगाता है। हिंदी और अंग्रेजी में इसके नाम, इसके आरे जैसे दांतेदार पार्श्व शल्कों के आधार पर रखे गए

हैं। जब यह अपना बदन रगड़ता है तो उससे शूं-शूं जैसी ध्वनि निकलती है, जो वैसी ही लगती है जैसी अन्य सांप जोर से सांस लेते हुए निकालते हैं।

बच्चे : मादा फूर्सा अप्रैल और अगस्त के दौरान (दक्षिण भारत में वर्ष में दो बार) 4 से 8 जीवित शिशुओं को जन्म देती है। अभी यह पता नहीं चल सका है कि भारत में सभी मादा फूर्सा हर वर्ष बच्चे जनती हैं या नहीं।

भोजन : मूषक, छिपकली, मेंढक, बिच्छू तथा अन्य संधिपाद जीव इसके मुख्य आहार हैं।

महत्व : अपने सभी क्षेत्रों में ये बहुतायत से पाए जाते हैं। कुछ क्षेत्रों में तो विषरोधी औषध बनाने के लिए इन्हें काफी संख्या में पकड़ा भी जाता है, उदाहरणतया—महाराष्ट्र के रत्नगिरी जिले का हाफकिन इंस्टीट्यूट।

विष : जिन क्षेत्रों में फूर्सा काफी आम हैं, वहां इसके काटे की घटनाएं सबसे ज्यादा होती हैं। सौभाग्यवश इसका दंश बहुत कम अवसरों पर ही घातक होता है, क्योंकि अधिकांशतः यह छोटे आकार का सांप है। उदाहरण के तौर पर रत्नगिरी जिले के एक डाक्टर ने पिछले दस वर्षों में इस सांप के दंश के 300 मरीजों का इलाज किया है। उस डाक्टर के अनुसार इनमें से सिर्फ दो व्यक्तियों की ही मृत्यु हुई। इसका विष प्रबल स्कंदक (खून जमाने वाला) होता है, जो शरीर के फाइब्रिन (थक्का बनाने वाले) को निष्प्रभावी करने के बाद गहन रक्तस्राव जैसा रोग लगा देता है जैसा कि हीमोफीलिया रोग में होता है। अगर इस विष की घातक मात्रा शरीर में चली जाती है तो रोगी की मौत कई दिन बाद होती है। इस लंबी अवधि के दौरान सामान्यतः काटे का इलाज संभव है, बशर्ते रोगी को विषरोधी औषध, रक्त संक्रामण, विटामिन 'के' तथा कैल्शियम कार्बोनेट आदि की चिकित्सा प्रदान की जाए।

विषैला

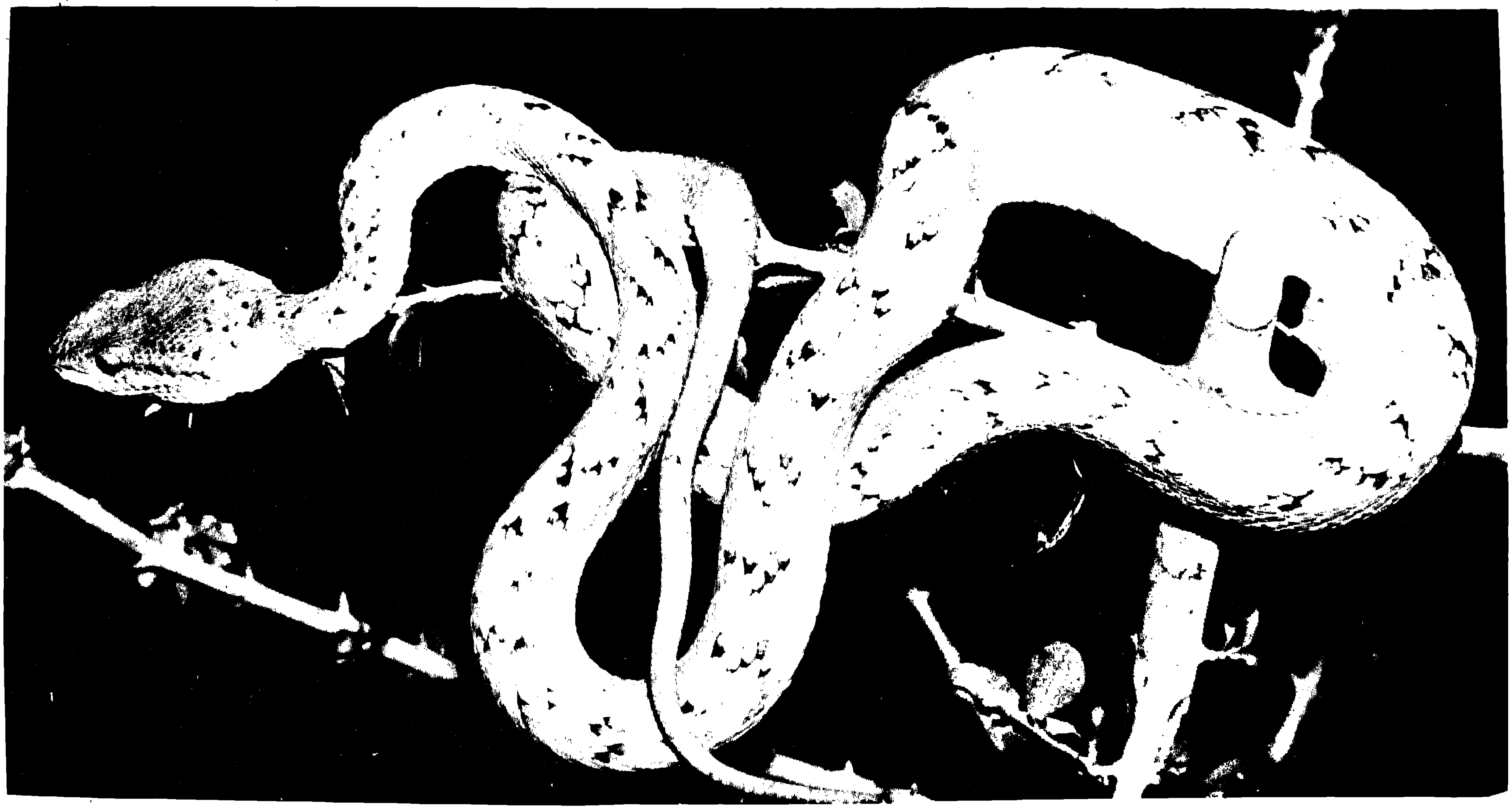
30. बांस हरा घोणस (बैंबू पिट वाइपर)

ट्राइमरेसुरस ग्रैमिनियस (Trimeresurus gramineus)

विशिष्ट लक्षण : छोटा; शल्क कुछ कुछ नौतलित; ऊपर से हरा; चौड़ा, तिकोना सिर; पतली गर्दन।

औसत लंबाई : 40 सें.मी.; जन्म के समय 16 सें.मी.; अधिकतम : 80 सें.मी.।

विवरण : बैंबू पिट वाइपर एक पीला हरा सांप है, जिसकी कमर पर बहुत हल्के काले रंग के धब्बों वाला पैटर्न होता है। इसका सिर चौड़ा और तिकोना होता है, जो पतली नाजुक गर्दन पर टिका होता है। इसके सिर के शल्क बहुत छोटे छोटे तथा पृष्ठ शल्क कुछ कुछ नौतलित होते हैं। यह भारत के हरे घोणस सांपों की जाति का सबसे आम पाया जाने वाला सांप है। चटख हरे रंग के ये घोणस सांप मुख्यतः वृक्षवासी होते हैं, जो अंगूर की बेलों,



बांस हरा घोणस

झाड़ियों और बांस के झाड़ों में रहते हैं। लेकिन इस जाति के बहुरंगीय सांप जैसे शैल हरे घोणस जमीन पर खड़ी चट्टानों के बीच, वृक्षों के मूल में तथा नदियों के किनारों पर रहना अधिक पसंद करते हैं। इसकी भिन्न भिन्न जातियां अलग अलग ऊंचाइयों, ताप व आर्द्रता को पसंद करती हैं।

वितरण : यदि कलकत्ता (पं.बंगाल) से बड़ौदा (गुजरात) तक रेखा खींची जाए तो उस रेखा से नीचे के पहाड़ी क्षेत्रों में यह सांप पाया जाता है। गोआ के दक्षिण में पश्चिमी घाट क्षेत्र में यह नहीं पाया जाता। इसकी एक अन्य जाति—हिमालयी हरा घोणस हिमालय क्षेत्र में 4,800 मीटर की ऊंचाई तक के पर्वतीय क्षेत्र में पाई जाती है। दुनिया में किसी सांप का इतनी ऊंचाई पर रहने का यह एक विश्व कीर्तिमान है। अंडमान-निकोबार तथा पश्चिमी घाट क्षेत्र में हरे घोणस की पांच-पांच तथा असम के पूर्व में लगते हिमालय क्षेत्र में इसकी आठ जातियां पाई जाती हैं।

आवास : नदियों के किनारे ठंडी घनी वनस्पति तथा बांस व अन्य घने जंगलों के बेल-बूटे व पत्ते इस सांप के पसंदीदा आवास स्थल हैं।

स्वभाव : बांस हरा घोणस जरा सुस्त किस्म का सांप है। यह रात को सक्रिय रहता है और दिन में खुले में सोता है। अपनी सुरक्षा के लिए ये अपने छद्मावरण पर निर्भर करते हैं—यानी इनकी त्वचा का रंग पौधों, पत्तियों के रंगों से मेल खाता है। आराम के समय अक्सर ये अपनी परिग्राही दुम से पेड़ की टहनी को पकड़ लेते हैं और इनका रंग पत्तियों के रंग में मिल जाता है, अतः इनका पता लगाना काफी कठिन हो जाता है। हालांकि अपनी आत्मरक्षा करने में यह सुस्त है, लेकिन इनमें तेजी से दंश करने की अद्भुत क्षमता होती है। और अगर इसे बहुत ज्यादा तंग किया जाए या घायल कर दिया जाए तो यह काटने से भी नहीं हिचकिचाता। डराने या घेर लिए जाने पर कभी कभी ये अपनी दुम भी कंपकंपाने लगते हैं।

बच्चे : मादा बांस हरा घोणस 4 या 5 जीवित शिशुओं को जन्म देती है। इन शिशुओं की दुम पर चमकदार निशान बने होते हैं, जिसका प्रयोग ये छोटे मेंढकों और छिपकलियों को आकर्षित करने के लिए करते हैं। इनकी यह उल्लेखनीय प्रवृति न्यू वर्ल्ड हरे घोणसों में भी पाई जाती है।

भोजन : छोटे बांस हरे घोणस मुख्यतः मेंढकों और छिपकलियों को ही खाते हैं, जबकि बड़े आकार वाले हरे घोणस कृंतकों का भोजन अधिक पसंद करते हैं पर कभी कभी ये मेंढक भी खा लेते हैं।

महत्व : भारत में पाये जाने वाले सभी हरे घोणस जंगल के सांप हैं और जैसे जैसे घने जंगल, विशेषकर सदा हरे-भरे रहने वाले बरसाती जंगल, कम होते जा रहे हैं वैसे वैसे इनकी बहुत-सी जातियों की आवादी भी कम होती जा रही है।

विष : सौभाग्यवश हरा घोणस काफी छोटा सांप है और इसका विष भी कम जहरीला होता है,अतः इसका दंश शायद ही कभी खतरनाक होता है। बागानों में काम करने वाले मजदूरों में इनके दंश की घटनाएं होती रहती हैं लेकिन मरीज एक या दो दिन के लिए ही बीमार सा रहता है।

सांपों के बारे में सामान्य तथ्य

भारत में किसी भी अन्य विषय की अपेक्षा सांपों के बारे में जो जानकारी है वह तथ्यपरक कम, काल्पनिक अधिक है। सांप के काटे से चमत्कारिक ढंग से बचने की कहानियां, बेतुके पौराणिक किस्म के किस्से और निपट मूर्खतापूर्ण काल्पनिक बातें बताई-सुनाई जाती हैं। लोगों का विश्वास है कि ऐसे भी सांप हैं जिनके दो सिर होते हैं—एक आगे और एक पीछे—और जो छह महीने एक दिशा में चलते हैं तो छह महीने उससे विपरीत दिशा में। लोगों की यह मान्यता भी है कि हर शुक्रवार को पूजा के समय नाग 'भक्तों' द्वारा अर्पित दूध पीने जरूर आयेगा। पढ़ने-सुनने में प्रचलित धारणाएं दिलचस्प और लुभावनी लगती हैं, लेकिन सांपों के बारे में जो सत्य है वह इससे कहीं ज्यादा रोमांचक है। उदाहरणतया क्या आप जानते हैं कि अजगर अपने एक बार के भोजन में अपनी एक दिन के लिए आवश्यक ऊर्जा से चार सौ गुना अधिक खा सकते हैं? अथवा सांप के विष की विभिन्न किस्में जीवन रक्षक औषधियों के बनाने में प्रयोग की जाती हैं?

सच तो यह है कि अधिकतर सांप अहानिकर होते हैं और उन्हें संभालने में कोई



मद्रास के स्नेक पार्क में एक नाग का विष निकाला जा रहा है

खतरा, कोई जोखिम नहीं है। लेकिन कुछ जातियां घातक रूप से विषैली होती हैं और इस संदर्भ में हमें यह तथ्य नहीं भूलना चाहिए कि आत्मरक्षा में काटना सभी सांपों का स्वाभाविक गुण है। सांपों की त्वचा खुश्क होती है, अक्सर उस पर परिष्कृत चमक रहती है, जो उन्हें तेजी से रेंगने या गतिमान बनाने में मदद करती है—इसमें उसके पैर न होने की कमी कहीं आड़े नहीं आती। कुछ सांप सिर्फ दिन में ही निकलते हैं, जबकि कुछ सिर्फ रात को ही सक्रिय होते हैं। वर्षा ऋतु में सभी सांप अधिक सक्रिय हो जाते हैं।

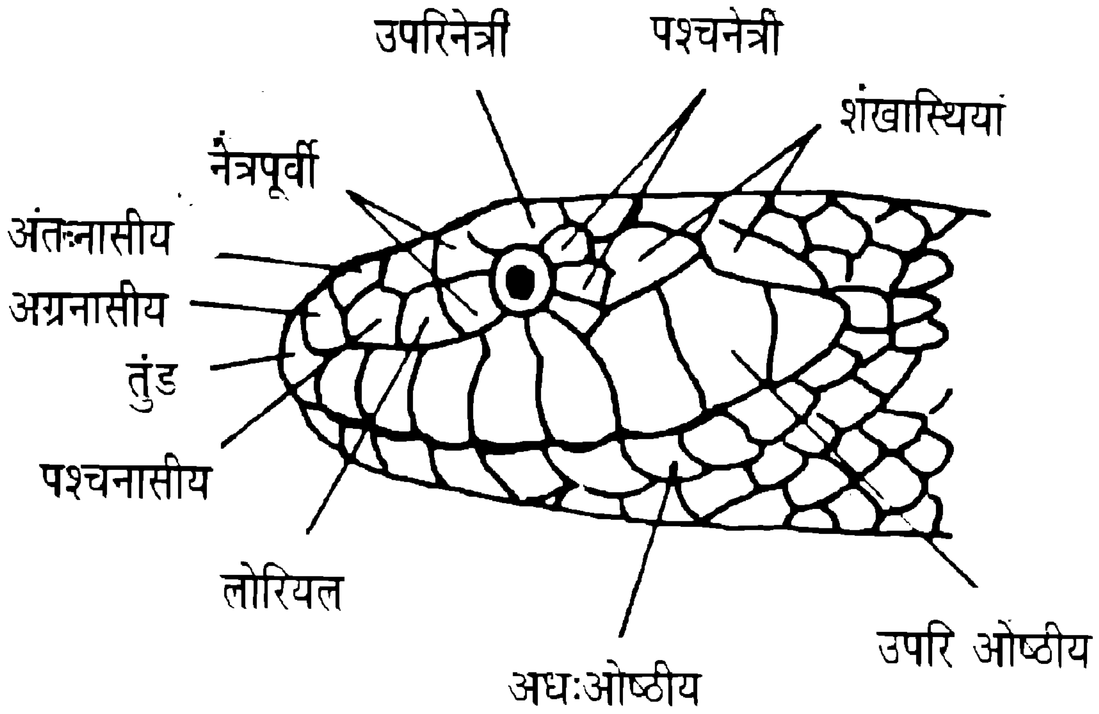
ज्ञानेन्द्रियां

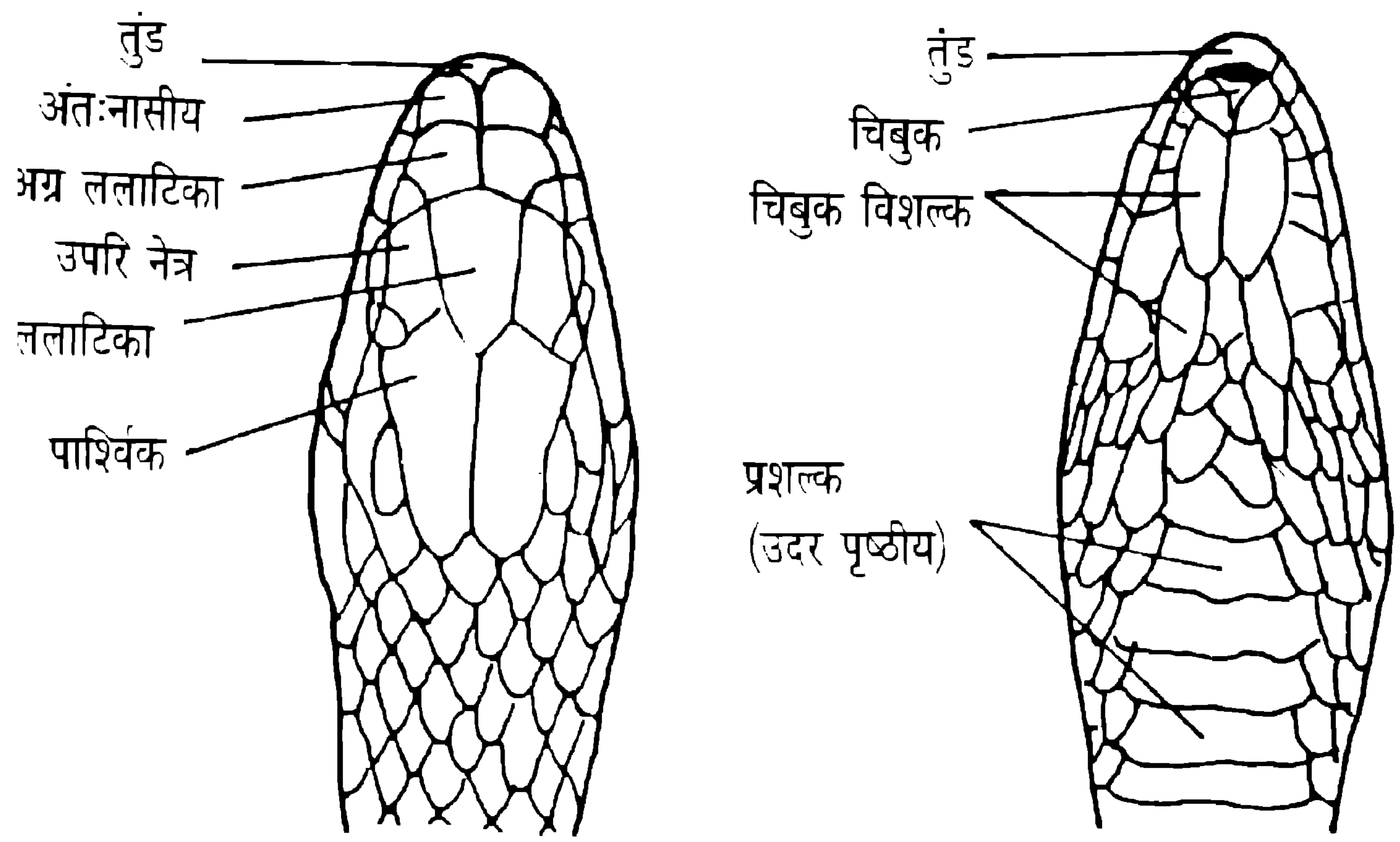
सांपों के बारे में लिखने वाले अनेक लेखकों का मत है, चूंकि सांपों के कर्णपटह (ईयरड्रम) और कान की जगह कोई छेद नहीं होते, अतः वे निश्चय ही बहरे होंगे। यह सच है कि सांप हवा में तैरती ध्वनि-तरंगों पर कोई प्रतिक्रिया जाहिर नहीं करते प्रतीत होते (हालांकि परीक्षणों से पता चलता है कि हवा में ध्वनि तरंगों की प्रतिक्रिया में इनका दिल तेजी से धड़कने लगता है) लेकिन यह स्पष्ट है कि जिस सतह पर वे पड़े हुए या आराम कर रहे होते हैं, उसके कंपनों के प्रति वे बड़े सचेत और संवेदी होते हैं। अमेरिका में किये गये परीक्षणों (पीटर हार्टलाइन 1971) से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि सांप हवा में मौजूद कुछ खास प्रकार की ध्वनि-तरंगों को अपने फेफड़ों के जरिए ग्रहण करते हैं।

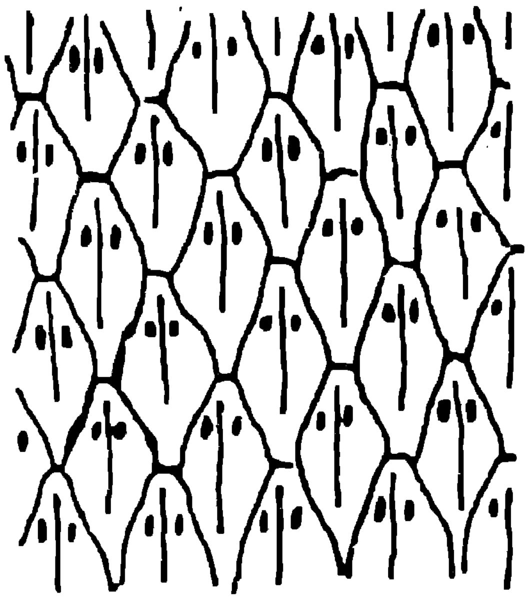
सांपों का अपना एक विशिष्ट दृष्टि तंत्र होता है, क्योंकि वे तुरंत ही या एकदम से किसी स्थिर वस्तु के खतरे का अहसास नहीं कर पाते। पुस्तक का लेखक खुद एक ऐसे अनुभव से गुजर चुका है जब सांप पेड़ों से उतर कर उसके ऊपर से रेंगते हुए चले गए, निश्चय ही उन्होंने उसे वहां की संपूर्ण दृश्यावली का ही एक अंग समझा होगा। ऐसा लगता है कि घोणस और अजगर जैसे सुस्त और भारी बदन वाले सांपों की जाति की अपेक्षा लाल धामन और धामन जैसे पतले शरीर और अधिक सक्रिय रहने वाले सांप बेहतर 'दृष्टि' वाले होते हैं।

अधिकांश सांपों की घ्राण इंद्रियां सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती हैं। इनकी घ्राण-क्षमता का मुख्य स्रोत है इनकी लंबी, पतली और लपलपाती जीभ जिस पर ये सर्वाधिक निर्भर करते हैं। ये अपनी जीभ से हवा में मौजूद गंध-कणों को ग्रहण करते हैं और फिर उन कणों को अपने मुख के ऊपरी तल पर स्थित 'जैकबसन अंगों' तक पहुंचाते हैं, जहां उन्हें उस गंध की पूरी जानकारी मिलती है। यही कारण है कि सांप अपनी दुशाखी जीभ को लगातार लपलपाते रहते हैं। इस प्रकार वे अपने शिकार व उचित जोड़ीदार का पता लगाने में सफल तो होते ही हैं, साथ ही नेवले और मनुष्य जैसे अपने 'दुश्मनों' की गंध लेकर उनसे सचेत और परे रहते हैं।

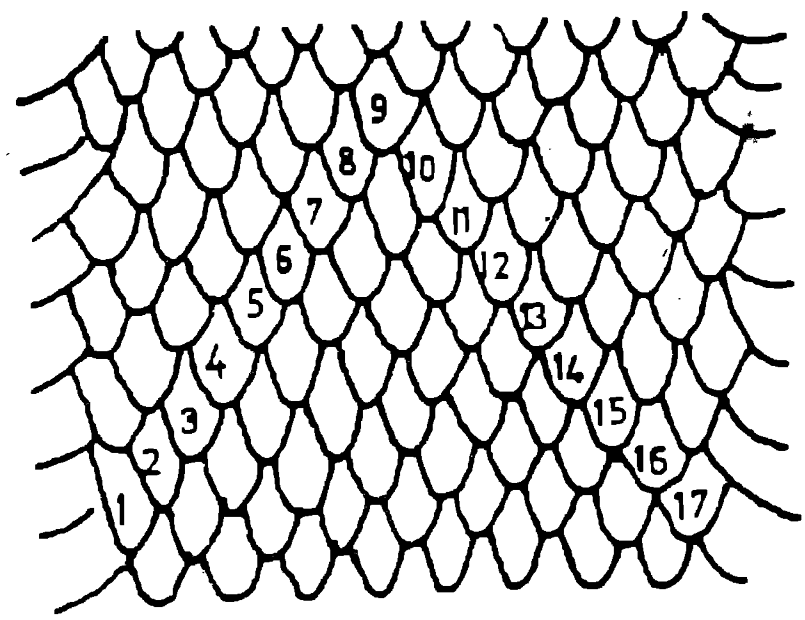
सांप दर्द का अनुभव करते हैं तथा वे आर्द्रता व तापमान में परिवर्तन के प्रति काफी संवेदी होते हैं और इस बदलाव से उन्हें परेशानी हो सकती है। सच तो यह है कि सभी बाह्य-ऊष्मी (एक्टोथेर्मिक) प्राणियों की तरह सांप भी अनुकूलतम ताप वाले स्थलों की तलाश में रहता है। पूरी तरह सही श्रेणी का ताप मिलने पर ही सांप भोजन करते हैं, जोड़ा बनाते


उपरिनेत्री
पश्चनेत्री
शंखास्थियां
नेत्रपूर्वी
अंतःनासीय
अग्रनासीय
तुंड
पश्चनासीय
लोरियल
अधःओष्ठीय
उपरि ओष्ठीय

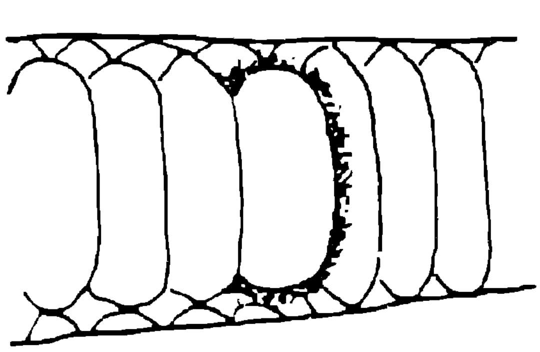

तुंड
अंतःनासीय
अग्र ललाटिका
उपरि नेत्र
ललाटिका
पार्श्विक
तुंड
चिबुक
चिबुक विशल्क
प्रशल्क
(उदर पृष्ठीय)



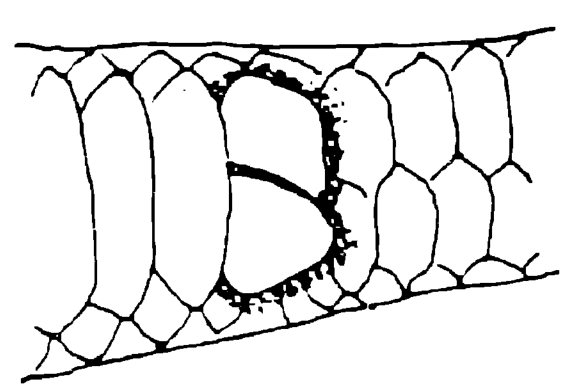
अग्र गर्त के साथ नौतलित शल्क



पृष्ठ शल्क कतारों को गिनने की विधि

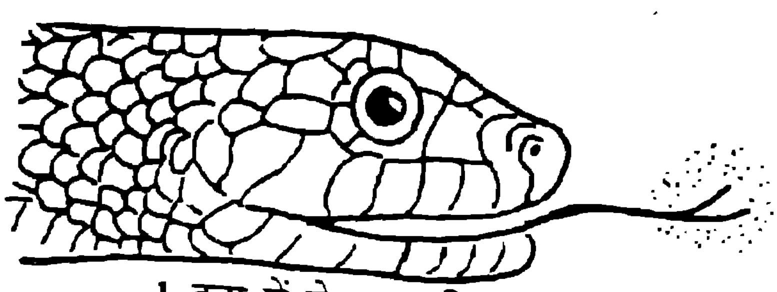


एकल गुदा

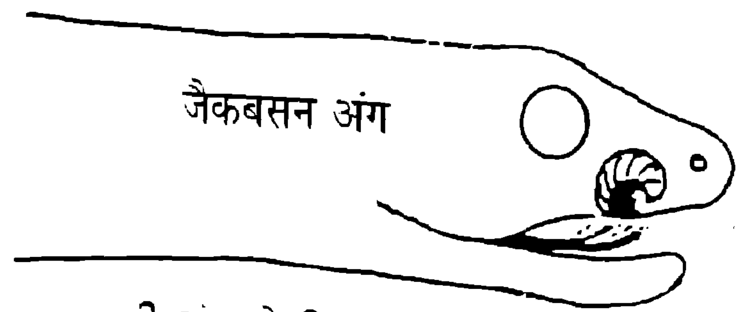


विभाजित गुदा

शल्कन (नाम-पद्धति)



1. हवा में से रासायनिक कण पकड़ने के लिए बाहर निकली हुई जीभ



2. गंध के विश्लेषण के लिए जीभ को जैकबसन अंग के नीचे के बिंदु तक अंदर खींचा जाता है।

हैं और तभी बच्चे जनते हैं। बहुत अधिक ठंड होने पर सांपों की उपापचयी दर धीमी पड़ जाती है और ये इतने सुस्त पड़ जाते हैं कि न तो अपने शिकार का पीछा कर पाते हैं और न ही अपने शत्रुओं से बच पाते हैं। मौसम बेहद गर्म होता है,तब ये निष्क्रिय हो जाते हैं तथा निर्जलित होकर मर जाते हैं।

भोजन

सांप अपने शरीर में वसा का संग्रह करता है और कुछ सांप तो कई कई महीने बिना खाए जिंदा रह सकते हैं। बहरहाल आमतौर पर सांप कुछ कुछ दिनों के बाद एक बार भोजन करते हैं। जमीन पर रहने वाले अधिकांश बड़े सांप मूषकों-चूहों और मेंढकों को खाते हैं, जल-सर्प यानी पानी में रहने वाले सांप मछलियों और ईल (सांपनुमा मछली) का भोजन करते हैं। करैत और नागराज मुख्यतः सर्पभक्षी सांप हैं। छोटे किस्म के सांप तथा कुछ बड़ी प्रजातियों के शिशु सर्प छिपकलियों, कीड़े-मकोड़ों तथा उनके लार्वाओं, बिच्छुओं और केंचुओं को खाते हैं। कौन-सा सांप किस प्रकार की छिपकलियों अथवा बिच्छुओं, कीटों या कृमियों आदि को रुचि से खाता है, इसकी हमें बहुत ही कम जानकारी है।

भोजन प्राप्त करने के तरीके विभिन्न जातियों में भिन्न भिन्न हैं। नाग और घोणस जैसे जहरीले सांप एक ऐसी अद्भुत इंजेक्शन प्रणाली से लैस हैं, जो उन्हें अपना शिकार पकड़ने और मारने में सहायक होती है। धामन, पानी का सांप तथा स्ट्राइप्ड कीलबैक जैसे अहानिकर सांप सीधे अपने शिकार को पकड़ते और उन्हें जिंदा ही निगलते हैं। लेकिन, सच तो यह है कि बहुत से अहानिकर सांप विषधारी होते हैं, और यह विष इतना जहरीला तो होता ही है कि कीटों, मछलियों, मेंढकों तथा छिपकलियों आदि को जड़ कर देता है।



अन्य सांपों की भांति अजगर भी कृंतक भक्षी है। यहां एक शिशु अजगर घूस को निगल रहा है



नागराज केवल सांपों को ही खाता है। यहां एक नाग अहानिकर धामन को लगभग निगलने वाला है

अजगर, माटी का सांप तथा रेसर जैसे विषहीन सांप घात लगाकर अपने शिकार को अचानक ही पकड़ते हैं और अपनी शक्तिशाली जकड़ से उनका दम घोंट देते हैं। बंदी बनाए जाने पर सांप कभी कभी मरे हुए शिकार को ग्रहण नहीं करते। हो सकता है तापमान, आर्द्रता तथा प्रकाश की तरह शिकार का पीछा करने और उसे पकड़ने की प्रक्रिया भी सांपों के भोजन की कड़ी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो। इसके विपरीत कभी कभी सांप सड़ा-गला मांस खाते हुए भी देखे गए हैं। कभी कभी काफी पहले मरे हुए दुर्गंधयुक्त प्राणियों को, यहां तक कि सड़क के किनारे पड़े मरे हुए जानवरों के टुकड़े भी खींच कर ले जाते देखे गए हैं।

सांप को अपना शिकार समूचा ही निगलना होता है। अपने सिर के व्यास से दो-तीन गुना बड़े मेंढक को मात्र चंद मिनटों में निगलते देखना अपने आप में एक आश्चर्य है। दरअसल सांप के दांत एक कतार में और अंदर की तरफ मुड़े हुए होते हैं और इनका काम बहुत कुछ वैसा ही है, जैसा कि सिलाई मशीन के दांतों का यानी जैसे उन दांतों का काम कपड़े को खिसकाते रहना है, वैसे ही सांप के दांतों का काम पकड़े गए शिकार को अंदर खिसकाना है। सांप के जबड़े, त्वचा और आंतों में जबरदस्त फैलाव की क्षमता होती है। लेकिन फिर भी अजगर द्वारा तेंदुए या वयस्क हिरन को निगल लेने अथवा नाग द्वारा बड़े पन्दिकोकु (बैंडीकूट) को निगल लेने जैसी खबरें आमतौर पर बढ़ा-चढ़ा कर कही गई बातें ही होती हैं।

समागम, जन्म तथा बढ़त

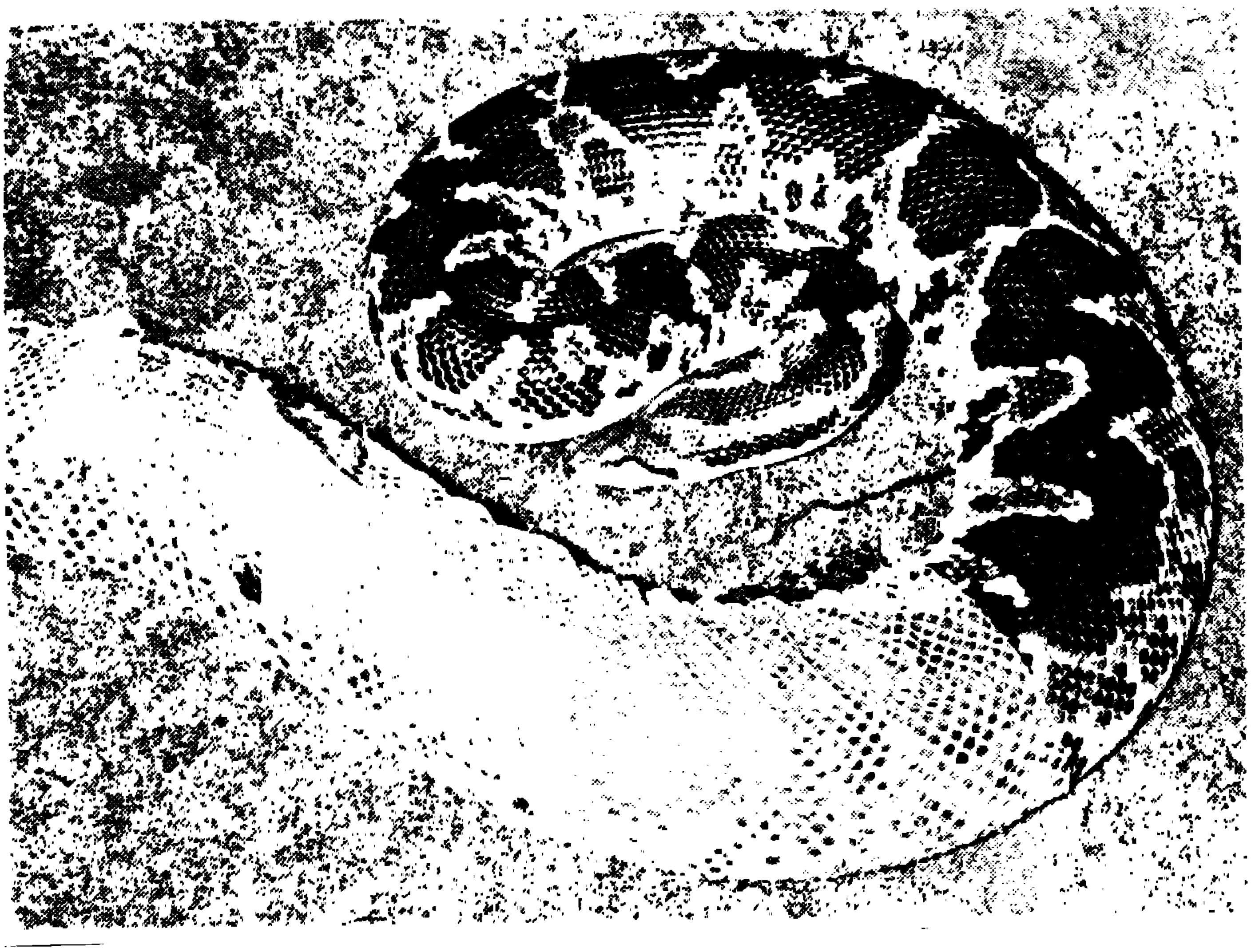
अधिकांश सांप वर्ष में एक बार ही समागम करते हैं, वो भी हमेशा अपनी ही किस्म के सांपों से। हरेक जाति की समागम ऋतु अलग अलग होती है। दक्षिण क्षेत्र में अधिकांश जातियों की दो समागम ऋतुएं होती हैं। कुछ जातियां, जिनकी दो प्रजनन ऋतुएं हैं, उनमें संखारा, अलंकृत सर्प, हुर्वा और फूर्सा शामिल हैं।

सांपों में लैंगिक जनन होता है। नर सांप की दुम में युग्मित तथा बहिर्वलित हो सकने वाला अर्धशिश्न होता है। सांप अपने जोड़ीदार को गंध के सहारे ढूंढ़ निकालता है। उल्लेखनीय है कि नर और मादा—दोनों ही के दुम के मूल में गुदाद्वार पर कस्तूरी ग्रंथियां होती हैं—मादा सांप की ग्रंथियां अपेक्षाकृत बड़ी होती हैं। हर जाति की अपनी भिन्न पहचान वाली गंध होती है, कुछ की गंध बेहद अप्रिय होती है, जबकि कुछ की प्रीतिकर। संभवतः प्रजननकाल के दौरान प्रत्येक सांप भिन्न प्रकार की अपनी विशिष्ट गंध छोड़ता है। करैत सांप विशेष रूप से दूसरे करैतों द्वारा छोड़ी गई गंध के प्रति आकर्षित भी होते हैं और अनुक्रिया भी करते हैं।

सांपों के समागम की क्रिया भिन्न भिन्न भी है और दिलचस्प भी। उदाहरणतया, नर धामन अपनी भावी संगिनी के शरीर के बीच के भाग और गर्दन को अपने जबड़ों से पकड़ता है और फिर उसके पूरे शरीर पर लयबद्ध अठखेलियां करते हुए उसमें कामोद्दीपन करता है। स्नेक पार्क में धामन अक्सर पेड़ों पर समागम करते हैं, जबकि हुर्वा जमीन पर



पानी का सांप जनवरी माह में 35 अंडे देते हुए



सांप अपनी केंचुल वर्ष में कई बार उतारते हैं। यह विशेष प्रक्रिया सांपों के बढ़ने का तरीका है

और अक्सर खुले में ही अपनी प्रणय-लीला रचाता है।

प्रणय क्रीड़ा के दौरान मादा सांप यानी नागिन सामान्यतः निश्चल रहती है, जबकि उससे छोटे आकार का नर सांप उसकी पीठ पर रेंगता है और इस बीच यदि मादा रेंगने भी लगती है तो भी नर सांप अपनी स्थिति उस समय तक बनाए रखने का प्रयत्न करता है जब तक कि वह अपने अर्धशिश्न का एक पार्श्व नागिन में प्रवेश नहीं करा लेता। सांपों की कुछ जातियों में दो या दो से अधिक सांपों का जो प्रचलित 'खड़ा नृत्य' है, वह वास्तव में दो नर सांपों का 'औपचारिक युद्ध' होता है, न कि समागम की क्रिया, जैसा कि अक्सर प्रचारित किया जाता है। हालांकि सांपों की इस क्रिया की कोई भी ठीक से व्याख्या नहीं कर पाया है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि यह 'औपचारिक युद्ध' सांपों का अपने क्षेत्रीय विवाद का परिणाम हो सकता है। अनेक किस्म के सांपों में और कुछ 'मानिटर' छिपकलियों, में भी ऐसे नृत्य देखे गए हैं। बंदी बनाकर रखे गए करैत सांपों में ऐसे नृत्य औपचारिक न रहकर स्वजाति भक्षण में बदल जाते हैं यानी छोटा सांप, 'विजेता' बड़े सांप का भोजन बन जाता है।

मीठे जल में रहने वाले सांप, नाग अजगर तथा धामन अन्य जातियों की ही तरह अंडे जनते हैं; जबकि हरा सांप, घोणस, समुद्री सांप, मिट्टी का सांप तथा अन्य जातियां जीवित शिशु सर्प जनती हैं—सच तो यह है कि इन जातियों में अंडे को सेने की प्रक्रिया 'गर्भ' में ही संपन्न हो जाती है। जोड़ा बनाने और अंडे जनने में लगभग 60 से 80 दिनों का अंतर होता है, और औसतन इतना ही समय अधिकांश सरीसृप के अंडों से बच्चे निकलने में लगता है (हालांकि कुछ में सौ से भी ज्यादा दिन का समय लगता है)। मादा सांप उपयुक्त आश्रय में ही अपने अंडे जनती है—जैसे ही चूहों के बिलों, दीमक के टीलों, खोखले पेड़ों, पेड़ों की छालों या सड़ती पत्तियों के बीच। अंडे जनने के बाद मादा उन्हें छोड़कर चली जाती है। नाग, पानी का सांप, करैत, अजगर, नागराज तथा संभवतः अन्य प्रकार के सांप भी कम से कम अंडे से बच्चों के निकलने तक या कुछ समय तक अंडों के पास ही रहते हैं। मादा नाग तो अंडे जनने के लिए पत्तियों का घोंसला तक बना डालती है, जिसके फर्श पर वह अपने अंडे जनती है। मादा अजगर अंडे सेने के दौरान अपनी मांसपेशियों को ऐंठ कर अपने शरीर का तापमान बढ़ा लेती है।

चर्मिल (चमड़े जैसे आवरण) वाले अंडों से बाहर निकलने के लिए शिशु सर्प अपने 'अंड दंत' का प्रयोग करते हैं। यह दांत शिशु सर्पों की नाक की नोक पर लगा होता है, जिसकी मदद से ये अंडे का आवरण 'काटते' या 'चीरते' हैं। दिलचस्प बात यह है कि कुछ दिनों बाद यह दांत खुद-ब-खुद गायब हो जाता है। अंडों से शिशु सर्पों के बाहर निकल आने पर आमतौर पर मादा उन्हें छोड़ जाती है। अंडे की जर्दी अवशोषित न होने के कारण नन्हें शिशु सर्पों के शरीर मोटे मोटे से दिखते हैं। ये आमतौर पर जन्म के एक सप्ताह तक झुंड में ही रहते हैं, इसके बाद अलग अलग हो जाते हैं। बहुत से नवजात शिशु सर्प बड़े आकार के केंचुए से ज्यादा बड़े नहीं होते और पक्षियों, नेवलों, मानिटर छिपकलियों तथा यहां तक कि मेंढक जैसे परभक्षियों का शिकार बन जाते हैं। सच तो यह है कि एक

नवजात शिशु सर्प के जीवित बने रहने के अवसर बहुत कम होते हैं, अतः जन्म के बाद कुछ सप्ताह के 'नाजुक समय' में ये अगर बच पाते हैं तो मात्र अपने भाग्य तथा अपने को छिपा रखने की सहज प्रवृति, छद्मावरण, खतरनाक जातियों के अनुहरण यानी उन जैसा दिखने का स्वांग तथा शत्रुओं को विशुद्ध चकमा देने के बल पर। यदि इन्हें पर्याप्त भोजन मिलता रहे (और आमतौर पर 'पैदा किया है तो खाना भी मिलेगा'की तर्ज पर प्रकृति इन्हें शिशु मेंढकों आदि के रूप में पर्याप्त आहार प्रदान करती है) तो ये शिशु सर्प बड़ी तेजी से बड़े होते हैं। यानी मात्र दो-तीन महीनों में ही इनका आकार दुगना हो जाता है। उदाहरण के तौर पर एक पकड़ा गया अजगर दो साल से कुछ अधिक समय में एक मीटर से बढ़कर साढ़े तीन मीटर लंबा हो गया। किशोर वय के सांप आमतौर पर अपने माता-पिता की प्रतिकृति ही लगते हैं, लेकिन बहुत से भिन्न भी लग सकते हैं—जिससे सांपों की पहचान करने वालों को अक्सर भ्रम हो जाता है। इस प्रकार के अपवादों का विवरण इस पुस्तक में दिए गए 30 विभिन्न जातियों के विवरण के साथ दिया जा चुका है।

शिशु सर्प का आकार प्रत्येक महीने-दो महीने में इतना बढ़ जाता है कि उसका अपने जन्म की खाल में रहना असंभव हो जाता है, अतः उसे इससे बाहर निकलना या इसे त्यागना पड़ता है। यह वही प्रक्रिया है जिसे हम 'केंचुल उतारना' कहते हैं। खाल अथवा त्वचा विसर्जन की इस प्रक्रिया से हफ्ता-दो हफ्ता पहले संबंधित सांप निर्जीव-सा, बेहद सुस्त पड़ जाता है तथा इसकी आंखों पर बदली-सी छा जाती है या उसकी रंगत नीली जैसी हो जाती है। त्वचा-विसर्जन से कुछ ही पहले उसकी आंखें साफ हो जाती हैं तथा शिशु सर्प पुरानी त्वचा को उतारने या विसर्जित करने का जी-जान से ऐसे प्रयत्न करता है मानों उसे बहुत परेशानी हो रही हो। जैसे ही सांप की त्वचा की बाहरी परत उतरती है, उसकी त्वचा नयी और चमकदार हो जाती है। त्वचा-विसर्जन के साथ साथ सांप अपनी आंखों की 'टोपी' भी उतार फेंकते हैं, जो चमड़ी के साथ बाहर आ जाती है। यही नहीं, कुछ समय बाद ये दांत, विषदंत, यहां तक कि जीभ का अग्रभाग (ताकि जीभ हमेशा संवेदी बनी रहे) तक विसर्जित कर डालते हैं।

यह कोई नहीं जानता कि जंगल में अथवा मुक्त रहने वाले सांपों की जीवनावधि कितनी होती है। सांपों की विभिन्न जातियों से संबंधित और भी बहुत-सी ऐसी बातें हैं जो हम नहीं जानते। नीचे तालिका में अमेरिका के चिड़ियाघरों व कुछ महानुभावों द्वारा भारतीय सांपों की आयु के बारे में कुछ दिलचस्प तथ्य प्रस्तुत हैं :

सांप	*वर्ष*	*माह*	*व्यक्ति अथवा संस्था*
1. भारतीय अजगर	34	2	यूजेनिया एस. शोरॉक
2. माटी का सांप	13	10	फिल्डेल्फिया जू
3. भारतीय धामन	10	7	स्टेटन आइलैंड जू
4. गाओमन	11	6	सेंट लुईस जू
5. भारतीय नाग	21	6	लिंकन पार्क जू
6. फूर्सा	10	3	सान डिएगो जू

प्रचलन (चाल-ढाल)

अधिकांश सांप चढ़ सकते हैं तथा लगभग सभी तैर सकते हैं। एक सांप तो ऐसा है जो हवा में उड़ और विसर्पण कर सकता है (देखिए : उड़न सर्प)। लाल धामन जैसे पेड़ों पर रहने वाले बहुत से सांपों में पेड़ों पर चढ़ने की विशेष क्षमता होती है—ऐसे सांपों के अधोभाग यानी पेट पर खांचेदार शल्क होते हैं तथा उनका शरीर पतला, लेकिन मजबूत होता है। समुद्री सांप अपनी चप्पूनुमा दुम के प्रयोग से अपने को आगे धकेलते हैं तथा ये अपनी सांस पांच घंटे तक रोके रख सकते हैं। इसी प्रकार दोमुंहा सांप तथा शील्डटेल्स जैसे जमीन पर रहने वाले सांपों के सिर की बनावट विशेष रूप से मजबूत और नुकीली या बेलचे के आकार की होती है जो उनके मिट्टी खोदने या बिल बनाने में काफी सहायक होती है।

जैवयांत्रिकी विशेषज्ञ प्रो. कार्ल गैन्स सांपों के चलने के विषय में लिखते हैं—'सांप चार भिन्न तरीकों में से एक से चलते हैं'—यह अंतर इस पर निर्भर करता है कि वे आसपास के वातावरण और अपने शरीर के बीच घर्षण का कैसा प्रयोग करते हैं। सभी सांप पहले दो तरीके इस्तेमाल कर सकते हैं, लेकिन बहुत कम सांप ऐसे हैं जो आखिर के दो तरीके इस्तेमाल करते हैं। और अगर ये तरीके इस्तेमाल भी होते हैं तो इनमें शरीर के अगले और पिछले भाग के अनुरूप अंतर आ जाता है तथा जैसे जैसे सांप की उम्र बढ़ती जाती है (और वे भारी होते जाते हैं) या जब वे उत्तेजित होते हैं तो इन तरीकों में परिवर्तन आ जाता है।

सांपों के चलने का पहला तरीका है तरंगित या 'सर्पिल गति'। इसमें सांप अपने शरीर के अंग्रेजी के 'एस' अक्षर जैसे कई मोड़ बना लेता है और फिर पाशों को जमीन की सतह पर उभरे हुए भागों जैसे कि घास के तनों, कंकड़-पत्थरों तथा छोटी चट्टानों अथवा पेड़ की टहनियों, शाखाओं व छाल के टुकड़ों पर दाएं-बाएं और पीछे की ओर धकेलता हुआ आगे बढ़ता है। सांप जब गतिमान पाशों की बगलों द्वारा अपने शरीर को आगे की ओर धकेलता है तब सरकते अधर की सतह के माध्यम से उसके शरीर का वजन स्थानांतरित हो जाता है। सांप को चलते हुए गौर से देखें तो पाएंगे कि इस प्रक्रिया से उत्पन्न तरंगें उसके सिर से शुरू होकर दुम तक चली जाती हैं—इसी प्रकार का शरीर संचालन तैरने के दौरान अधिकांश मछलियों में भी होता है। सांपों के चलने का एक तरीका कन्सर्टिना का भी है—इस तरीके में उनके शरीर का एक हिस्सा जमीन पर स्थिर रहता है जबकि बाकी हिस्सा बाहर की ओर खिंचते हुए नए स्थिर स्थल पर पहुंच जाता है, जहां सांप अपने सिर और गर्दन का फंदा सा बनाकर अपने शेष शरीर यानी धड़ को आगे खींचता है। यह प्रक्रिया ठीक वैसी ही है जैसे कोई वादक अपने हाथ की अंगुलियों से वाद्ययंत्र के तारों में स्पंदन पैदा करता है। इस प्रक्रिया का प्रयोग करते हुए पेड़ पर रहने वाले सांप पहले एक टहनी को संकुचित करते हैं फिर दूसरी जगह पहुंचकर वे अपने शरीर को सिकोड़ने के बाद बाकी के भाग को ढीली रस्सी की तरह ऊपर खींच लेते हैं।

अजगरों व भारी शरीर के कुछ दूसरे घोणस सांप सरल रेखीय गति (रेक्टीलाइनियर

मोशन) से चलते हैं। इस सरल रेखीय प्रणाली में सांप अपने पेट की सतह की पकड़ से शेष त्वचा को ढीला कर लेते हैं और लंबी मांसपेशियां शरीर को आगे-पीछे खींचती हैं। यह प्रक्रिया कुछ ऐसी ही है जैसे ढीला खोल नीचे स्थित कशेरुकों (वर्टिब्री), मांसपेशियों तथा आंतरिक अंगों पर चढ़ता-उतरता है। इस प्रक्रिया में सांप अपनी त्वचा के एक हिस्से को शरीर पर काफी आगे तक खींच कर उसे जमीन के सहारे धकेलते हैं, जिससे जमीन से उनका संपर्क मजबूत हो जाता है। अब जमीन से छूती हुई त्वचा को पसलियों से जोड़ने वाली मांसपेशियां संकुचित होती हुई सांप के शरीर को आगे खींचती हैं। और ये मांसपेशियां जब एक बार न्यूनतम संकुचन प्राप्त कर लेती हैं तो मांसपेशियों का एक दूसरा सेट जमीन से चिपकी या सटी त्वचा को आगे खींच लेता है जिससे सांप और आगे हो जाता है। इस संकुचन चक्र को बार बार दोहराने से सांप के पेट की त्वचा इल्ली (केटरपिलर) की तरह ऊपर-नीचे खिसकने लगती है, जिससे सांप सीधी लाइन में आगे बढ़ता है। यही कारण है कि सांपों के चलने की इस पद्धति का नाम सरल रेखीय गति ही पड़ा। सांपों के चलने की अंतिम और सबसे दर्शनीय पद्धति है—पार्श्वकुंडलन (साइडवाइंडिंग)। चलने की यह पद्धति सामान्यतः रेगिस्तान में पाए जाने वाले कुछ किस्म के सांपों में ही दिखाई देती है, हालांकि कुछ बेहद उत्तेजित सांप भी इस तरह चलते देखे गए हैं—लेकिन कुछ अंतर के साथ। इस शैली में सांप अपने शरीर के एक हिस्से को हवा में उठाते हुए एक स्थिति से दूसरी स्थिति में लाता है—और इस प्रकार वह बंधे-बंधाए रास्ते पर लुढ़कता हुआ चलता है। सांपों के चलने की यह पद्धति मुख्यतः ऐसे परिवर्तनशील रेत पर उन्हें तेज और लगातार चलने में मदद करती है जहां अगल-बगल में उभरे हुए ऐसे सहारे उपलब्ध नहीं होते जिनके विरुद्ध वो अपने को धकिया सकें और जहां सतह इतनी गर्म होती है कि शरीर को उससे सटाना अवांछनीय होता है।

शत्रु तथा बचाव

सांपों के अंडे व बच्चे परभक्षियों के नियमित समूहों द्वारा खाए जाते हैं। इनमें चींटियों और भृंगों (भौंरे आदि) से लेकर भोजन की तलाश में घूमते चूहे, नेवले, मानिटर छिपकलियां, जल पक्षी तथा शिकारी पक्षी शामिल हैं। बड़े आकार के अधिकांश वयस्क सांप सिर्फ मनुष्य द्वारा ही सताए जाते हैं। नेवले तथा शिकारी पक्षी छोटी जाति के सांपों का शिकार करते हैं। नेवला तो सांप का जाना-माना दुश्मन है। यह सच है कि यह तेज-तर्रार छोटा-सा जानवर किसी भी चलती-फिरती चीज पर झपट पड़ता है, बशर्ते वह छोटी हो। हमने देखा है कि किस प्रकार हमारे पालतू नेवले ने एक आदमी के पैर के नीचे से एक सांप (कुकरी) को धर दबोचा था, जबकि उस आदमी ने अनजाने में सांप पर पैर रख दिया था। हम जानते हैं कि वह सांप अहानिकर था पर यदि ऐसी ही घटना किसी दूसरे के बगीचे में होती तो निश्चित रूप से उस बहुप्रचलित कथन की पुष्टि होती कि एक नेवले ने आदमी को जहरीले सांप के काटने से बचा लिया।

सांपों में अनेक प्रकार की बचाव क्रियाविधियां होती हैं। जैसा शत्रु, वैसे ही आत्मरक्षा के दांव-पेंच। कुछ सांप (विशेष रूप से रसल घोणस, अजगर तथा रजत बांसी) बहुत जोरों से सांस खींच कर हवा बाहर निकालकर फुंकारते हैं। कुछ अपने शरीर और गर्दन को फुलाकर अपने दुश्मनों को डराते हैं। निश्चित रूप से क्रोध का सबसे नाटकीय प्रदर्शन नाग का रहता है। अहानिकर जलसर्प भी पीछे हटकर अपना फण फैलाते हुए खतरनाक दिखने का ढोंग रचा सकता है। कुछ सांप तो इस आशा में चुपचाप पड़े रहते हैं कि उनका शत्रु उनके बिना देखे ही गुजर जाएगा। कुछ शरीर को बल देते हुए गुच्छा-सा बनाकर जड़ पड़ जाते हैं ताकि देखने वाले को उनके ओर-छोर का पता ही न लगे। पकड़े जाने पर सांप अपने छुटकारे के लिए क्या क्या तमाशे नहीं करता। यानी पकड़े जाने पर वह मल-त्याग, गंध फैलाने तथा उल्टी करने जैसी अप्रिय हरकतें कर सकता है। 'कुकरी' तथा अंधा सर्प जैसे कुछ सांप तो अपनी दुम की नोक चुभाने की कोशिश करते हैं। संभवतः सांपों की ऐसी प्रतिक्रिया के कारण ही डंक वाले सांप होने जैसी भ्रामक कहानियां प्रचलित हैं। बहरहाल, प्रतिरक्षा कैसी भी हो, जहरीले सांप मनुष्य जैसे बड़े एवं खतरनाक जीव पर आक्रमण नहीं करते। घायल किए जाने या पैर रखे जाने अथवा तंग किए जाने पर आखिरी उपाय के तौर पर ही वो काटते हैं। सांप की सबसे महत्वपूर्ण रक्षा तो उसका आदमी की नजर से दूर रहना ही होता है। यही कारण है जहां सांप आम होते हैं, वहां भी वो बहुत ही कम देखने में आते हैं। कुछ सांप मनुष्य से बचने के लिए अपनी आदतें, स्वभाव तक बदल डालते हैं—उदाहरणतया, वे दिनचर होने की बजाय रात को ही अधिक निकलते हैं।

सांप पकड़ने वाले

भारत में कुछ लोग सांप की पूजा करते हैं, तो कुछ उन्हें मारते हैं। आमतौर पर लोग सांपों से डरते हैं। दुनिया के अधिकांश क्षेत्रों की तरह हमारे यहां भी सरिसृपों के इस अद्भुत समूह के प्रति शांत और तर्कसम्मत विचार रखने वाले कम ही हैं। बहुत कम लोग इस धारणा को स्वीकार करते हैं कि सांप हमारे लिए बहुत कीमती और उपयोगी हैं। सच तो यह है कि कृंतक भक्षी होने के कारण ही सांप हमारे लिए आर्थिक दृष्टि से बहुत उपयोगी है और मात्र इसी उपयोगिता के आधार पर ही वह रक्षण का अधिकारी है।

जहां अधिकांश मनुष्य सांपों से परे भागते हैं, वहीं अनेक समूह ऐसे हैं जो भिन्न भिन्न कारणों से उनकी तलाश में रहते हैं। आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु की 'इरुला' जनजाति सांपों को पकड़ने वालों की पहली और सबसे जानी-मानी बिरादरी है। यह जनजाति पिछली चार-पांच पीढ़ियों से कभी 'बेहद व्यापक' सांप के चर्म उद्योग को सांपों की खाल प्रदाय करने या सुलभ कराने का मुख्य स्रोत रही है। तमिलनाडु के पुडुक्कोटाई तथा अन्यत्र 'अंबलाकरण' तथा 'मुथुरासा' जैसे स्थानीय लोग भी सांपों को उनकी खूबसूरत व कीमती खाल के लिए पकड़ते हैं, लेकिन अपेक्षाकृत कम कौशल से। इसके विपरीत 'इरुला' जनजाति के लोग प्रकृतिक इतिहास के अपने सही ज्ञान के बल पर सांपों को ढूंढ़ निकालते हैं। वे

सांपों द्वारा बनाए गए रास्तों, उनके मलमूत्र तथा विसर्जित की गई (केंचुली) त्वचा से उनकी जाति का पता लगा लेते हैं तथा अद्भुत दक्षता से सांपों के बिल खोद कर उन्हें ढूंढ़ निकालते हैं। क्षेत्र अच्छा हो यानी जहां सांप आम हों और उनका शिकार बहुत अधिक न हुआ हो, तो एक इरुला एक दिन में औसतन दो से पांच तक बड़े सांप ढूंढ़ निकालता है।

बंगाल के एक युवा सर्प विशेषज्ञ दीपक मित्र लिखते हैं, ''बंगाल में सांपों से संबंधित व्यक्तियों (पकड़ने वालों तथा संपेरों) को 'शापुरहिया' के नाम से जाना जाता है। इनमें हिंदू और मुस्लिम दोनों वर्गों के लोग शामिल हैं तथा वे 'शापुरहिया' उपनाम का प्रयोग भी करते हैं। समूचे उड़ीसा में इन लोगों को 'केरहा' कहा जाता है। उड़ीसा के अधिकांश संपेरे हिंदू हैं और अपने नाम के साथ 'दास' उपनाम का प्रयोग करते हैं। भुवनेश्वर के निकट पाटिया गांव में इनकी एक बड़ी बस्ती आबाद है। बंगाल में सांप पकड़ने वाले सांपों को तमाशा दिखाने के लिए तो पकड़ते ही हैं, उनकी खाल का व्यापार करने के लिए भी पकड़ते हैं। हालांकि सांप पूरी तरह से निरापद और पौष्टिक आहार है, लेकिन भारत में बहुत कम लोग ही इन्हें खाते हैं। बहरहाल, चाहे सांप जहरीला हो या नहीं, उत्तर-पूर्व भारत की चकमा, मिजो और दूसरी जनजातियां अपने सामने पड़ने वाले किसी भी बड़े सांप को मार कर खा जाती हैं।

महाराष्ट्र के रत्नागिरी क्षेत्र में महार जाति के लोग प्रतिवर्ष हजारों फूर्सा पकड़कर हाफकिन इंस्टीट्यूट को उपलब्ध कराते हैं, जहां उनका विषरोधी दवा बनाने के लिए प्रयोग होता है। सांप पकड़ने वाले अपने काम के लिए बांस से बनी लंबी चिमटी या संडसी का प्रयोग करते हैं तथा एक नोकदार फल वाली छड़ी भी अपने साथ रखते हैं, जिसका प्रयोग वे जमीन पर बड़े पत्थरों वगैरह को खोद-पलट कर उनके नीचे छिपे सांपों को खोज निकालने के लिए भी करते हैं। एक तेज चलने वाला महार एक दिन में 30-40 घोणस तक पकड़ लेता है। दिलचस्प बात यह है कि घोणस के अलावा ये अन्य किसी जाति को हाथ तक नहीं लगाते।

जहां तक 'संपेरों' का संबंध है, ये वास्तव में सांपों को खुद नहीं पकड़ते, बल्कि तमाशा दिखाने के लिए सांप पकड़ने वाली स्थानीय जनजातियों से खरीद लेते हैं। कुछ संपेरे हाथ की सफाई दिखाने में बहुत माहिर होते हैं, लेकिन ये सांपों के बारे में बहुत कम जानते हैं। जहरीले सांप आमतौर पर या तो विषहीन कर दिए जाते हैं या फिर उनके विष के दांत तोड़ दिए जाते हैं। हालांकि सांप का खेल दिखाने की परंपरा बड़ी नयनाभिराम होती है, लेकिन दुर्भाग्यवश ये तमाशे वाले अपने खेल में नाटकीयता लाने के लिए सांपों के बारे में डरावने किस्से-कहानियां जोड़ देते हैं। सभी जानते हैं कि सांपों को लेकर हमारे यहां कई प्रकार के शकुन-अपशकुन प्रचलित हैं, इससे इनमें निरर्थक वृद्धि तो होती ही है, साथ ही जनसाधारण के मन में सांपों के बारे में व्यर्थ का भय पैदा होता है। आगरा शहर से बाहर तथा उड़ीसा में एक एक गांव ऐसा है जो पूरा का पूरा संपेरों से आबाद है, लेकिन शेष भारत में ये छितरे हुए और गिनती भर के हैं। बड़े शहरों में इनमें से बहुतों ने बड़े बड़े होटलों तथा केंद्रीय स्थलों के पास अपने 'इलाके' बना रखे हैं, जहां कभी कभी

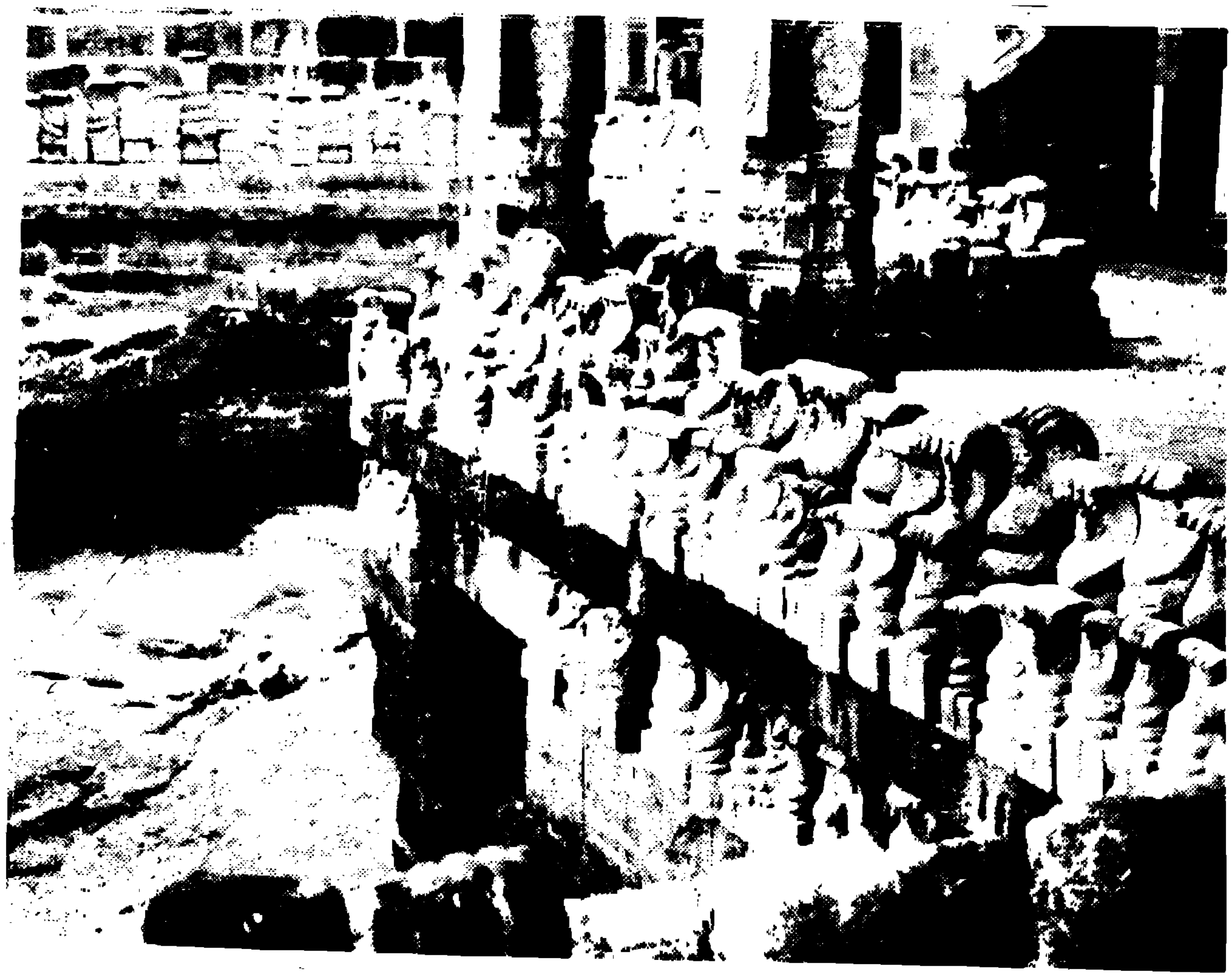
सांप के खेल के साथ साथ ये सांप-काटे की तथा बिच्छुओं के दंश से बचाने की 'औषधियां' भी बेचते हैं। बहुत से संपेरे घरों में जाकर घरवालों के मन में यह धारणा जमाने की कोशिश करते हैं कि उनका बगीचा सांपों के छिपने के लिए बहुत उपयुक्त स्थल है। बस, घरवाले घबरा कर उसे पैसे देकर वहां 'छिपे' सांपों को निकालने का अनुरोध करते हैं। संपेरे आधे घंटे तक बीन बजाने और अचानक ही झाड़ियों में गायब होने के बाद 50 सांप पकड़ कर घरवालों के सामने रख देते हैं। लेकिन गौर से देखने पर पता चल जाएगा कि ये सारे सांप तो संपेरे के अपने खरीदे हुए सांप है, जिन्हें उसने घर के बगीचे की झाड़ियों में छिपा दिया था।

नाग पंचमी का त्यौहार अगस्त के आसपास पड़ता है। अधिकांश हिंदू इस त्यौहार को मंदिरों में सांपों की प्रतिमाओं की पूजा-अर्चना करके मनाते हैं। कुछ लोग दीमक के टीलों की भी पूजा करते हैं, क्योंकि यह स्थान नागों का पसंदीदा, परंपरागत आवास है। लेकिन महाराष्ट्र के बातिस शिराला नामक गांव के किसान ऐसा नहीं करते। इसकी पृष्ठभूमि में कहानी यह है कि बहुत साल हुए एक गुरु ने उन्हें सर्प-दंश से अभयदान दे दिया था। अतः बातिस शिराला गांव के किसान हर वर्ष कई सौ नाग पकड़ते हैं और धामन व 'बैंडेड रेसर' के साथ उनकी पूजा करते हैं। दो दिन तक मनाए जाने वाले इस उत्सव के दौरान सांपों को मिट्टी के बर्तन में रखा जाता है और बहुत सावधानीपूर्वक संभाला जाता है। उत्सव खत्म होने पर उन सांपों को बिना कोई नुकसान पहुंचाए मुक्त कर दिया जाता है। भोले-भाले किसान (जो यह निर्विवाद रूप से विश्वास करते हैं कि वे सांपों से संरक्षित हैं) जिस आत्मविश्वास और कौशल से सांपों को पकड़ते और संभालते हैं, वह शिक्षाप्रद है।

भारत में हर जगह सांपों के मंदिर हैं। वहां शायद ही किसी में असली सांप देखने में आता हो। लेकिन पत्थरों पर उत्कीर्ण सांपों के भिन्न रूप अवश्य देखने को मिलते हैं। कहीं कहीं कुछ 'स्वामी' प्रकार के लोग पूजा को नाटकीय बनाने के लिए इक्का-दुक्का नाग पकड़े रखते हैं। लेकिन भारत में मलेशिया के पेनांग मंदिर की तरह एक भी ऐसा मंदिर नहीं है, जहां हरे घोणस जैसे सांपों की भरभार हो।

सांपों का संरक्षण

सांपों को 'किसानों का बेहतरीन दोस्त' कहना चाहिए। क्योंकि सांपों के अलावा दूसरा कोई ऐसा प्राणी नहीं जो इतनी दक्षता के साथ चूहों का पीछा करते हुए उनके बिलों में घुस कर उनका शिकार कर सके। अधिकांश लोग यह नहीं जानते कि चूहे कितने विनाशकारी होते हैं। भारत के सुप्रसिद्ध पक्षीविद् स्व. डा. सालिम अली ने कृंतक भक्षी पक्षियों का महत्व बताते हुए कहा था कि कृंतक भारत की 25-30 प्रतिशत फसल नष्ट कर देते हैं। चूहों से होने वाली यांत्रिक हानि अविश्वसनीय है; नीलगिरी के एक चायबागान की रिपोर्ट है कि चूहों के कारण उसे प्रतिवर्ष पांच लाख रुपये की हानि होती है। कारण, इस चाय बागान के आसपास के जंगल साफ कर दिए गए हैं, जिससे सांप तथा शिकारी पक्षी जैसे कृंतक-शत्रु खत्म हो गए हैं। सच तो यह है कि चूहों की आबादी को जितने प्रभावी ढंग से सांप रोक



पुडुकोट्टई के पेरायूर मंदिर में सर्पशिलाएं। प्रत्येक शिला से महिलाएं पुत्र प्राप्ति की अर्चना करती हैं



गत वर्षों में चर्म उद्योग के लिए सांपों को मारे जाने से सांपों की संख्या देश के कई भागों में बुरी तरह प्रभावित हुई है

सकते हैं, उतने प्रभावी ढंग से न तो चूहामार दवाएं, न चूहेदानियां तथा न दूसरे अन्य कृंतक भक्षी प्राणी रोक सकते हैं।

यदि लोगों को एक बार यह भरोसा और जानकारी हो जाए कि खतरनाक सांपों की संख्या अहानिकर सांपों के मुकाबले बहुत कम है तो वे सभी सांपों के भय से मुक्त हो सकते हैं। नतीजतन वहां इन सांपों से छेड़छाड़ करना या इन्हें मारना पूरी तरह निषिद्ध है। लेकिन दुर्भाग्यवश यह ज्ञान भी धामन को खालों के व्यापारियों का शिकार होने से नहीं बचा पाता। रैट स्नेक की बड़े पैमाने पर हो रही इन हत्याओं से अपनी खाद्य उपज बढ़ाने के हमारे व्यापक और महंगे प्रयत्न निरर्थक सिद्ध हो रहे हैं। गौर करने की बात है कि एक अदद धामन एक वर्ष में सैकड़ों मूषकों और चूहों को खा जाता है।

प्राकृतिक पर्यावरण को बनाए रखने में मामूली से मामूली सांप का अपना महत्व और उपयोगिता होती है। यहां हम हर प्राकृतिक समुदाय के परस्पर पारिस्थितिक संबंधों की विस्तार से चर्चा नहीं कर सकते। वस्तुतः हमें स्वीकार करना चाहिए कि प्रकृति में प्रत्येक सांप के महत्व को पूरी तरह से कोई नहीं जानता। सांपों के प्राकृतिक इतिहास की रहस्यमय परतें खोलने के लिए समय और गहन प्रयत्नों की आवश्यकता है। हां, जनजातियों की मदद से जीवविज्ञानी यह काम ज्यादा आसानी से कर सकते हैं। इन प्राणियों की प्रकृति और उनकी भूमिका को समझना इनके प्रति सामान्य विनाशकारी और गलत धारणा को बदलने की दिशा में पहला कदम होगा।

एक शीर्ष वर्ष में सांप की खालों का निर्यात

मार्च 1968		अप्रैल 1967-मार्च 1968	
मात्रा	*मूल्य*	*मात्रा*	*मूल्य*
17,522 *कि.ग्रा.*	रु. 7,175,116.00	358,413 *कि.ग्रा.*	रु. 107,651,889.00

मोटे अनुमान के अनुसार एक खाल के 10 रुपये लगाए जाएं तो गत एक वर्ष में कम से कम एक करोड़ धामन, नाग, अजगर तथा अन्य सांप इस खाल-उद्योग के लिए मार दिए गए। सांप की खालों के उद्योग से जनजातियों को रोजगार मिलता है, लेकिन चूंकि संख्या और मौसम पर कोई नियंत्रण नहीं है और चूंकि इस सारे व्यवसाय में अंततः लाभ का बड़ा अंश बिचौलियों को ही मिलता है, अतः पारिस्थितिक और आर्थिक—दोनों पहलुओं से यह गलत है।

सर्प-चर्म उद्योग या सर्प-विष उद्योग भारत में तभी युक्तिसंगत हो सकता है, जब उसकी बागडोर जनजातीय (सांप पकड़ने वाले) सहकारी संस्थाओं के हाथों में हो तथा जिसे नियमित रूप से वैज्ञानिक संरक्षण और सलाह प्राप्त होती रहे। सर्प चर्म और विष उद्योग के लाभ को सांपों के कृंतक विनाशी मूल्य से तुलना करके आंकना होगा। दूसरी बात यह है कि सांप को मारा जाता है तो सिर्फ उसकी खाल ही उपयोग में आती है, उसका मांस तथा अन्य वस्तुएं बेकार जाती हैं। संभवतः जनजातियों की सहकारी संस्था सांप के बचे मांस को मगरमच्छों के सहकारी फार्म को आपूर्ति कर सकती है।

आधुनिक वन्य जीवन तथा सांपों से संबंधित निर्यात कानून

देश के अधिकांश राज्यों में प्रभावी 'वन्य जीवन (रक्षण) अधिनियम 1972' सिर्फ एक ही सांप को रक्षण प्रदान करता है, और वह सांप है—भारतीय शैल अजगर। लेकिन इस जाति को भी पूरा संरक्षण प्राप्त नहीं है, संबंधित राज्य के मुख्य वन्यजीवन वार्डन से इसकी खाल को प्राप्त करने तथा उसका व्यापारिक प्रयोग करने का परमिट प्राप्त किया जा सकता है। इसके विपरीत वन्य जीवन उत्पाद निर्यात नीति (एक्सपोर्ट पॉलिसी फॉर वाइल्ड लाइफ प्राडक्ट्स) (1975-76) कानून भारतीय सांपों के लिए अधिक संरक्षक विधान है। नए नियमों के तहत सभी प्रकार के सांपों या उनके उत्पादक (विष, खाल आदि) के निर्यात की सामान्यतः अनुमति नहीं है। सिर्फ वैज्ञानिक शोध कार्यों के लिए ही विशेष निर्यात लाइसेंस जारी किए जाते हैं। अब सरकार को सुझाव दिया जा रहा है कि कम वर्षा वाले जंगल के सांप की जातियों तथा नागराज जैसे सांपों को संरक्षण प्रदान किया जाए क्योंकि उनके आवास स्थल तेजी से कम हो रहे हैं।

सांपों का संग्रह तथा अध्ययन

सांप कहे जाने वाले इन अद्‌भुत पांव विहीन प्राणियों के बारे में आपकी दिलचस्पी संभवतः सामान्य से अधिक हो सकती है। यहां 'अज्ञान ही भय है' वाली प्राचीन कहावत लागू हो सकती है। सच तो यह है कि सांपों के बारे में आप जितना ज्यादा जानेंगे, उनको समझना और उनको पसंद करना आपके लिए उतना ही ज्यादा आसान होगा। अगर आप सांपों पर अध्ययन करने का निर्णय करना चाहते हैं (चाहे वो स्कूल या कालेज की किसी योजना के तहत हो अथवा स्वयं अपने बूते) तो आपको न तो नागों को ढूंढ़ने-पकड़ने की जरूरत है, न घोणसों पर झपटने की। बेहतर होगा कि आप केवल विषहीन सांपों को पकड़ें और रखें। और किसी भी विषहीन सांप को पकड़ने या हाथ लगाने के लिए पहला सबक यह है कि आप यह सुनिश्चित करें कि यह सांप विषहीन है। विषैले सांपों को न तो पकड़ना चाहिए और न ही उन्हें घर पर रखना चाहिए, क्योंकि इससे दुर्घटना का अंदेशा बहुत अधिक होता है।

शुरू शुरू में सांपों को ढूंढ़ निकालना मुश्किल होता है, लेकिन अगर आप किसी उपनगर अथवा फार्म क्षेत्र में रहते हैं, तो बस, यह प्रचारित होना चाहिए कि आप जिंदा सांपों में दिलचस्पी रखते हैं। फिर तो लोगबाग खुद-ब-खुद आपसे मदद मांगने आने लगेंगे कि चलिए जरा हमारे कुएं में से या घास के ढेर अथवा ताड़पत्तों से बनी छत में छिपे सांप को निकाल बाहर करिए। इस प्रकार अनुभव के साथ साथ आप जान जाएंगे कि सांप कहां कहां से पकड़ा जा सकता है। अगर मौसम गर्म और खुश्क है तो सांप ठंडे और नमी वाली जगहों में छिपता फिरता है, और अगर मौसम बरसात यानी मानसून का है तो सांप सूखे और ऊंचे शरण-स्थलों की तलाश में रहता है। नाग को चूहे के बिल में ढूंढ़ा जा सकता है, करैत को ईंटों का ढेर पसंद है तो पेड़ पर रहने वाले सांप कुछ चुनींदा पेड़ों और झाड़ियों



विषैले सांप को थैले में बंद किया जा रहा है



विषहीन सांप को पकड़ने का तरीका

पर रहना पसंद करते हैं। जल सर्प को आप रात को सर्चलाइट की मदद से आसानी से पकड़ सकते हैं। ये ऐसी बातें हैं जो व्यक्ति अनुभव से तथा इरुला जैसी सांप पकड़ने में माहिर जनजाति के सहयोग से ही सीख सकता है। हालांकि जंगल में सांपों की किस्में अधिक होती हैं, लेकिन झाड़ियों की बाढ़ वाले धान के खेत जैसे खुले स्थान की अपेक्षा जंगलों में सांपों को ढूंढ़ निकालना काफी मुश्किल काम है। कृषिभूमि में मूषक और चूहे बहुतायत में होते हैं। वे हल की जुताई से बचने के लिए धान के बांधों, झाड़ियों के समूहों में शरण लेते हैं।

क्योंकि सांप दिन और रात में अलग अलग समय पर सक्रिय होते हैं, अतः एक गंभीर सांप अध्येता भिन्न भिन्न ऋतुओं में सुबह, दोपहर और शाम को संबंधित क्षेत्र में धीरे धीरे टहलता है। हो सकता है शुरू में उसके इस टहलने से कोई परिणाम न निकले, लेकिन धैर्य और पैनी नजर रखने से कोई भी व्यक्ति सांपों का अच्छा अध्येता और सर्पविज्ञानी बन सकता है। किसी भी अच्छे शिकारी की तरह आप अपने शिकार की उपस्थिति के स्पष्ट संकेत चिह्नों को समझने लगेंगे, जैसे कि उसकी छोड़ी हुई केंचुल, मल और अंततः सांप द्वारा बनने वाले रास्ते से मिलने वाले संदेश। सांप को थैले में बंद करना शुरू में बहुत मुश्किल होता है, लेकिन अनुभव से बेहतरीन गुरु और कोई नहीं। अगर आपको पक्का विश्वास है कि फलां बिल में सांप छिपा है, तो आप एक लंबी, पतली और लचीली लकड़ी उस बिल में वहां तक डालिए जहां जाकर वह सांप को छू सके। अगर छड़ी सांप को छूने लगती है तो सांप हिलेगा-डुलेगा और आपकी छड़ी भी हिलेगी-डुलेगी। तब आप जान जाएंगे कि सांप बिल में कितनी गहराई पर छिपा है। हालांकि कभी कभी सांप बहुत गहरे में जा छिपते हैं, जैसे कि जब वे दीमक के टीले में शरण लेते हैं। लेकिन चूहे के बिल में वो अक्सर दो-तीन फुट गहरे में ही छिपे होते हैं और जरा सावधानी से खोदने पर उसे निकाला जा सकता है। खोदते समय ध्यान रखें कि आपका फावड़ा सांप के दो टुकड़े न कर दे।

कपड़े के थैलों में सांपों को एक दिन रखा जा सकता है। थैलों में कुछ हरी पत्तियां जरूर डाल दें और धूप में न रखें। जहरीले सांपों को कभी मत रखिए। अगर आप किसी सांप को लंबे समय तक अपने पास रखना चाहते हैं, तो माटी के सांप, हुर्वा या अलंकृत सर्प में से ही कोई जाति चुनें क्योंकि ये अपेक्षाकृत कम परेशानी महसूस करते हैं। छोटे सांपों को पालने के लिए या तो विशेष प्रकार का पिंजरा बनवाया जा सकता है या फिर किसी मछली-घर में थोड़ा फेर-बदल करके सांपों को रखा जा सकता है। सांप के पिंजरे में पानी, पत्तियां, रेत तथा चट्टानों के टुकड़े जरूर रखने चाहिए और हो सके तो उसमें एकाध टहनी-वहनी भी रख दें ताकि सांप उस पर चढ़ने-उतरने का शौक पूरा कर सके। सांप को हर रोज सुबह कम से कम आधा घंटे के लिए धूप में रखना आवश्यक है। साथ ही यह भी कि उसका पिंजरा एकदम साफ और सूखा रहे। सांप पिंजरे में लगी जाली से अपनी नाक को रगड़ते रहते हैं अतः जाली की जगह एल्मुनियम की सुराखों वाली शीट इस्तेमाल करनी चाहिए। जिन्दा सांप को रखना काफी जिम्मेदारी का काम है,अतः यदि कोई सांप घायल हो जाता है या भागने की कोशिश करता है तो उसे मुक्त कर देना ही

बेहतर होता है।

यूरोप और अमेरिका में सांपों को पालतू जानवरों की तरह पालना या अध्ययन कार्यों के लिए अपने पास रखना खासा लोकप्रिय शौक है। वहां ऐसे शौकीनों द्वारा सांपों की आदतों, उनके प्राकृतिक इतिहास तथा उनकी बीमारियों के बारे में महत्वपूर्ण सूचनाएं और आंकड़े एकत्र किए गए हैं। ऐसे शौक और अध्ययन-कार्यों से ऐसे सरिसृपों के बारे में भी लोगों की धारणाएं बदली हैं जिनसे आमतौर से भय लगता है। यह एक सुखद उपलब्धि है, जिसकी शुरुआत अपने घर से होती है।

मिथक और मान्यताएं

भारत में हरेक गांव और हर क्षेत्र में सांपों के बारे में अलग अलग तरह की विशिष्ट और आमतौर पर घातक मान्यताएं और मिथक प्रचलित हैं। लेकिन इन किस्से-कहानियों व मान्यताओं को सच नहीं मान लेना चाहिए। सांपों के बारे में प्रचलित ऐसी ही लोक-चर्चाओं के कुछ उदाहरण यहां प्रस्तुत हैं—

1. कश्मीर में एक छोटा-सा सांप होता है, जो इतना विषैला होता है कि वह जहां-जहां से गुजरता है, वहां की बर्फ पिघल जाती है।

2. यह कथन भी बहुत प्रचलित है कि यदि आप कोई सांप मार देते हैं तो उसका जोड़ीदार आपका पीछा करता है और अपने साथी की हत्या का बदला लेता है। लेकिन यह मान्यता पूरी तरह गलत है, हां, इसका कुछ आधार हो सकता है। जब आप किसी सांप को मार देते हैं तो यह अपने गुदाद्वार से एक विशेष प्रकार की गंध छोड़ता है। ऐसे में यह बहुत संभव है कि उसका पड़ोसी या साथी सांप यह पड़ताल करने के लिए निकल पड़े कि यह गंध किसकी है, क्योंकि ऐसी गंध विपरीत लिंग को आकर्षित करने वाली होती है।

3. ऐसा माना जाता है कि सांप दूध पसंद करते हैं। सवाल यह है कि जंगलों में, बिलों में या खेतों में दूध कहां मिल सकता है? उनमें चूसने की क्षमता तो होती नहीं, फिर वो दूध कहां से पी सकते हैं, जबकि उनके सैकड़ों पैने दांत भी होते हैं। फिर दो-चार च नच दूध से उनकी सेहत पर क्या असर पड़ता होगा। ये तथा ऐसे ही कुछ और प्रश्न हैं, हमें इनका उत्तर ढूंढ़ना होगा।

4. कहा जाता है कि सांप संगीत प्रेमी होते हैं और वे संगीत की धुन पर झूम उठते हैं। हालांकि अब यह सिद्ध हो गया है कि सांप हवा में ध्वनि तरंगों का पता लगा लेते हैं, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि वे संगीत के चाहने वाले भी हैं। असलियत तो यह है कि वे स्वभाव-वश कृत्रिम कंपन से दूर ही रहते हैं। सच तो यह है कि संपेरे का संगीत उसके दर्शकों को ही खुश करता है, सांप को नहीं।

5. सांप के सिर पर मणि या कोई ज्योतिपुंज होता है—इस बात का बड़ा सटीक उत्तर इरुला जनजाति का गरीब सांप पकड़ने वाला देता है। आप किसी इरुला से यह बात करें तो वो छूटते ही कहेगा, 'अगर ऐसा होता तो हम लोग राजा होते, सांप पकड़ने वाले न रहते!'

6. लोग अक्सर दावा करते हैं कि उन्होंने ऐसा सांप देखा है जिसके गलमुच्छे थे, उसके सिर पर मुर्गे जैसी कलगी लगी थी। इस प्रकार की धारणाएं संपेरों द्वारा प्रचारित झूठी कहानियों का हिस्सा हो सकती हैं। या फिर यह हो सकता है कि उसने ऐसा सांप देख लिया हो जो त्वचा-विसर्जन की प्रक्रिया से गुजर रहा हो। क्योंकि ऊपर-नीचे के जबड़ों से उतरती खाल निश्चय ही देखने में बड़ी विचित्र लगती है।

7. हरे सांप के बारे में प्रचलित भ्रांति है कि वह सामने वाले की आंखें निकाल लेता है या वह सीधा माथे पर दंश मारता है। सच तो यह है कि इस अहानिकर सांप की नुकीली नाक नर्म और रबड़ जैसी होती है। हरा सांप अंगुली में दर्दभरा दंश मार सकता है (जो अहानिकर होता है), वह नाक पर भी दंश मार सकता है लेकिन इस सांप के दंश से आज तक किसी की आंखें खराब नहीं हुईं।

8. कहा जाता है कि माटी के सांप की जीभ के स्पर्श से या उसके 'चाटने' से कोढ़ हो जाता है। चूंकि इस अहानिकर सांप के शरीर पर इस प्रकार का पैटर्न होता है जो मोटे तौर पर इस भयानक रोग से ग्रस्त रोगी से मिलता जुलता है, अतः लोग जल्दबाजी में ऐसी निरर्थक धारणा बना लेते हैं। सच तो यह है कि सांप साफ रहते हैं और उन्हें बीमारी नहीं होती।

9. दक्षिण में लाल धामन के बारे में यह प्रचलित है कि यह न केवल जहरीला होता है, बल्कि काटने के बाद ऊंचे पेड़ पर चढ़ कर अपने शिकार का क्रियाकर्म देखता है।

10. धामन की दुम के बारे में भी बहुत से किस्से सुने-सुनाए जाते हैं। लेकिन सच तो यह है कि धामन की दुम रस्सी के टुकड़ों से ज्यादा खतरनाक नहीं है और न इसकी दुम में किसी प्रकार का डंक लगा होता है। यह न तो गायों पर लिपट कर उनका दम घोंटता है और न ही धान के खेतों को तहस-नहस करता है।

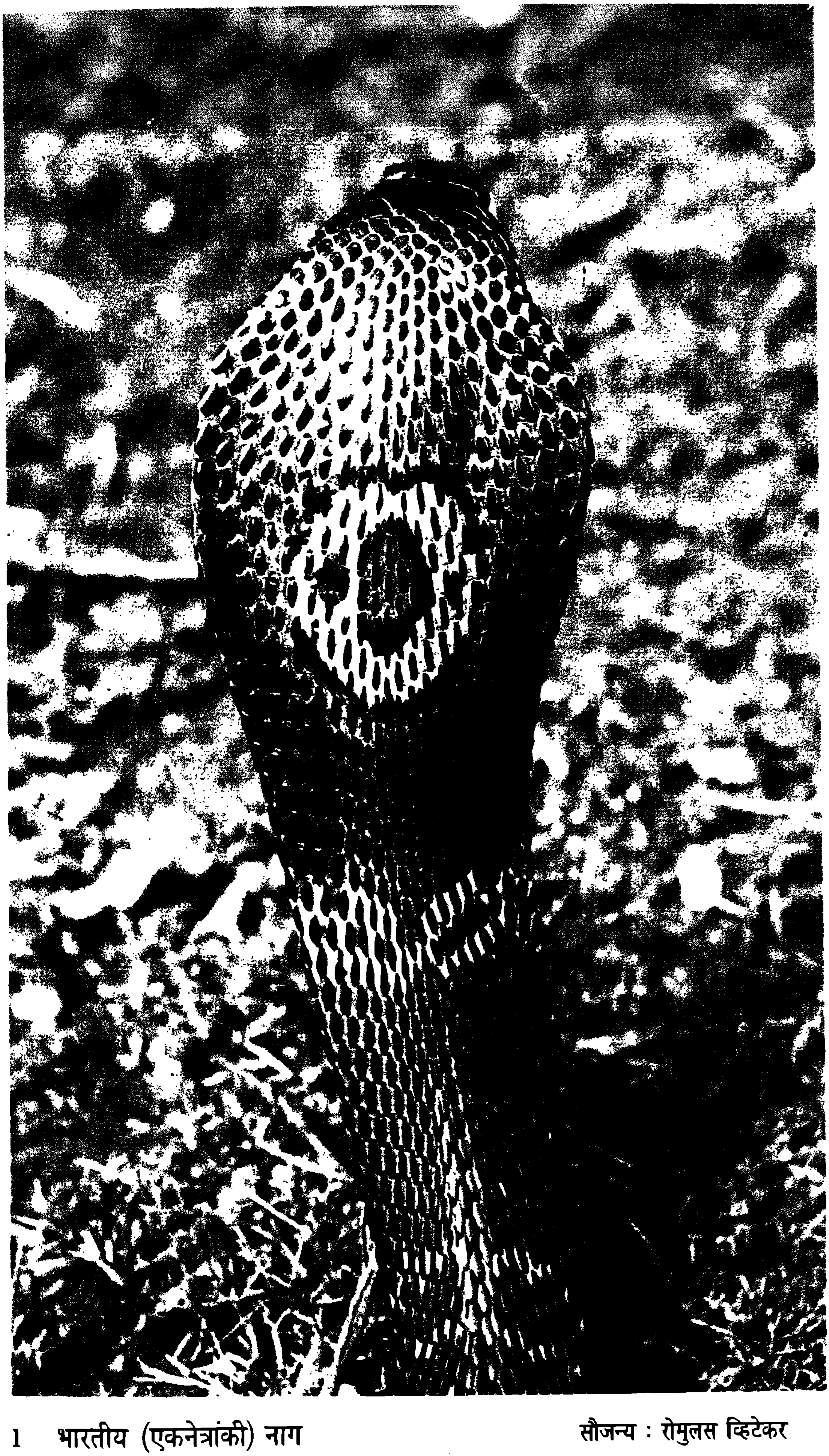
11. यह धारणा भी गलत है कि जिस सांप के शरीर पर छल्ले बने होते हैं, उसके काटने से उस व्यक्ति के शरीर पर भी छल्ले उभर आते हैं।

12. उत्तर-पश्चिम भारत में ऐसी मान्यता है कि करैत सांप सोते हुए आदमी का सांस खींच लेता है। यह धारणा संभवतः इस आधार पर बन गई होगी कि करैत द्वारा दंश किए गए व्यक्ति को सांस का पक्षाघात हो जाता है। किसान और खेतों में काम करने वाले मजदूर श्वास-पक्षाघात के वैज्ञानिक पहलू को नहीं समझते, अतः वे अज्ञानवश यही समझते हैं कि करैत आदमी की सांस खींच ले जाता है।

13. महाराष्ट्र में नन्हें फूर्सा के बारे में प्रचलित है कि वह हवा में छह फुट या इससे भी अधिक दूरी तक की छलांग लगा सकता है। यह धारणा भी गलत है। बेहतर होगा कि यदि इस दूरी को छह इंच तक ही सीमित रखा जाए।

14. पश्चिमी तट से लगे क्षेत्र में वह घर बड़ा सौभाग्यशाली माना जाता है, जिसके अहाते में नाग हो। केरल में बहुत से हिंदुओं ने ऐसे पूजा-स्थल बनाए हुए हैं, जहां वे अपने 'परिवार नाग' की पूजा-अर्चना करते हैं।

15. ऐसी मान्यता है कि नाग, धामन के साथ समागम करता है। लेकिन सच तो यह



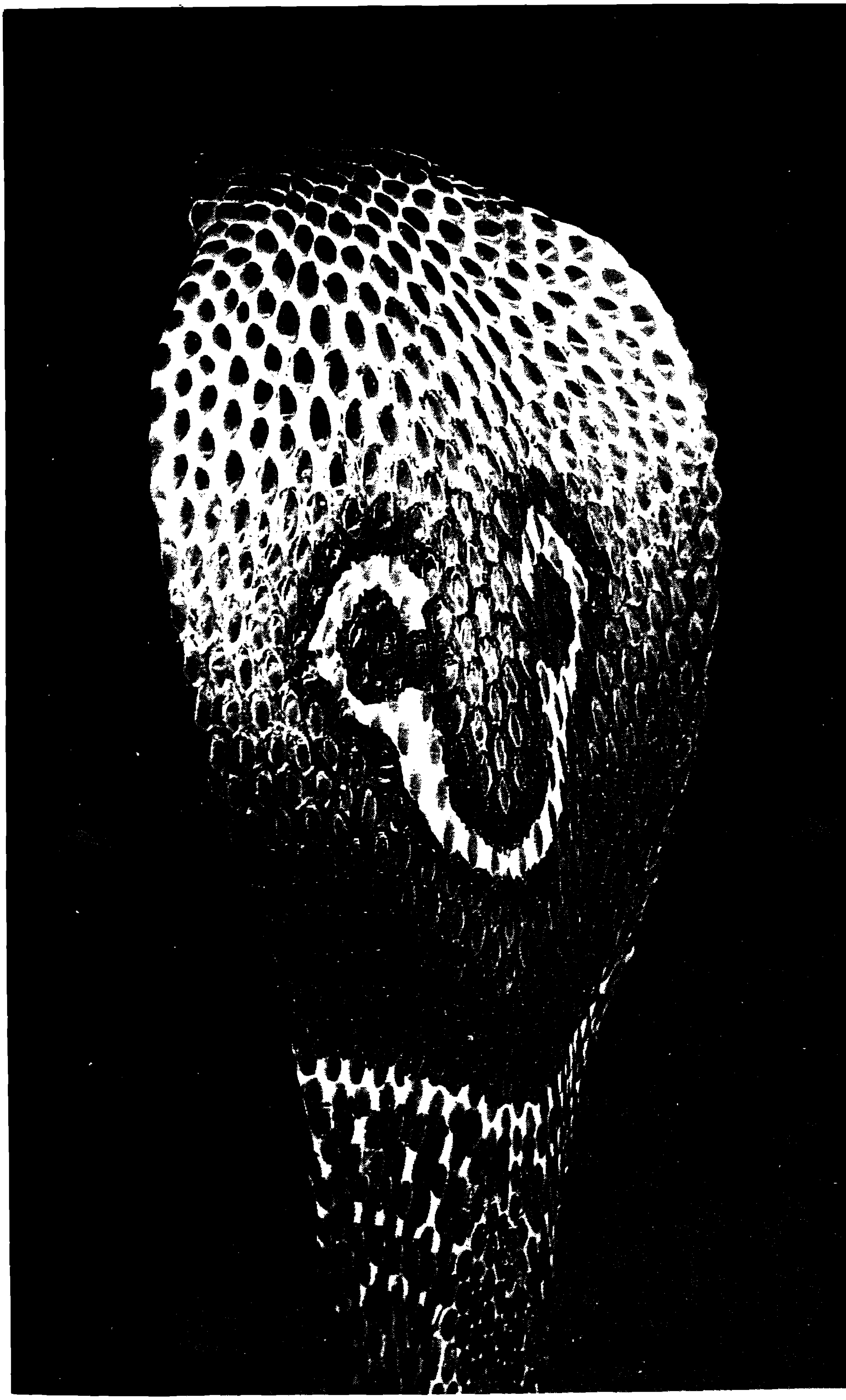
1 भारतीय (एकनेत्रांकी) नाग सौजन्य : रोमुलस व्हिटेकर



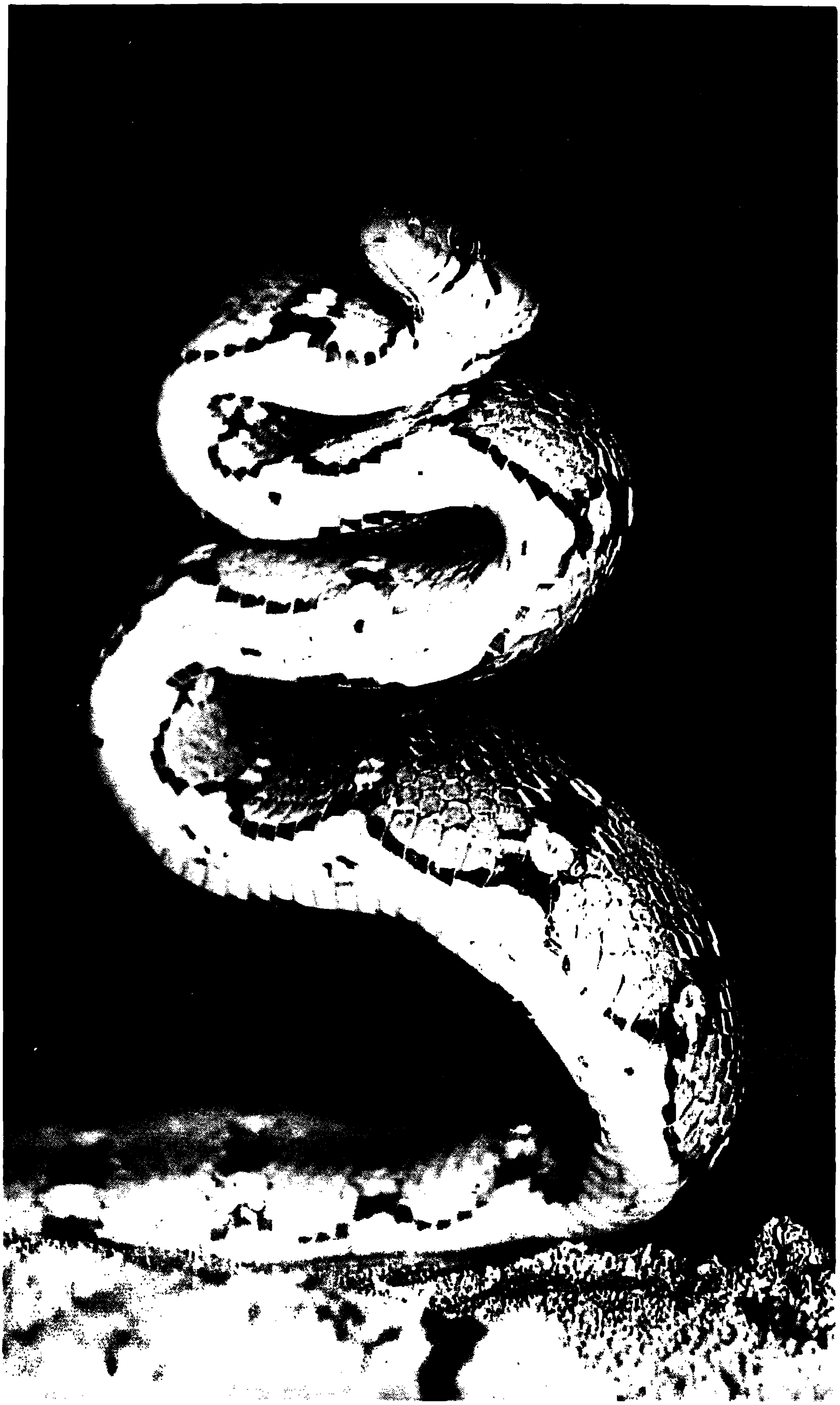
2 नाग के अंडों से निकलते हुए बच्चे सौजन्य : रोमुलस व्हिटेकर



3 नाग (कोबरा) सौजन्य : डॉ. आई. दास



4 भारतीय (द्विनेत्रांकी) नाग सौजन्य : रोमुलस व्हिटेकर



5 सामान्य अलंकृत सर्प सौजन्य : डॉ. आई. दास

है कि नाग अपनी ही जाति में समागम करता है तथा आमतौर पर अपने से बड़े आकार के व कभी कभी स्वजाति भक्षक धामन से वह दूर ही रहता है।

16. सांप के काटे के इलाज अथवा उपचार को लेकर तो मिथकों का अंबार लगा है मंत्र फूंकने से जादुई जड़ी-बूटी तक और यहां तक कि कोई कोई तो फोन पर बातचीत के जरिए ही सांप के काटे का चमत्कारिक इलाज करने का दावा करते हैं। जबकि भारत में सांप के काटे का एक ही प्रभावी उपचार है और वह है–विषरोधी सीरम या सर्प- दंशरोधी सीरम। बाकी के उपचार सर्पदंश से उपजे भय और सदमे से उबारने में सहायक होते हैं। लेकिन इन्हें विषरोधी उपचार में कहीं भी और कभी बाधा नहीं बनने देना चाहिए (देखें–सर्पदंश)

17. दोमुंहे सांप की दुम एकदम भोथरी होती है, अतः इसको लेकर दोमुंहे सांप के बारे में कई लोकप्रिय किस्से प्रचलित हैं। उदाहरणतया, यह नेवले तथा अपने अन्य शत्रुओं को बेवकूफ बनाता हुआ अपना सिर बचाते हुए दुम उनके आगे कर देता है। बहुत से लोग भी ऐसे ही बेवकूफ बन जाते हैं।

सर्पदंश

आमतौर पर सर्पदंश घातक नहीं होता। कौन सा दंश खतरनाक होगा, यह अधिकांशतः इस पर निर्भर करता है कि सांप ने दंश के साथ कितनी मात्रा में विष शरीर में छोड़ा है। अतः सबसे बेहतर यही होगा कि सभी प्रकार के सर्पदंशों को आपात स्थिति मानकर रोगी पर विशेष नजर रखनी चाहिए और यही मानकर चलना चाहिए कि सांप ने दंश के साथ भरपूर विष छोड़ा होगा। सौभाग्य से बंबई का 'हाफकिन इंस्टीट्यूट' एक विषरोधी सीरम बनाता है, जो भारत में पाए जाने वाले सभी चारों विषैले विषधरों के काटे के लिए प्रभावी औषधि है। यह सीरम भारत के सभी सरकारी अस्पतालों में रखा जाता है। और अगर इसे देश के सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों) में सुलभ कराया जाए तो सांप के काटे से मौतों की वर्तमान दरों में जबरदस्त कमी आ सकती है।



सर्पदंश के तुरंत बाद पट्टी बांधनी चाहिए और विषरोधी सीरम देते समय उसे धीरे-धीरे खोलना चाहिए

प्राथमिक चिकित्सा

1. सांप के काटने पर शांत, संयत बने रहें। रोगी को उत्तेजित न होने दें।
2. रोगी के हाथ या पैर पर तुरंत एक पट्टी बांधें (यदि हाथ पर काटा है तो बांह के ऊपरी भाग पर बांधें और यदि पैर में काटा है तो पैर के ऊपरी भाग पर बांधे)। इस पट्टी को इतना कस दें कि रक्त प्रवाह कम से कम हो जाए (बंधी पट्टी में सिर्फ इतनी ढील होनी चाहिए कि आपकी एक अंगुली उसके नीचे घुस सके)।
3. रोगी को आप एक एस्पिरीन दे सकते हैं या थोड़ी-सी ब्रांडी भी पिलाई जा सकती है। और यदि उपलब्ध हो, तो रोगी का आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए एक इंजेक्शन भी दिया जा सकता है, ध्यान रहे भय का सदमा रोगी के लिए घातक हो सकता है।
4. रोगी को तुरंत ऐसे निकटतम उपचार केंद्र पर ले जाएं जहां विषरोधी सीरम उपलब्ध हो। रोगी को परिश्रम या थकान से बचाएं। सदमे का उपचार करें (पैरों को कंबल से ढक दें और ऊंचा उठा दें)।

टिप्पणी : यदि रोगी को उल्टी हो जाती है तो उसे बगल की करवट लिटा दें। सीधे लेटने (पीठ के बल) से रोगी को सांस लेने में कठिनाई हो सकती है, इससे रोगी को बचाएं।

लक्षण

जैसा कि आमतौर पर सांप काटे के मामलों में होता है—सांप न तो देखा गया होता है और न ही उसकी पहचान की गई होती है, अतः इसके उपचार के लिए पूरी तरह रोगी के लक्षणों पर निर्भर रहना पड़ता है। लिहाजा रोगी पर बराबर नजर रखी जानी चाहिए। अगर काटे गए अंग पर दर्द और सूजन नहीं है तो संभावना हो सकती है कि काटने वाला सांप विषरहित या अहानिकर हो (फिर भी, देखें—करैत)। सदमे के लक्षणों (ठंडा पसीना, मूर्च्छा अथवा मतली आना) से विषाक्तता के लक्षणों का भ्रम नहीं होना चाहिए। यहां नीचे उन सामान्य लक्षणों का विवरण दिया जा रहा है, जो चार बड़े विषधरों के काटने से रोगी में प्रकट हो सकते हैं। इससे जहां काटने वाले सांप की जाति जानने में मदद मिलेगी, वहीं उसका उपचार सुनिश्चित करने में भी आसानी होगी—

नाग

नाग का विष 'न्यूरोटॉक्सिक' श्रेणी का होता है यानी यह रोगी की प्रेरक तंत्रिका को निष्क्रिय कर देता है, जिससे सांस और हृदयगति रुकने से रोगी की मृत्यु हो जाती है। नाग दंश से उत्पन्न आम लक्षण इस प्रकार हैं—

1. अंग विशेष में दर्द (नहीं भी हो सकता है)।
2. काटे गए स्थान पर सूजन (कभी कभी दंश के एक या अधिक घंटों बाद) तथा कभी कभी व्रण यानी घाव-सा बन जाता है, जिससे बाद में संभवतः ऊतक क्षय हो सकता है।
3. दृष्टि का धुंधला जाना।



नाग के छोटे स्थिर विषदंत। विषग्रंथियां आंखों के पीछे होती हैं। एक विष नलिका द्वारा विष विषदंतों में पहुंचता है



नागदंश से हुई सूजन। करैत के काटने से इस प्रकार सूजन नहीं आती परंतु वह दंश अधिक घातक हो सकता है

4. टोसिस (पलकें बंद होना, पैर लड़खड़ाना)।
5. जीभ या जुबान में मोटापन या भारीपन महसूस होना, वाणी में अस्पष्टता, लार बहना।
6. उनींदापन, शारीरिक गतिविधियों का तालमेल गड़बड़ा जाना।
7. सांस लेने में कठिनाई होना, कभी कभी मूर्छा, शरीर में ऐंठन।

सामान्य करैत

करैत के विषदंत छोटे होते हैं और विष बेहद विषैला; संभवतः नाग के विष से छह से आठ गुना विषैला। करैत के काटे के भी लगभग वही आम लक्षण हैं जो नाग के काटे पर होते हैं। उनके अलावा यहां कुछ अपवाद लक्षण दिए गए हैं—

1. आमतौर पर अंग विशेष पर न तो सूजन का कोई लक्षण आता है, न दर्द महसूस होता है (करैत के दंश से यह एक भ्रामक और खतरनाक स्थिति हो सकती है)।
2. संभव है करैत दंश के कई घंटों तक कोई प्रकट लक्षण न उभरे। लेकिन ये लक्षण अचानक ही और बड़ी तेजी से उभरने शुरू हो सकते हैं।
3. पेट में और जोड़ों में असहनीय दर्द (छह से बारह घंटे) हो सकता है। करैत दंश की घटनाएं अक्सर रात के समय ही होती हैं। निशाचर होने के कारण चूंकि यह सांप बहुत ही कम दिखाई पड़ता है, अतः रात के समय सांप के काटे हुए किसी भी रोगी को तुरंत विषरोधी उपचार के लिए निकटतम अस्पताल या डाक्टर के पास ले जाने में ही समझदारी है। ऐसी लोकमान्यता है कि रात में सर्पदंश किया गया व्यक्ति दिन निकलने से पहले ही मर जाता है। अगर सर्पदंश सचमुच करैत का हो और रोगी को विषरोधी उपचार न मिले, तो यह लोक-मान्यता पूरी तरह सच सिद्ध हो सकती है।

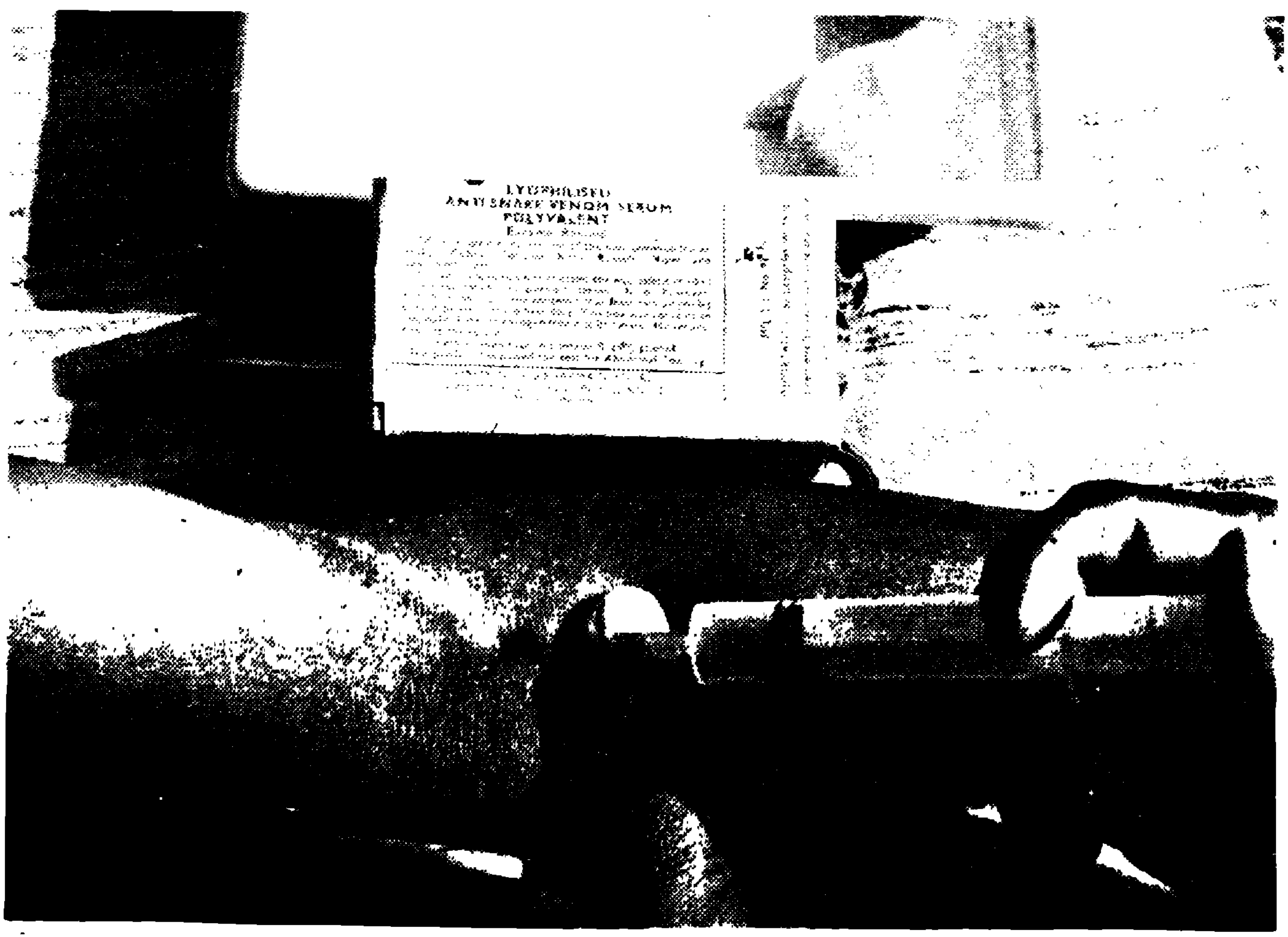
रसल घोणस

रसल घोणस के विषदंत एक सेंटीमीटर से भी ज्यादा लंबे होते हैं तथा इसका विष रक्त को प्रभावित करता है; जिसके परिणामस्वरूप खून में थक्के जमना शुरू हो जाते हैं, खून में स्कंदक पदार्थ कम हो जाते हैं तथा ऊतकों को नुकसान पहुंचता है। इसका विष नाग के विष से एक-तिहाई विषैला होता है, लेकिन इसकी विष-ग्रंथियां इतनी बड़ी होती हैं कि इसके विष की अत्यधिक मात्रा ही इसके दंश को घातक बनाती है :

1. तुरंत और लगातार दर्द, जलन सहित।
2. एकदम सूजन आना, और दो घंटे के अंदर अंदर सूजन का बेहद बढ़ जाना।
3. काटे गए अंग या स्थान पर धब्बा पड़ जाना या रंग बदल जाना, खरोंच जैसा निशान, फफोले उठना।
4. जी मितलाना, कमजोरी, चिड़चिड़ाहट।
5. लार या थूक में, उल्टी में, पेशाब में तथा मल में खून आना।
6. देखने और सांस लेने में कठिनाई।
7. खून की कमी, 24 घंटे बाद गुर्दे बेकार।



लंबे, खोखले, मुड़े हुए विषदंत। यह इसकी प्राकृतिक अधस्त्वचीय सूई होती है



विषैले सांप के घातक दंश का एकमात्र प्रभावी उपाय हाफकिन विषरोधी सीरम का अंत:शिराओं में पहुंचाया जाना है

फूर्सा

छोटे आकार का सांप होने के कारण इसके विषदंत कुछ बड़े ही कहे जाएंगे लेकिन ये कपड़े या जूते के चमड़े से आसानी से मुड़ जाते हैं। इसके विष में थक्के जमाने की प्रवृति होती है तथा यह रसल घोणस के विष की तुलना में अधिक विषैला होता है। सौभाग्यवश दंश के समय आमतौर पर यह बहुत थोड़ी मात्रा में ही विष छोड़ पाता है। फूर्सा के दंश पर सामान्यतः निम्न लक्षण देखने में आते हैं :

1. जलन के साथ दर्द (हो सकता है मामूली हो); कुछ समय बाद बांहों और टांगों के जोड़ों में दर्द।
2. दंश के दो घंटे के अंदर सूजन, कभी कभी बहुत ज्यादा, विशेषकर पैरों पर दंश के मामलों में, खासतौर पर तब जब रोगी दंश के बाद चला या दौड़ा हो।
3. मसूड़ों से खून आना, कटने पर रक्तस्राव, पेशाब में खून आना।
4. दंश के 12 से 14 घंटे बाद अंदरूनी रक्तस्राव के लक्षण।
5. रक्ताल्पता, खून की कमी से कमजोरी, हृदयगति बंद होने की संभावना।

टिप्पणी : कस कर बंधी हुई पट्टी से भी सूजन आ सकती है। रक्त के सामान्य प्रवाह में कमी आने से यह सूजन छूने पर ठंडी महसूस होती है, जबकि विष के प्रभाव से आई सूजन हाथ लगाने से गर्म लगती है।

विषरोधी सीरम

सांप के विष को निष्प्रभावी करने वाले सीरम को विषरोधी सीरम कहा जाता है और यह बंबई के हाफकिन इंस्टीट्यूट में घोड़ों पर परीक्षण करके बनाया जता है। इसके लिए चार बड़े विषधरों के विष-को मिलाकर एक मिश्रण (बेहद पतला) तैयार किया जाता है, फिर इस मिश्रण को धीरे धीरे मात्रा बढ़ाते हुए घोड़ों को इसका इंजेक्शन लगाया जाता है। इस प्रकार इंजेक्शन दिया हुआ कोई घोड़ा जब एक स्तर-विशेष तक इसका आदी हो जाता है या वह घोड़ा जब इस प्रकार के विषघोल की एक विशेष मात्रा सहन करने लगता है तो उस घोड़े का थोड़ा खून निकाल लिया जाता है। फिर इसे अच्छी तरह हिलाकर इसमें से सीरम (खून का तरल अंश) लेकर उसे फ्रीजर में ठंडा करके सुखा लिया जाता है। इसके बाद परीक्षण करके इसे दस-दस मिलीलीटर की खुराकों में पैक कर लिया जाता है। यही वह विषरोधी सीरम है जो भारत के चार विषैले सांपों के विष के असर को प्रभावी ढंग से रोक सकता है। विषरोधी औषध कसौली (हिमाचल प्रदेश) के केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (सेंट्रल रिसर्च इंस्टीट्यूट) में भी बनाई जाती है।

विषरोधी सीरम को पांच वर्ष बिना रेफ्रीजिरेटर के रखा जा सकता है। यह सीरम देश के उन सभी ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध कराया जाना चाहिए जहां सांप बहुतायत में पाए जाते हैं। कुछ लोगों को घोड़े के खून से बना सीरम बिल्कुल रास नहीं आता यानी उन्हें एलर्जी होती है, अतः छोटा एड्रिनलिन तैयार रखकर सीरम की परीक्षण डोज या खुराक

देनी चाहिए। सीरम की प्रत्येक किट के साथ या सामग्री के पैक के साथ विषरोधी दवा के इस्तेमाल के तरीके की बारीकियां भी लिखी होनी चाहिएं। यदि भारत में इस जीवनरक्षक विषरोधी के प्रयोग का अच्छा प्रचार किया जाए तो सर्पदंश से मरने वालों की संख्या में काफी कमी आ जाएगी।

देसी उपचार

पहले जमाने में जब भी किसी को सांप काट लेता था तो उसे ईश्वरीय दंड या किस्मत की मार मानकर संतोष कर लिया जाता था। आज भी बहुत से क्षेत्रों में सांप के काटने पर कई प्रकार के अंधविश्वास या भाग्यवाद की बातें कही जाती हैं। सांप के काटे के भांति भांति के विचित्र उपचारों के नाम पर नीम-हकीमों और देसी इलाज करने वालों ने हमेशा से नाम और पैसा खूब कमाया है। यह सब भारत तक ही सीमित नहीं है, दुनिया के कोने कोने से ऐसे विचित्र 'इलाजों' के किस्से सुनने में आते हैं जो मरीज को सांप के विष से पहले ही मार देते हैं। बहरहाल, हमारे देश में मुख्यतः पांच प्रकार के देसी उपचार प्रचलित हैं।

(क) तंत्र-मंत्र

देसी इलाजों में सबसे ज्यादा प्रचलित है तंत्र-मंत्र या झाड़-फूंक द्वारा उपचार। इस प्रकार का उपचार या तो पेशेवर सर्पदंश का इलाज करने वाले कर सकते हैं या फिर कोई धार्मिक व्यक्ति (साधु-संन्यासी या बाबा) जो यह समझता हो कि उसे भगवान से वरदान प्राप्त है। वे लोग भी काफी महत्वपूर्ण माने जाते हैं जो इस प्रकार से इलाज करने में खासे सफल रहते हैं। मंत्र द्वारा इलाज की पद्धति लगभग वैसी है जैसी ईसाई समुदाय में आस्था चिकित्सा 'फेथहीलिंग' पद्धति। क्योंकि अधिकांश सर्पदंश घातक नहीं होते, अतः मंत्र द्वारा सर्पदंश के उपचार की सफलता का प्रतिशत खासा ऊंचा रहता है और कभी-कभार उनका मंत्र काम नहीं करता तो ये झाड़-फूंक करने वाले उसके लिए विश्वसनीय कारण भी प्रस्तुत कर देते हैं, उदाहरणतया–यह सर्पदंश तो लाखों में एक भयंकरतम दंश था....।

(ख) स्टेशन मास्टर

कोई नहीं जानता यह पद्धति कैसे शुरू हुई। लेकिन पीढ़ियों से असाधारण रूप से प्रचलित और स्वीकृत इसकी कहानी कुछ इस प्रकार है–आप 'क' रेलवे स्टेशन के स्टेशन मास्टर को फोन कीजिए या तार भेजिए और जब तक उसका जवाबी तार आएगा, रोगी स्वस्थ हो चुका होगा। हमने उस 'क' स्टेशन के दुर्लभ स्टेशन मास्टर का अता-पता लगाने की असफल कोशिश की जो सन् 1900 के दशक के प्रारंभ से यह चमत्कार करता आ रहा है। कहने की आवश्यकता नहीं कि अहानिकर या अघातक सर्पदंश के मनोवैज्ञानिक उपचार का यह एक और उदाहरण है।

(ग) सर्पशिला (स्नेक स्टोन)

केरल और श्रीलंका में सांप काटे की एक प्राचीन लोकप्रिय और पसंदीदा पद्धति है—स्नेक स्टोन की। ये स्नेक स्टोन या सर्पशिलाएं और कुछ नहीं, बल्कि साफ की हुई, पालिश वाली हड्डियों के टुकड़े होते हैं। इसकी उपचार-पद्धति यह है कि सर्पदंश हुए स्थान या अंग-विशेष पर स्नेक स्टोन को रख दिया जाता है, जहां यह चिपक जाता है और जहर को बाहर खींच निकालता है। फिर इस शिला या पत्थर को दूध में डुबो कर विषरहित कर लिया जाता है। भारत में इस प्रकार के 'पत्थर' घूमते हुए संपेरों द्वारा बेचे जाते हैं, जबकि एल्पिटिया (श्रीलंका) में तो ये पत्थर बेचने की बाकायदा दुकानें हैं। लेकिन यह अनाप-शनाप पैसा बटोरने का ही धंधा है, दरअसल यह एक बेकार का पत्थर है, क्योंकि सर्पदंश का विष ऊतकों में गहरे जा चुका हेता है। सच तो यह है कि सांप द्वारा काटे गए स्थान को चाकू या ब्लेड से काट कर और चूस कर विष खींच लेने की तकनीक भी अक्सर लाभदायक नहीं रहती है। घोणस द्वारा दंश किए जाने पर तो यदि दंश किए हुए स्थान को काट लिया जाए तो रोगी तो रक्तस्राव से वैसे ही मर जाएगा। अतः सर्पदंश का शर्तिया इलाज 'विषरोधी' औषध उपलब्ध है, तो इन पुरातनपंथी, मिथकपूर्ण नाकारा उपचारों में व्यर्थ ही समय न गंवाते हुए रोगी का सही उपचार करना चाहिए।

(घ) स्वीकृत औषधियां

फादर म्यूलर के चिकित्सालय की बनी 'लेक्सिन', जो गोल्ड क्लोराइड आधारित अंतः श्वासक (इन्हेलैंट) है तथा 'तिरियक' दो बहुप्रचारित सर्पदंशरोधी औषधियां हैं, जो पिछले पचास से भी अधिक वर्षों से प्रयोग में लाई जा रही हैं। दरअसल परखनली में परीक्षण के समय बहुत से रसायन विष को निष्प्रभावी कर देते हैं, लेकिन जब विष किसी प्राणी या मनुष्य के शरीर में एक बार प्रवेश करा दिया जाता है तो वह विष न तो उस अंग-विशेष या स्थान पर रहता है और न उस स्थिति में रहता है, अतः ऐसे में उसे निष्प्रभावी या बेअसर करना काफी मुश्किल होता है। स्वाभाविक है कि इस प्रकार की औषधियां उस जमाने में लोकप्रिय हुई जब गांवों में विषरोधी सीरम न तो पहुंचा था और न इसके नाम और काम से कोई परिचित ही था। आज अनुमोदित विषरोधी सीरम के अलावा अन्य किसी भी औषधि से गंभीर किस्म के सर्पदंश के रोगी का इलाज करना आपराधिक और खतरनाक कार्य माना जाना चाहिए।

(ङ) जड़ी-बूटियां

सर्पदंश की अचूक औषधियों के नाम पर संपेरे और अन्य ऐसे ही लोग जड़ों की गांठें तथा पत्तियों का चूरा बेच कर खासा पैसा कमाते हैं। लेकिन संपेरे ऐसा करके लोगों के साथ विशुद्ध धोखा करते हैं, क्योंकि सांप के काटे जाने पर वे खुद भी विषरोधी सीरम के उपचार

के लिए अस्पताल की ओर भागते हैं। लेकिन कुछ ऐसी जड़ी-बूटियां विकसित की गई हैं, जो सांप के काटे में कुछ हद तक तो प्रभावी होती हैं तथा कुछ जनजाति समुदायों और शिकारियों व जड़ी-बूटियां संग्रह करने वालों ने स्वयं पर इनका प्रयोग भी किया है। तमिलनाडु की सांप पकड़ने वाली जनजाति इरुलाओं के पास कई प्रकार की सम्मिलित तथा विशिष्ट जड़ी-बूटियों से बनी सर्पदंशरोधी औषधियां होती हैं। इन उपचारों का सबसे स्थायी पहलू यह है कि इसके लिए कुछ विशेष पौधों की बेहद कड़वी पत्तियां और जड़ें (जिनमें जबरदस्त क्षारीय तत्व होता है) शामिल होती हैं। कहा जाता है कि यदि सर्पदंश जहरीला है तो रोगी को सामान्यतः ये कड़वी जड़ी-बूटियां स्वाद में मीठी लगती हैं। अतः इनकी खुराकें तब तक दी जाती हैं जब तक मरीज का स्वाद सामान्य नहीं हो जाता यानी वह इन जड़ी-बूटियों का असली कड़वा स्वाद नहीं महसूस करने लग जाता। लगभग हर इरुला के पास इन सर्पदंशरोधी जड़ी-बूटियों की एक छोटी किट (थैला या पोटली) होती है, जो वो हर वक्त अपने साथ रखता है। बेहद गंभीर किस्म के सर्पदंश के मामलों के आपात् उपचारों में रोगी के सिर की खाल काट कर उस पर पिसी हुई जड़ी-बूटियों की मालिश किया जाना (जैसे टीका या सूई लगाई जाती हो), या इन जड़ी-बूटियों को बीड़ी बनाकर रोगी से कश लगवाना ताकिं उनका जल्दी असर हो सके। उपचार के दौरान या उपचार के बाद सूजन आ गई हो, या मितली आ रही हो, दर्द या ऐसे ही अन्य लक्षणों या प्रभावों से निपटने के लिए इरुलाओं के पास अलग खान-पान की लंबी सूची और उपचार पद्धतियां हैं। जड़ी-बूटियों पर आधारित इन विषरोधी औषधियों का सावधानीपूर्वक चिकित्सकीय परीक्षण होना चाहिए। इरुला जनजाति के लोग अपने प्राकृतिक इतिहास ज्ञान में निपुण हैं और हमें पक्का विश्वास है कि उनकी बनाई औषधियों के अध्ययन से कई दिलचस्प निष्कर्ष निकल सकते हैं।

सर्पदंश के आंकड़े

भारत में सर्पदंश से मरने वालों की वास्तविक संख्या मालूम नहीं है, लेकिन अनुमान है कि यह संख्या एक वर्ष में छह से नौ हजार के बीच में कुछ हो सकती है। यह संख्या इतनी ज्यादा और चिंताजनक है कि विषरोधी सीरम का प्रयोग और प्रचार युद्धस्तर पर होना चाहिए। दिलचस्प तथ्य यह है कि भारत में सर्पदंश से मृत्यु की यह संख्या अमेरिका में कार-दुर्घटनाओं से मरने वालों की संख्या का पांचवां हिस्सा ही है, जबकि भारत में ही कुत्तों के काटे (रेबीज के परिणामस्वरूप) की संख्या का एक-तिहाई है।

सर्पदंश पर एक अध्ययन तोक्यो विश्वविद्यालय के डा. योशियो सवाई तथा डा. एम. होमा द्वारा 1972 में किया गया था। हाल में लिखे एक पत्र में डा. सवाई ने ये औसत दिए हैं : सरकारी अस्पताल के आंकड़ों के अनुसार 1969 में भारतीय अस्पतालों में सर्पदंश के 21,519 रोगियों का इलाज किया गया, जिनमें से 1,091 रोगियों की मृत्यु हो गई (5 प्रतिशत या प्रत्येक 20 रोगियों पर एक)। दुर्भाग्यवश इन आंकड़ों में निजी अस्पतालों के आंकड़े शामिल नहीं हैं।

सन् 1969 में महाराष्ट्र में सर्पदंश से 1,093 व्यक्तियों की मृत्यु हुई। इनमें से 993 को अस्पताल ही नहीं ले जाया जा सका (91 प्रतिशत)। उसी वर्ष केरल में सर्पदंश से मरने वालों की संख्या 264 रही, जिसमें से अस्पतालों में सिर्फ 97 ही मरे (37 प्रतिशत)। डा. सवाई के अनुसार समूचे भारत में एक वर्ष में सर्पदंश के कुल मामलों की संख्या यदि 200,000 मान लें तो इससे संकेत मिलता है कि सर्पदंश के कुल 10 प्रतिशत रोगी ही अस्पतालों में आते हैं और इनमें से भी 0.5 प्रतिशत (1,000) हर साल मर जाते हैं। इन आंकड़ों का दूसरा पहलू यह, कि 90 प्रतिशत सर्पदंश रोगी अस्पताल जाने की बजाय तंत्र-मंत्र या जड़ी-बूटियों से इलाज कराते हैं, और इनमें से 9,000 मृत्यु का शिकार होते हैं।

डा. सवाई का मानना है कि सर्पदंश से अधिकतर मृत्यु नाग के कारण होती है। इसके विष से पक्षाघात के लक्षण बड़ी तेजी से फैलते हैं और यही लोगों की अत्यधिक मृत्यु-दर (क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों से रोगी अस्पताल तक पहुंचते पहुंचते रास्ते में ही मर जाते हैं) का मुख्य कारण है। घातक दंश में करैत का नंबर दूसरा है। लेकिन न तो रोगी और न ही डाक्टर करैत और नाग के दंश में अंतर कर पाते हैं (देखें—लक्षण)। कुछ क्षेत्रों में घोणस का चिकित्सकीय महत्व है, लेकिन उनके दंश की मृत्यु-दर कम है। घोणस दंश से अधिकांश मृत्यु अस्पतालों में होती है, क्योंकि इन मामलों में गुर्दा खराब या नाकारा हो जाता है और गुर्दा खराब होने के लक्षण रोगी में कुछ दिनों के बाद ही प्रकट होते हैं। यही एक ऐसा गंभीर लक्षण है जो रोगी की गंभीर दशा को जाहिर करता है, अन्यथा पहले तो लोग देसी इलाजों में ही उलझे रहते हैं, पर तब तक बात काफी बढ़ चुकी होती है और स्थिति लाइलाज हो जाती है। अस्पतालों में सर्पदंश के जितने मामले आते हैं, उनमें से केवल छह प्रतिशत मामलों में ही काटने वाले सांप की पहचान हो पाती है। जैसा कि पहले बताया गया है, यदि सर्पदंश रोगी को तुरंत विषरोधी सीरम का उपचार उपलब्ध कराया जाए तो मृत्यु-दर काफी कम हो जाएगी। जरूरत है तो सिर्फ इस विषरोधी औषध के जन जन में प्रचार की और समुचित वितरण की।

चार बड़े विषधरों के अलावा अन्य जहरीले सांपों द्वारा दंश के मामले सौभाग्य से बहुत कम हैं। इन अन्य जहरीले सांपों के दंश के उपचार के लिए अभी कोई विषरोधी सीरम उपलब्ध नहीं है, हालांकि ऐसे एक विषरोधी सीरम का उत्पादन बैंकाक (थाइलैंड) का क्वीन साओवाभा इंस्टीट्यूट करता है। वैसे गाओमन और नागराज के दंश में हाफकिन में तैयार पोलिवालैंट विषरोधी सीरम के प्रयोग के कुछ मामले देखने में आए हैं। लेकिन हरा घोणस तथा समुद्री सर्प के दंश के मामलों में इस उपचार का कोई लाभ नहीं है। हालांकि ये सांप बहुत कम संख्या में हैं तथा ये न तो दंश करने को बहुत उत्सुक होते हैं और न ही इनका विष इतना जहरीला होता है कि इनका दंश मनुष्य के लिए घातक बन सके।

यहां हम उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु तथ पश्चिम बंगाल के सरकारी अस्पतालों के हवाले से 1969 में सर्पदंश के आंकड़े दे रहे हैं (डा. वाई. सवाई तथा डा. एम. होमा), जिससे सर्पदंश की घटनाओं को कम से कम करने के उपाय खोजे जा सकें।

काटे जाने वाले स्थान/अंग
पांव तथा टांग का निचला हिस्सा : 72 प्र.श.
हाथ तथा बांह : 25 प्र.श.
सिर और शरीर : 3 प्र.श.
(टांगों के ऊपरी हिस्से समेत)
दंश के समय (सायंकाल तथा अंधेरा होनेपर) : 68 प्र.श.
(सुबह तथा दोपहर) : 32 प्र.श.

भारत में सर्पदंश पेशेगत खतरा है यानी यह पेशे से जुड़ा जोखिम है—मुख्यतः कृषि तथा अन्य क्षेत्र के मजदूरों के पेशे से। इन लोगों को सर्पदंश का सबसे ज्यादा खतरा मानूसन के मौसम में होता है जब (क) सांप अपेक्षाकृत ज्यादा सक्रिय होते हैं, (ख) घास तथा अन्य झाड़ियां ज्यादा घनी हो जाती हैं, तथा (ग) अधिकतम मजदूर खेतों व अन्य खुले स्थानों पर कार्यरत होते हैं। ऐसे में यदि सर्पदंश के प्रति लोगों को जोरदार तरीके से आगाह किया जाए और विषरोधी औषध का बड़े पैमाने पर वितरण किया जाए तो भारत में सर्पदंश से मरने वालों की संख्या में कम से कम 50 प्रतिशत की कमी आ सकती है।

सर्पदंश से मरने वालों की सबसे अधिक संख्या बंगाल में दर्ज है। अगर देशभर में सर्पदंश का इलाज कराने वालों की प्रवृति (जिसके तहत सिर्फ दस प्रतिशत सांप के काटे ही अस्पताल जाते हैं) के आधार पर बंगाल का विश्लेषण करें तो वहां प्रतिवर्ष सर्पदंश से मरने वालों की संख्या 3,000 से कम नहीं होनी चाहिए। आज की बात करें या सौ साल पहले की, बंगाल के नादिया जिले में देश के किसी भी जिले से अधिक सर्पदंश के मामले होते हैं।

दी गई सारिणी (पृष्ठ 107-08) से भारत में क्षेत्रवार सर्पदंश के आंकड़ों का पता चलता है। इन आंकड़ों का आकलन करते समय इस बात का ध्यान रखें कि ये आंकड़े बाकायदा रिकार्ड में दर्ज रिपोर्टों के आधार पर हैं, जबकि सर्पदंश के शिकार 90 प्रतिशत तो इलाज के लिए अस्पतालों में पहुंचते ही नहीं।

भारत में सर्पदंश का क्षेत्रीय आकलन 1969*

राज्य अथा केंद्रशासित क्षेत्र		आबादी	सरकारी अस्पतालों में सर्पदंश के रोगी	मृत्यु
1.	आंध्र प्रदेश	43,502,000	141	23
2.	असम	15,947,000	141	5
3.	बिहार	56,353,000	872	21
4.	गुजरात	26,697,000	2,274	62
5.	हरियाणा	10,036,000	259	8
6.	हिमाचल प्रदेश	3,460,000	72	15
7.	जम्मू-कश्मीर	4,616,000	832	33
8.	कर्नाटक	29,299,000	682	36
9.	केरल	21,347,000	1,484	97
10.	मध्य प्रदेश	41,651,000	1,612	90
11.	महाराष्ट्र	50,412,000	992	100
12.	मणिपुर	1,072,000	682	36
13.	मेघालय	1,011,000	9	0
14.	नागालैंड	516,000	64	1
15.	उड़ीसा	21,944,000	895	27
16.	पंजाब	13,551,000	196	16 ('67)

(क्रमशः....)

राज्य अथा केंद्रशासित क्षेत्र	आबादी	सरकारी अस्पतालों में सर्पदंश के रोगी	मृत्यु
17. राजस्थान	25,765,000	1,426	62 ('68)
18. उत्तर प्रदेश	88,341,000	1,351	68
19. तमिलनाडु	41,199,000	968	31
20. त्रिपुरा	1,556,000	21	3 ('67)
21. पश्चिम बंगाल	44,312,000	7,835	384
22. अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह	115,000	171	3 ('70)
23. अरुणाचल प्रदेश	467,000	90	0 ('67)
24. चंडीगढ़	257,000	28	4 ('68)
25. दादरा एवं नगर हवेली	741,000	-	-
26. दिल्ली	4,065,000	195	4
27. गोआ, दमन और दीव	857,000	195	4 ('67)
28. लक्षद्वीप समूह	31,000	0	0
29. पांडिचेरी	471,000	97	1
कुल योग :		23,584	1,134

डा. योशियो सवाई तथा डा. एम. होमा कृत 'स्नेक बाइट्स इन इंडिया', जापान स्नेक इंस्टीट्यूट द्वारा 1975 में प्रकाशित 'द स्नेक, खंड-7 से

भारत के सांपों की जांच-सूची

प्रस्तावना

यह सूची भारतीय सांपों की सिर्फ जांच-सूची (चेक-लिस्ट) ही नहीं, उनका वर्गीकरण भी है; एम.ए. स्मिथ के ग्रंथ 'फौना ऑफ ब्रिटिश इंडिया, खंड-3' में दिए गए भारतीय सांपों के विकास-क्रम के अनुसार उन्हें सूचीबद्ध किया गया है। स्मिथ के ग्रंथ के प्रकाशन के बाद सांपों के जैव वैज्ञानिक नामों में काफी परिवर्तन आया है। हमने निजी संपर्कों द्वारा तथा ए.एस. रोमर व गार्थ अंडरवुड के शोध कार्यों की मदद से इस सूची में संशोधन का प्रयास किया है (देखें—संदर्भ ग्रंथ सूची)।

विभिन्न भारतीय भाषाओं तथा सांपों के क्षेत्रीय नामों की वजह से पैदा होने वाली उलझनों के कारण, जब भी संभव हो, हमें सांपों के वैज्ञानिक नाम ही प्रयोग करने का प्रयत्न करना चाहिए। बहरहाल, अधिकांश लोग आम प्रचलित वर्णनात्मक नामों के प्रयोग को अधिक महत्व देते हैं। आरंभिक तौर पर यदि हम चाहते हैं कि देश के ज्यादा से ज्यादा लोग सांपों को जानें-समझें, तो हमारे पास एक मानक सूची होनी चाहिए। जहां संभव हो, हम साहित्य में प्रयोग किए गए नामों पर आधारित इन सामान्य प्रचलित अंग्रेजी नामों या फिर विभिन्न चरित्रों, देसी नामों का सुझाव देते हैं। या फिर क्षेत्र अथवा वह नाम जो किसी व्यक्ति के नाम पर रखा गया या वर्णन किया गया हो।

स्थानिक आंकड़े जी.ए. बाउलैंजर, एफ. वाल तथा एम.ए. स्मिथ के सौजन्य से लिए गये हैं लेकिन हाल ही के कुछ स्त्रोतों के आधार पर कुछ नाम जोड़े तथा संशोधित किए गए हैं। इस संबंध में बहुत काम किया जाना बाकी है, और क्योंकि भारतीय सांपों के वितरण के बारे में हमारी जानकारी गंभीर रूप से कम है, अतः स्थानिक आंकड़ों का अति सामान्य होना अपरिहार्य है। पाठक जिंदा या परिरक्षित नमूना सांपों, उतरी हुई केंचुलों तथा चित्रों को भेज कर हमारी बहुत सहायता कर सकते हैं। इन प्रेषित नमूनों के साथ सही स्थान और तारीख भी जरूर भेजें, पता है—मद्रास स्नेक पार्क, मद्रास-600022।

वितरण के संबंध में जब हम 'समूचे भारत' शब्दावली का प्रयोग करते हैं, तो आवश्यक नहीं कि उसका आशय यह हो कि सांप आम है, बल्कि यह कि अमुक जाति व्यापक रूप में वितरित है।

भारत के सांपों की जांच-सूची

गण (आर्डर) : सर्पेन्टीज (Serpentes)
अवगण (इन्फ्रा-आर्डर) : स्कोलेकोफिडिया (Scolecophidia)

वैज्ञानिक नाम	*अंग्रेजी नाम*	*क्षेत्र*
कुल - टाइफलोपिडी (Typhlopidae)		
उपकुल - *टाइफलोपिनी (Typhlopinae)*		
वंश-*टाइफलीना* - (अंधा सांप)		
जातियां :		
1. *पॅरेक्टस*	स्लैंडर वौर्म स्नेक	समूचा भारत
2. *सामेसीज*	गुंथर्स वौर्म स्नेक	पूर्वी भारत
3. *ब्रामीना*	कॉमन वौर्म स्नेक	समूचा भारत
4. *थर्स्टनी*	थर्स्टन्स वौर्म स्नेक	दक्षिण-पश्चिम भारत
5. *जेर्डोनी*	जेर्डेन्स वौर्म स्नेक	पूर्वी हिमालय, असम
6. *टेन्यूइकॉलिस*	पीटर्स वौर्म स्नेक	पूर्वी हिमालय, असम
7. *डाइआर्दी*	लार्ज वौर्म स्नेक	असम
8. *ओटेसी*	ओटस वौर्म स्नेक	अंडमान द्वीप समूह
9. *बोथ्रिओरिंकस*	असम वौर्म स्नेक	असम
10. *टिंडाली*	मालाबार वौर्म स्नेक	दक्षिण-पश्चिमी घाट
11. *बेडोमाई*	बडोम्स वौर्म स्नेक	दक्षिण भारत की पहाड़ियां

12.	*ऑलीगोलेपिस*	वाल्स वौर्म स्नेक	पूर्वी हिमालय
13.	*अंडमानेन्सिस*	अंडमान वौर्म स्नेक	अंडमान द्वीप समूह
14.	*एक्यूटस*	वीक्ड वौर्म स्नेक	मध्य भारत

कुल – यूरोपेल्टिडे (शील्डटेल स्नेक्स)

वंश – *मेलानोफिडियम*

जातियां

15.	*पंक्टेटम*	पाइड बैली शील्डटेल	गोआ से दक्षिण केरल की पहाड़ियों तक
16.	*बाइलिनियेटम*	यैलो स्ट्राइप्ड शील्डटेल	कालिकट जिला, केरल
17.	*वाइनौडेंस*	वाइनाड शील्डटेल	कालिकट, कुर्ग, कर्नाटक

वंश–*प्लेटीप्लैक्ट्रस*

जातियां :

18.	*ट्राइलिनीएटस*	ब्लैक-लाइन्ड शील्डटेल	अन्नामलाई, दक्षिण केरल
19.	*मदुरैंसिस*	मदुराई शील्डटेल	पालनी, दक्षिण केरल की पहाड़ियां

वंश–*टेरेट्रूरस*

जाति :

20.	*सैंग्विनियस*	वेस्टर्न शील्डटेल	वायनाड, अन्नामलाई, द. केरल

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी नाम	क्षेत्र
वंश - *ब्रेकी ओफिडियम*		
21. *रोंडोगेस्टर*	वाल्स शील्डटेल	पालनी पहाड़ियां
वंश - *प्लैक्ट्रूरस*		
जातियां :		
22. *पैरॉटैटी*	पैरोटेट्स शील्डटेल	नीलगिरी, अन्नामलाई
23. *गूएंथेरी*	पर्पल शील्डटेल	सिसपारा घाट, नीलगिरी
24. *ऑरियस*	गोल्डन शील्डटेल	चम्ब्रा पहाड़ियां
25. *कैनारिकस*	कनारा शील्डटेल	दक्षिण कनारा जिला, कर्नाटक
वंश-*यूरोपेल्टिस*		
जातियां :		
26. *एलियोटी*	इलियट्स शील्डटेल	दक्षिण-पश्चिमी घाट, पूर्वी घाट,
27. *निटीडस*	कोचीन शील्डटेल	अन्नामलाई पहाड़ियां
28. *ओसीलैटस*	नीलगिरी शील्डटेल	नीलगिरी तथा अन्नामलाई पहाड़ियां
29. *डिंडीगलेंसिस*	डिंडीगल शील्डटेल	सिरुमलाई पहाड़ियां
30. *बैडोमाई*	बेडोम्स शील्डटेल	अन्नामलाई पहाड़ियां
31. *मैक्रोरिंक्स*	अन्नामलाई शील्डटेल	अन्नामलाई पहाड़ियां
32. *वुड मैसोनी*	ब्लैक-वैलीड शील्डटेल	अन्नामलाई, पालनी, नीलगिरी, तिरुनेलवेली पहाड़ियां

33.	*मैक्रोलेपिस* मैक्रोलेपिस	बॉम्बे शील्डटेल	बंबई के निकट की पहाड़ियां
33.क	*एम. महाबलेश्वरेंसिस*	महाबलेश्वर शील्डटेल	महाबलेश्वर
34.	*सीलैनिकस*	केरल शील्डटेल	गोवा से दक्षिण केरल तक, शेवारॉयस
35.	*आर्कटीसेप्स*	तिरुनेलवेली शील्डटेल	दक्षिण केरल, तिरुनेलवेली पहाड़ियां
36.	*रुब्रोमैक्यूलेटस*	रैडस्पॉटेड शील्डटेल	अन्नामलाई तथा नीलगिरी पहाड़ियां
37.	*रुब्रोलिनिएटस*	रैड लाइन्ड शील्डटेल	अन्नामलाई तथा दक्षिण केरल की पहाड़ियां
38.	*माइहेंड्रे*	बार्ड शील्डटेल	नीलगिरी, दक्षिण केरल
39.	*ब्रौगामी*	सिरुमलाई शील्डटेल	पालनी तथा सिरुमलाई पहाड़ियां
40.	*मैकुलेटस*	रैड साइडेड शील्डटेल	अन्नामलाई तथा दक्षिण केरल की पहाड़ियां
41.	*पीटर्सी*	पीटर्स शील्डटेल	अन्नामलाई पहाड़ियां
42.	*लियूरा*	अशांबु शील्डटेल	मदुरै तथा तिरुनेलवेली पहाड़ियां
43.	*पलनेन्सिस*	पालनी शील्डटेल	पालनी तथा दक्षिण केरल की पहाड़ियां
44.	*स्मिथी*	वायलेट शील्डटेल	अन्नामलाई पहाड़ियां

वंश-*राइनोफिस*

जातियां :

45.	*सैंग्विनियस*	रैड-बैलीड शील्डटेल	दक्षिण कनारा जिला, नीलगिरी, तिरुनेलवेली
46.	*फर्ग्युसनिएनस*	कार्डामोन शील्डटेल	कार्डामोन पहाड़ियां, केरल

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी नाम	क्षेत्र
47. *ट्रावनकोरिकस*	ट्रावनकोर शील्डटेल	केरल
कुल-जीनोपेल्टिडी		
वंश-*जीनोपेल्टिस*		
जाति :		
48. *यूनिकलर*	सनबीम स्नेक	अंडमान द्वीप समूह
कुल-बोइडी		
उपकुल-पाइथोनिनी		
वंश-*पाइथन*		
जातियां :		
49. *मोलुरस*	इंडियन पाइथन	*समूचा भारत*
50. *रेटीकुलेटस*	रीगल पाइथन	निकोबार द्वीप समूह
उपकुल-बोआइनी		
वंश-*एरिक्स*	सैंड बोआ	
जातियां :		
51. *कोनिकस*	कॉमन सैंडबोआ	समूचा भारत (उत्तर-पूर्व को छोड़कर)
52. *जोनाई*	रैंड ऑर ब्लंट-टेल्ड सैंड बोआ	समूचा भारत (खुश्क क्षेत्र)

अवगण : सीनोफिडिया

कुल-डिप्साडिडी		
उपकुल-पैरीनी		
वंश-*पेरियास*	स्नेल-इटिंग स्नेक	
जातियां :		
53. *मोंटीकोला*	असम स्नेल ईटर	पूर्वी हिमालय, असम
54. *मैक्यूलेरियस*	दार्जीलिंग स्नेल ईटर	दार्जीलिंग
उपकुल-जीनोडर्मेटिनी		
वंश-*स्टालिक्ज्काइया*		
जाति :		
55. खासीएन्सिस	खासी अर्थ स्नेक	असम
उपकुल-लाइकोडोंटिनी		
वंश-*लाइकोडॉन*	वुल्फ स्नेक	
जातियां :		
56. *ट्रावनकोरिकस*	ट्रावनकोर वुल्फ स्नेक	पश्चिमी घाट, आंध्रप्रदेश
57. *जारा*	यैलो-स्पैकल्ड वुल्फ स्नेक	उत्तर प्रदेश, गंजाम, पूर्वी हिमाचल, असम
58. *स्ट्रीएटस*	बार्ड वुल्फ स्नेक	समूचा भारत
59. *फ्लेवोमैकुलेटस*	यैलो-स्पॉटेड वुल्फ स्नेक	उत्तर-पश्चिमी घाट

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी नाम	क्षेत्र
60. *मैकीनोनी*	मैकीनोन्स वुल्फ स्नेक	पश्चिमी हिमालय
61. *ऑलिकस*	कॉमन वुल्फ स्नेक	समूचा असम
62. *फेशिएटस*	बैंडेड वुल्फ स्नेक	पूर्वी हिमालय, भारत
63. *तिवारई*	तिवारीज वुल्फ स्नेक	अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह
वंश-*ओलिगोडॉन*	कुकरी स्नेक	
जातियां :		
64. *साइक्लूरस*	कैंटर्स कुकरी स्नेक	बंगाल, असम
65. *जगलैंडिफर*	दार्जीलिंग कुकरी स्नेक	दार्जीलिंग
66. *एल्बोसिंक्टस*	व्हाइट-बार्ड कुकरी स्नेक	पूर्वी हिमालय, असम
67. *मेलाजोनोटस*	वाल्स कुकरी स्नेक	असम
68. *वुडमैसोनी*	यैलो स्ट्राइप्ड कुकरी स्नेक	अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह
69. *सीनेरियस*	ब्लैक-बार्ड कुकरी स्नेक	असम
70. *टेनियोलेटस*	रसैल्स कुकरी स्नेक	समूचा भारत
71. *थियोबाल्डी*	मंडले कुकरी स्नेक	असम
72. *वीनसटस*	ब्लैक-स्पॉटेड कुकरी स्नेक	गोवा के दक्षिण में पश्चिमी घाट
73. *ट्रावनकोरिकस*	ट्रावनकोर कुकरी स्नेक	पालघाट के दक्षिण में पश्चिमी घाट
74. *आर्नेन्सिस*	कॉमन कुकरी स्नेक	समूचा भारत

75. *एरिथ्रोरैकिस*	रैड-स्ट्राइप्ड कुकरी स्नेक	असम
76. *मेलानियस*	ब्लैक कुकरी स्नेक	दार्जीलिंग
77. *ब्रेवीकौडा*	स्ट्राइप्ड कुकरी स्नेक	गोवा के दक्षिण में पश्चिमी घाट
78. *डोर्सेलिस*	स्पॉट-टेल्ड कुकरी स्नेक	पूर्वी हिमालय
79. *एरिथ्रोगैस्टर*	रैड-बैलीड कुकरी स्नेक	पूर्वी हिमालय
80. *एफिनिस*	वेस्टर्न कुकरी स्नेक	गोवा के दक्षिण में पश्चिमी घाट
वंश-*कैलामारिया*		
जाति :		
81. *पेवीमेंटैटा*	फाल्स वुल्फ स्नेक	असम
वंश-*डाइनोडॉन*		
जातियां :		
82. *सेप्टेंट्रायोनेलिस*	गुंथर्स फाल्स वुल्फ स्नेक	पूर्वी हिमालय, असम
83. *गैम्मीआई*	सिक्किम फाल्स वुल्फ स्नेक	सिक्किम, दार्जीलिंग
वंश-*ड्रायोकैलामस*		
जातियां :		
84. *निम्फा*	कॉमन ब्राइडल स्नेक	दक्षिण भारत तथा उड़ीसा का पूर्वी तट
85. *ग्रेसीलिस*	गुंथर्स ब्राइडल स्नेक	पश्चिमी घाट, उड़ीसा

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी नाम	क्षेत्र
वंश-*ट्रैचिसचियुम*		
जातियां :		
86. *मौंटीकोला*	असम ओरिएंटल वौर्म स्नेक	असम
87. *फस्कम*	दार्जीलिंग ओरिएंटल वौर्म स्नेक	पूर्वी हिमालय
88. *गुएनथेरी*	गुंथर्स ओरिएंटल वौर्म स्नेक	सिक्किम, दार्जीलिंग
89. *टेनुइसेप्स*	औरेंज बैल्टेड ओरिएंटल वौर्म स्नेक	पूर्वी हिमालय
90. *लेव*	ऑलिव ओरिएंटल वौर्म स्नेक	पश्चिमी हिमालय
वंश-*रैबडोप्स*	फारेस्ट स्नेक	
जातियां :		
91. *ओलिवैसियस*	ऑलिव फारेस्ट स्नेक	पश्चिमी घाट (वाइनाड)
92. *बाईकलर*	यैलो बैलीड फारेस्ट स्नेक	खासी तथा मिश्मी पहाड़ियां, असम
वंश-*ब्लीथिया*		
जाति :		
93. *रैटीकुलाटा*	इरिडीसैंट स्नेक	असम
वंश-*जाइलोफिस*		
जातियां :		
94. *पैरोटेटी*	स्ट्राइप्ड स्माल-हैडेड स्नेक	दक्षिण-पश्चिमी घाट

95. *स्टैरोरिंकस*	गुंथर्स स्माल-हैडेड स्नेक	दक्षिण-पश्चिमी घाट
उपकुल साइबिनोफिनी		
वंश-*साइबिनोफिस*	ब्लैक-हैडेड स्नेक	
जातियां :		
96. *कॉलरिस*	कोलर्ड ब्लैक-हैडेड स्नेक	पूर्वी हिमालय
97. *सबपंक्टेटस*	डुमेरिल्स ब्लैक-हैडेड स्नेक	दक्षिण-पश्चिम, मध्य तथा उत्तर-पूर्वी भारत
98. *बिस्ट्रिगैटस*	निकोबार ब्लैक-हैडेड स्नेक	कामोर्ता (निकोबार द्वीप समूह)
99. *सैगिटैरियस*	कैंटर्स ब्लैक-हैडेड स्नेक	पश्चिमी हिमालय; मध्य तथा उत्तर-पूर्व भारत
कुल-नैट्रिसिडे		
वंश-*नैट्रिक्स*		
जातियां :		
100. *निकोबारेंसिस*	निकोबार वाटर स्नेक	कामोर्ता (निकोबार द्वीप समूह)
101. *पिएली*	पील्स वाटर स्नेक	असम
वंश-*एम्फिएस्मा*		
जातियां :		
102. *स्टोलाटा*	स्ट्राइप्ड कीलबैक	समूचा भारत
103. *बैडोमी*	बैडोमीज कीलबैक	पश्चिमी घाट
104. *पैरेलैला*	बाउलैंजर्स कीलबैक	सिक्किम, असम

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी नाम	क्षेत्र
105. *खासीएन्सिस*	खासी कीलबैक	असम
106. *प्लैटीसेप्स*	माउंटेन कीलबैक	हिमालय, असम
107. *मोडेस्टा*	गुंथर्स कीलबैक	असम
108. *जेन्यूरा*	चेरापूंजी कीलबैक	असम
109. *मौंटीकोला*	ग्रीन वेस्टर्न कीलबैक	गोवा के दक्षिण में पश्चिमी घाट
वंश- *रैबडोफिस*		
जातियां :		
110. *सबमिनिएटा*	रैड-नैक्ड कीलबैक	पूर्वी हिमालय
111. *हिमालयाना*	हिमालयन कीलबैक	पूर्वी हिमालय, असम
वंश-*स्यूडोजेनोडन*		
जातियां :		
112. *मैक्रोप्स*	फाल्स कोबरा	पूर्वी हिमालय
वंश-*मैक्रोपिस्थोडॉन*		
जाति :		
113. *प्लंबिकलर*	ग्रीन कीलबैक	समूचा भारत

वंश-*जीनोक्रोफिस*		
जातियां :		
114. *पिस्केटर*	चैकर्ड कीलबैक वाटर स्नेक	समूचा भारत
115. *सेरासोगेस्टर*	डार्क-बैलीड मार्श स्नेक	उत्तर प्रदेश, बंगाल, असम
वंश-*एट्रेशियम*		
जाति :		
116. *शिस्टोसम*	ओलिव कीलबैक वाटर स्नेक	समूचा भारत (हिमालय छोड़कर)
कुल-एक्रोकोर्डिडी		
जाति :		
117. *ग्रैनुलेटस*	फाइल स्नेक	पश्चिमी तटीय क्षेत्र, उत्तर-पश्चिम तटीय क्षेत्र, निकोबार द्वीप समूह
कुल-कोल्यूब्राइडी		
उपकुल-*कोल्यूब्राइनी*		
वंश-*एलाफे*		
जातियां :		
118. *प्रासीना*	ग्रीन ट्रिंकैत स्नेक	पूर्वी हिमालय, असम, अंडमान द्वीप समूह
119. *फ्रेनेटा*	असम ट्रिंकैत स्नेक	असम
120. *रैडिएटा*	कॉपरहैड ट्रिंकैत स्नेक	उड़ीसा, पूर्वी हिमालय

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी नाम	क्षेत्र
121. *हेलेना*	कॉमन ट्रिंकैत स्नेक	समूचा भारत
122. *टीनियूरा*	स्ट्राइप्ड ट्रिंकैत स्नेक	दार्जीलिंग
123. *हॉग्सनी*	हिमालयन ट्रिंकैत स्नेक	हिमालय--कश्मीर से सिक्किम तक, असम
124. *कैंटोरिस*	ईस्टर्न ट्रिंकैत स्नेक	पूर्वी हिमालय
125. *फ्लेवोलिनीएटा*	यैलो-स्ट्राइप्ड ट्रिंकैत स्नेक	अंडमान द्वीप समूह
126. *पोफिरीसिया*	ब्लैक-बैंडेड ट्रिंकैत स्नेक	पूर्वी हिमालय, असम
वंश-*गोनिओसोमा*		
जाति :		
127. *ऑक्सीफैलम*	रैड-टेल्ड ट्रिंकैत स्नेक	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
वंश—*टाइयास*		
जाति :		
128. *म्यूकोसस*	रैट स्नेक अथवा धामन	समूचा भारत
वंश—*जाओसिस*		
जाति :		
129. *नाइग्रोमार्जिनेटस*	ग्रीन रैट स्नेक	पूर्वी हिमालय

वंश—*आर्जीरोजेना*

जातियां :

130. *वैंट्रोमैक्यूलेटस*	ग्लौसी-बैलीड रेसर	पश्चिमी हिमालय, उत्तर-पश्चिम भारत का मैदानी क्षेत्र
131. *फेसियोलेटस*	बैंडेड रेसर	समूचा भारत (उत्तर-पश्चिम क्षेत्र को छोड़कर)
132. *ग्रेसीलिस*	गुंथर्स रेसर	महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश

वंश—*स्पैलरोसोफिस*

जातियां :

133. *डायडेमा*	रॉयल स्नेक	उत्तर-पश्चिम भारत (उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब)
134. *एरिनेरियस*	रैड-स्पॉटेड स्नेक	राजस्थान

वंश—*आफियोड्रिस*

जाति :

135. *डोरी*	ग्रीन स्नेक	मणिपुर

वंश—*लियोपैल्टिस* स्ट्राइप्ट-नैक स्नेक

जातियां :

136. *फ्रेनेटस*	स्ट्राइप्ड-नैक स्नेक	असम
137. *स्टोलिज्के*	स्टोलिक्ज्काज स्ट्राइप्ड नैक स्नेक	सिक्किम, दार्जीलिंग, असम

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी नाम	क्षेत्र
138. *कैलामेरिया*	लैसर स्ट्राइप्ड-नैक स्नेक	भारतभर के पहाड़ी क्षेत्र (सुदूर उत्तर-पश्चिम को छोड़कर)
139. *निकोबारिएन्सिस*	निकोबार स्ट्राइप्ड-नैक स्नेक	कामोर्ता (निकोबार द्वीप समूह)
140. *रैप्पी*	हिमालयन स्ट्राइप्ड-नैक स्नेक	हिमालय
वंश—*कोरोनेला*		
जाति :		
141. *ब्रैकियूरा*	स्मूथ स्नेक	उत्तरी महाराष्ट्र
वंश—*डेंड्रेलैफिस*	ट्री स्नेक	
जातियां :		
142. *पिक्टस*	पेंटेड ब्रोंजबैक ट्री स्नेक	समूचा भारत
143. *सिआनोक्लोरिस*	ग्रीन ब्रोंजबैक ट्री स्नेक	दार्जीलिंग, असम, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
144. *ग्रैंडोक्यूलिस*	लार्ज-आइड ब्राउन ट्री स्नेक	पूर्वी हिमालय, असम
145. *गोरी*	हिमालयन ब्रोंजबैक ट्री स्नेक	पूर्वी हिमालय, असम
146. *बाईफ्रेनैलिस*	बाउलैंजर्स ब्रोंजबैक ट्री स्नेक	पश्चिमी भारत
147. *कॉडोलीनिएटा*	स्ट्राइप-टेल्ड ब्रोंजबैक ट्री स्नेक	दक्षिण केरल, रामनाथपुरम जिला, तमिलनाडु

148. *ट्रिस्टिस*	कॉमन ब्रोंजबैक ट्री स्नेक	समूचा भारत
वंश—*क्राईसोपेलिया*	फ्लाइंग स्नेक	
जातियां :		
149. *ऑर्नेटा*	ओर्नेट फ्लाइंग स्नेक	गोवा के दक्षिण में पश्चिमी घाट, उड़ीसा, बंगाल, असम, बिहार, त्रिपुरा
150. *पैराडिसी*	पैराडाइज फ्लाइंग स्नेक	नारकोंडम, अंडमान द्वीप समूह
वंश—*सैम्मोफिस*	सैंड स्नेक	
जातियां :		
151. *शोकारी*	डेजर्ट सैंड स्नेक	राजस्थान, पंजाब, कश्मीर,
152. *कांडानेरस*	हिमालयन सैंड स्नेक	पश्चिमी हिमालय तथा उत्तर-मध्य भारत
153. *लोंगीफ्रांस*	स्टाउट सैंड स्नेक	महाराष्ट्र
154. *लीथी*	लीथ्स सैंड स्नेक	पश्चिमी भारत, पूना से कश्मीर तक
वंश—*सैम्मोडाइनैस्टीस*		
जाति :		
155. *पल्वेरुलैंटस*	मौक वाइपर	पूर्वी हिमालय
वंश—*अहेटूला*	वाइन स्नेक	
जातियां :		
156. *पैरोटैटी*	ब्रोंज-हैडेड वाइन स्नेक	दक्षिण-पश्चिमी घाट

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी नाम	क्षेत्र
157. *डिस्पार*	गुंथर्स वाइन स्नेक	दक्षिण-पश्चिमी घाट
158. *फ्रंटीसिंक्टस*	रिवर वाइन स्नेक	दार्जीलिंग, असम
159. *प्रैसिनस*	शॉर्ट-नोज्ड वाइन स्नेक	पूर्वी हिमालय
160. *नेसुटस*	कॉमन वाइन स्नेक	समूचा भारत (उत्तर-पश्चिम क्षेत्र को छोड़कर)
161. *पल्वेरुलेंटस*	ब्राउन वाइन स्नेक	दक्षिण-पश्चिमी घाट
कुल—होमालोप्सिडी		
उपकुल—बोइगिनी		
वंश—*बोइगा*	कैट स्नेक	
जातियां :		
162. *मल्टीमैक्युलेटा*	लार्ज-स्पॉटेड कैट स्नेक	असम
163. *ओक्रैसिया*	टॉनी कैट स्नेक	पूर्वी हिमालय, असम, अंडमान निकोबार द्वीप समूह
164. *ट्राइगोनाटा*	कॉमन कैट स्नेक	समूचा भारत
165. *गोकूल*	ईस्टर्न कैट स्नेक	पूर्वी हिमालय, असम
166. *क्विनकुन्सिएटा*	असम कैट स्नेक	असम
167. *सीलोनेन्सिस*	सीलोन कैट स्नेक	पश्चिमची घाट, उड़ीसा, असम, नेपाल, अंडमान द्वीप समूह

168. *मल्टीफैसिएटा*	हिमालयन कैट स्नेक	हिमालय
169. *साइनोडॉन*	बंगाल कैट स्नेक	उत्तरी बंगाल, असम
170. *डिग्टोनी*	ट्रावनकोर कैट स्नेक	केरल
171. *फोर्स्टेनी*	फोर्स्टेन्स कैट स्नेक	पश्चिमी घाट, उत्तर-पूर्व भारत
172. *साइएनिया*	ग्रीन कैट स्नेक	दार्जीलिंग, असम
उपकुल होमालोप्सिनी	रीयर-फैंग्ड वाटर स्नेक	
वंश—*एनहाइड्रिस*		
जातियां :		
173. *एनहाइड्रिस*	कॉमन स्मूथ वाटर स्नेक	उत्तर-पूर्व भारत
174. *डुसुमियेरी*	डुसुमियेर्स स्मूथ वाटर स्नेक	बंगाल, केरल का तटीय क्षेत्र
175. सीबोल्डी	सीबोल्डस स्मूथ वाटर स्नेक	समूचा भारत (खुश्क क्षेत्रों को छोड़कर)
वंश—*सर्बेरस*		
जाति :		
176. *रिन्कॉप्स*	डौग-फेस्ड वाटर स्नेक	भारत का समूचा तटीय क्षेत्र, अंडमान तथा निकोबार द्वीप-समूह
वंश—*जिरार्डा*		
जाति :		
177. *प्रीवोस्टियाना*	ग्लॉसी मार्श स्नेक	भारत का तटीय क्षेत्र

वैज्ञानिक नाम	*अंग्रेजी नाम*	*क्षेत्र*
वंश—*फोर्डोनिया*		
जाति :		
178. *ल्यूकोबेलिया*	व्हाइट-बैलीड मैंग्रोव स्नेक	सुंदरबन, निकोबार द्वीप समूह
वंश—*कैंटोरिया*		
जाति :		
179. *वायोलेसिया*	यैलो-बैंडेड मैंग्रोव स्नेक	अंडमान द्वीप समूह
उपकुल—डेसीपेल्टिनी		
वंश—*इलाचिस्टोडॉन*		
जाति :		
180. *वेस्टरमनी*	इंडियन एग-ईटर	उत्तर बंगाल, बिहार
कुल--एल्फीडी		
उपकुल—एल्पीनी		
वंश-*बुंगारस*	करैत	
जातियां :		
181. *वाली*	वाल्स करैत	उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार, उड़ीसा
182. *बुंगारॉइडीस*	हिमालयन करैत	पूर्वी हिमालय, असम
183. *लिविडस*	लैसर ब्लैक करैत	उत्तरी बंगाल, असम

184. *नाइजर*	ब्लैक करैत	पूर्वी हिमालय, असम
185. *सीरूलियस*	कॉमन करैत	समूचा भारत, अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह
186. *फेसिएटस*	बैंडेड करैत	उड़ीसा, बिहार, बंगाल, असम
187. *मल्टीसिंक्टस*	मैनी बैंडेड करैत	अंडमान निकोबार द्वीप समूह
वंश—*कैलोफिस*	कोरल स्नेक	
जातियां :		
188. *मेलान्यूरस*	स्लैंडर कोरल स्नेक	समूचा भारत (उत्तर-पश्चिम क्षेत्र को छोड़कर)
189. *नाइग्रेसेन्स*	स्ट्राइप्ड कोरल स्नेक	दक्षिण-पश्चिमी भारत
190. *बैडोमाई*	बैडोम्स कोरल स्नेक	दक्षिण-पश्चिमी भारत
191. *मैकक्लीलैंडी*	मैकक्लीलैंडस कोरल स्नेक	पूर्वी हिमालय, असम
192. *बाइब्रोनी*	बाइब्रोन्स कोरल स्नेक	दक्षिण-पश्चिमी घाट
वंश—*नाजा*	कोबरा	
जातियां तथा उप-जातियां :		
193. *नाजा नाजा*	बाइनोसिलेट अथवा स्पैक्टेकल्ड अथवा कॉमन कोबरा	समूचा भारत
193. (क). *नाजा काओथिया*	मोनोसिलेट, मोनोकल्ड अथवा बंगाल कोबरा	बंगाल, असम, अंडमान द्वीप समूह
193. (ख). *नाजा ऑक्सीयाना*	ब्लैक कोबरा	उत्तर-पश्चिम भारत

वैज्ञानिक नाम	*अंग्रेजी नाम*	*क्षेत्र*
वंश—*ओफियोफैगस*		
जाति :		
194. *हन्ना*	किंग कोबरा	पश्चिमी घाट--गोवा के दक्षिण में, हिमालय,
	उड़ीसा, बंगाल, अंडमान द्वीप समूह	
उपकुल—हाइड्रोफिनी	सी स्नेक	
वंश—*लैटिकॉडा*		
जातियां :		
195. *लैटिकॉडा*	कॉमन एम्फीबियस सी स्नेक	बंगाल की खाड़ी, निकोबार द्वीप समूह
196. *काल्यूब्रिना*	कोलुब्राइन एम्फीबियस सी स्नेक	बंगाल की खाड़ी, अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह
वंश—*प्रीस्क्यूटैटा*		
जाति :		
197. *वाइपरीना*	वाइपरीन सी स्नेक	हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी
वंश—*केरिलिया*		
जाति :		
198. *जेर्डोनी*	जेर्डन्स सी स्नेक	बंगाल की खाड़ी

वंश—*एन्हाइड्रिना*		
जाति :		
199. *शिस्टोसा*	हुक-नोज्ड सी स्नेक	बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर
वंश-*हाइड्रोफिस*		
जातियां :		
200. *निग्रोसिंक्टस*	ब्लैक-बैंडेड सी स्नेक	बंगाल की खाड़ी
201. *स्पाइरैलिस*	यैलो सी स्नेक	हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी
202. *ऑब्सक्यूरस*	एस्ट्यूआरिन सी स्नेक	बंगाल की खाड़ी, चिल्का झील
203. *स्यनोसिंक्टस*	एन्यूलेटेड सी स्नेक	हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी
204. *स्ट्रिक्टीकोलिस*	बंगाल सी स्नेक	बंगाल की खाड़ी
205. *ऑर्नेटस*	कोचीन बैंडेड सी स्नेक	हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी
206. *लेपिमॉइडीस*	पर्शियन गल्फ सी स्नेक	हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी
207. *मैमीलेरिस*	बॉम्बे सी स्नेक	हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी
208. *सीरूलेसेन्स*	मालक्का सी स्नेक	हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी
209. *फैसिएटस*	बैंडेड सी स्नेक	हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी
वंश—*लैपेमिस*		
जाति :		
210. *कर्टस*	मालाबार सी स्नेक	हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी
वंश—*एस्ट्रोशिया*		
211. *स्टोकेसी*	लार्ज-हैडेड सी स्नेक	बंगाल की खाड़ी

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी नाम	क्षेत्र
वंश—*माइक्रोसेफैलोफिस*		
जातियां :		
212. *ग्रेसिलिस*	कॉमन-नैरो-हैडेड सी स्नेक	हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी
213. *कैंटोरिस*	कैंटर्स नैरो-हैडेड सी स्नेक	हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी
वंश—*पेलामिस*		
जाति :		
214. *प्लैटूरस*	यैलो एंड ब्लैक सी स्नेक	हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी
कुल—वाइपेरिडी		
उपकुल—वाइपेरिनी		
वंश—*वाइपेरा*		
जातियां :		
215. *रसेलाई*	रसेल्स वाइपर	समूचा भारत
216. *लेबेटीना*	लेवैंटाइन वाइपर	कश्मीर
वंश—*एकिस*		
जाति :		
217. *कैरिनैटस*	सॉ-स्केल्ड वाइपर	समूचा भारत (सामान्यतः खुश्क क्षेत्र)
उपकुल—क्रोटैलिनी		
वंश—*एग्किस्ट्रोडॉन*		

जातियां :

218. *हिमालयनस*	हिमालयन पिट वाइपर	पश्चिमी हिमालय
219. *हाइप्नेल*	हम्प-नोज्ड पिट वाइपर	दक्षिण-पश्चिमी घाट

वंश—*ट्राइमेरिसुरस*

जातियां :

220. *मैक्रोलेपिस*	लार्ज-स्केल्ड ग्रीन पिट वाइपर	दक्षिण-पश्चिमी घाट
221. *मालाबारिकस*	मालाबार रॉक पिट वाइपर	दक्षिण-पश्चिमी घाट
222. *स्ट्राइगैटस*	हॉर्स-शू पिट वाइपर	दक्षिण-पश्चिमी घाट
223. *ग्रैमिनियस*	बैंबू पिट वाइपर	उत्तर-पश्चिमी घाट, मध्य तथा पूर्वी भारत की पहाड़ियां
224. *म्यूक्रोस्क्वामैटस*	ब्राउन स्पॉटेड पिट वाइपर	असम
225. *मौंटीकोला*	ब्लॉच्ड पिट वाइपर	पूर्वी हिमालय, असम
226. *जेर्डोनी*	जेर्डन्स पिट वाइपर	पूर्वी हिमालय, असम
227. *स्टेज्नेगेरी*	स्टेज्नेगर्स पिट वाइपर	पूर्वी हिमालय, असम
228. *पोपेयोरम*	पोप्स ग्रीन पिट वाइपर	पूर्वी हिमालय, असम
229. *कैंटोरी*	कैंटर्स पिट वाइपर	निकोबार द्वीप समूह
230. *परप्यूरियोमैकुलेटस एंडरसोनी*	अंडमान पिट वाइपर	अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह
231. *एरिथ्रूरस*	स्पॉट-टेल्ड पिट वाइपर	पूर्वी हिमालय, असम
232. *एल्बोलैब्रिस*	ग्रीन पिट वाइपर	हिमालय, अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह
233. *लैबिएलिस*	निकोबार पिट वाइपर	निकोबार द्वीप समूह

सांपों के देसी नाम

भारतीय भाषाओं में सांपों के नामों के चुनाव की सूची को कम या छोटा कर पाना मुश्किल है क्योंकि सर्वाधिक आम और बेहद विषैले सांपों के आमतौर पर कई कई नाम मिल जाएंगे, लेकिन अपेक्षाकृत कम परिचित सांपों के लिए कोई नाम ही नहीं है। सामान्य प्रवृति है कि अपेक्षाकृत कम परिचित सांप को लोग उससे मिलती-जुलती शक्ल वाले परिचित सांप के नाम से ही पुकारने लगते हैं। अतः कोई भी बैंडेड सांप लोगों के लिए तमिल में 'कट्टू विरियान' (करैत) हो जाता है और बहुत से स्थानों पर तो लगभग हर सांप 'कोबरा' का स्थानीय संस्करण बन जाता है। यहां जो सूची दी जा रही है, स्थानीय सांपों के नामों के मानकीकरण का प्रारंभिक प्रयास है। पाठकों को चाहिए कि वे अपने यहां के स्थानीय सांपों के नाम मद्रास के स्नेक पार्क को भेजें, ताकि उनकी सूची तैयार हो सके। दूसरे क्षेत्रों या स्थानों से जानकारी अथवा सूचना के अभाव में हम अधिक देसी नामों के सूची में शामिल नहीं कर पा रहे। और यदि सुने-सुनाए आधार पर बिना पुष्टि किए ही नामों को सूचीबद्ध किया जाए, तो उससे भ्रामक स्थिति बन जाएगी।

	अंग्रेजी	*हिंदी*	*तमिल*	*बांग्ला*	*ओड़िआ*
1.	वौर्म स्नेक	अंधा सांप	सियर पाम्बू	पुइएन	तेलिया सापा
2.	शील्डटेल स्नेक	-	मान पाम्बू	-	-
3.	पाइथन	अजगर	मलाई पाम्बू या दासारी पाम्बू	मोयाल	अजगरा, बूढ़ा सापा, बोडा सापा
4.	कॉमन सैंड बोआ	माटी का सांप	मान पाम्बू या पोडियान	बाली बोर्हा	बोडा सापा
5.	रैड सैंड बोआ	दोमुंहा सांप	सोप मुन पाम्बू	-	दोमुंडिया
6.	वुल्फ स्नेक	संखारा	नेई पाम्बू या वीडू पाम्बू	-	बोडा, जतिया सापा

7.	कुकरी स्नेक	कुकरी सांप	येन्नाई पानियन	उदोय काल	-
8.	स्ट्राइप्ड कीलबैक	हुर्वा	निकितान कुट्टी या पुल-एरी पाम्बू	हेले	कौचिया, ब्राह्ममुनि, माटीबिरादी, माटी-बिरादा
9.	ग्रीन कीलबैक	हरा नाग	पछाई 'नागम्'	मेतुली	-
10.	चैकर्ड कीलबैक वाटर स्नेक	पानी का सांप	थन्नी पाम्बू	जोल ढनोरा	ढांडा, पानीढांडा
11.	ऑलिव कीलबैक वाटर स्नेक	हरा पानी का सांप	पछाई थन्नी पाम्बू	-	-
12.	ट्रिंकैट स्नेक	-	माइक्रो पाम्बू	-	-
13.	रैट स्नेक	धामन	सराई पाम्बू	धानारस	धामना
14.	बैंडेड रेसर	-	वोड़ु-काली पाम्बू	-	-
15.	रॉयल स्नेक	रजत बांसी	-	-	-
16.	ब्रोंजबैक ट्री स्नेक	लाल धामन या जर्द का धामन	कोम्बेरी मुक्कन या मार्राम-एरी पाम्बू	बेताछरहा	-
17.	फ्लाइंग स्नेक	-	पर्राकम पाम्बू	काल नागिनी	-
18.	वाइन अथवा ग्रीन स्नेक	हरा सांप	पछाई पाम्बू	लौडोगा	लौडंका, लौडंकिया
19.	कैट स्नेक	-	पूनाई पाम्बू या वोल्लाई पाम्बू	बांका राज	दलुआ नाग

	अंग्रेजी	हिंदी	तमिल	बांग्ला	ओड़िआ
20.	डौग-फेस्ड वाटर स्नेक	-	उप्पू-अर पाम्बू	-	-
21.	कॉमन करैत	मनीर या करैत	कत्तू विरियान या कारुवेलान पाम्बू	कलाज, डोमना चित्ती	चित्ती
22.	बैंडेड करैत	गाओमन (बिहार)	पट्टाई कट्टू विरियान	शंखिनी	राना
23.	कोरल स्नेक	-	-	-	
24.	कोबरा (स्पैक्टेकल्ड)	नाग सांप	नाल्ला पाम्बू या नाग पाम्बू	गोखरो	गोखारा, गोखुरा
25.	कोबरा (मोनोकल्ड)	नाग सांप	नाल्ला पाम्बू या नाग पाम्बू	केंऔते	ताम्पा
26.	किंग कोबरा	नागराज	राजा नागम या कार्रु नागम	शंखचूड़	अहिराजा, शंखाचूड़ा मणियूड़ा
27.	सी स्नेक	दरिया सांप या समुद्र सांप	काडल पाम्बू		
28.	रसेल्स वाइपर	घोणस	कन्नाडी विरियान	चंद्र बोर्हा	चंद्र बोरा, चंद्रमुथिया बोडा
29.	सॉ स्केल्ड वाइपर	फूर्सा	सुरुताई पाम्बू	-	धूली नाग
30.	पिट वाइपर	हरा घोणस	कुझी विरियान या चेट्टा-थलाई पाम्बू	गेच्छो बोर्हा	कटकटिया नाग (बैंबू पिट वाइपर)

वर्षा सारिणी
पिछले 25 वर्षों में भारत में औसत वर्षा (मिलीमीटर में)

स्थान	जन.	फर.	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित.	अक्तू.	नव.	दिस.	योग
मदुरै	31	14	21	58	67	37	49	111	122	184	150	50	894
कोडईकनाल	82	39	51	124	156	108	117	177	177	256	253	129	1669
कोयम्बटूर	18	8	11	43	63	36	47	33	41	161	113	38	612
उटकमंड	35	12	32	85	158	156	201	147	138	202	157	48	1371
पालघाट	11	11	23	60	132	428	605	334	155	209	116	300	2384
मंगलौर	5	2	9	35	177	966	1019	607	272	208	79	15	2394
मुन्नार	18	21	36	122	279	782	1122	705	41	248	137	40	3551
हैदराबाद	8	11	12	26	29	107	161	135	171	73	31	5	769
बंबई	4	2	1	1	18	465	613	328	286	64	17	2	1801
महाबलेश्वर	5	3	5	25	47	939	2546	1764	686	154	47	5	6226
नागपुर	11	23	16	16	21	222	376	286	185	55	20	10	1241
अजमेर	9	7	6	7	15	59	159	168	73	9	3	5	520
दिल्ली	21	23	12	9	9	67	186	169	134	14	2	8	654
शिमला	65	70	64	46	58	149	416	419	182	33	10	27	1539
श्रीनगर	70	73	94	90	59	34	56	62	39	27	12	37	653
दार्जीलिंग	11	32	54	113	231	597	792	643	445	142	25	6	3091

स्थान	जन.	फर.	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित.	अक्तू.	नव.	दिस.	योग
पटना	15	22	9	8	30	158	276	340	237	54	8	5	1162
कलकत्ता	11	28	32	50	117	284	323	314	230	123	17	3	1532
नगा पहाड़ियां	31	83	115	265	462	529	609	500	411	177	37	17	3236
चेरापूंजी	18	48	195	665	1240	2640	2361	1799	1104	486	69	102	10727
पुरी	12	22	11	16	63	186	281	268	227	192	80	9	1367
मद्रास	24	7	15	25	51	53	84	124	118	267	308	139	1215
बंगलौर	7	9	10	44	107	71	111	136	163	153	61	13	885
त्रिवेंद्रम	23	21	37	106	208	356	223	145	138	273	205	75	1810
मध्य	50.4	25.6	12.9	90	416	490.3	514.9	443.3	491.5	316.8	218.3	161	3231
अंडमान द्वीप समूह													

सांपों की पहचान

सांपों के रंग और पैटर्न भिन्न भिन्न होते हैं; कभी कभी शिशु सांप के शरीर के चिह्न और रंगत वयस्कों से भिन्न होती हैं, अहानिकर सांप जहरीले सांपों से मिलते-जुलते हैं या फिर इसका उल्टा समझ लीजिए। ज्यादा निपुण प्रकृतिवद् भारत में पाए जाने वाले आम सांपों की जाति जानने के लिए बेहद बारीकी से उनके शल्क की गिनती और निरीक्षण करते हैं। यहां रेखाचित्रों में तालिका में शल्क और अन्य विशेषताएं बताई गई हैं। आशा की जाती है कि इन्हें देख-पढ़ कर अधिक से अधिक लोग इस प्रकार की सकारात्मक पहचान पद्धति को समझने-अपनाने को प्रेरित होंगे।

विधि : मरे हुए सांप की सावधानीपूर्वक जांच करते हुए कुंजी से तुलना कीजिए और सांप के प्रमुख लक्षणों का वर्णन करने वाली संख्या की ओर बढ़िए।

(1) दुम गोलाकार या लगभग गोल, अधिकांश जातियों के अधोभाग में चौड़े शल्क अथवा अधर प्रशल्क बड़े, कुछ में गायब..2

दुम बेहद चपटी, शरीर के आधे पश्च भाग में अधर प्रशल्क छोटे या फिर नदारद..29

दुम बेहद चपटी, अधर प्रशल्क बड़े..41

(2) अधर प्रशल्क चौड़े : आंखें नंगी या उघड़ी हुई तथा सुविकसित : आकार भिन्न भिन्न..3

अधर प्रशल्क नदारद; अल्पविकसित आंखें, विशल्कों से ढकी; बेहद छोटे तथा कृमि जैसे (केंचुआनुमा)..28

(3) अधर प्रशल्क आमतौर पर अधोभाग की पूरी चौड़ाई में फैले हुए; पृष्ठीय शल्क की कतारें 35 या कम..4

अधर प्रशल्क अधोभाग की पूरी चौड़ाई तक फैले हुए नहीं; पृष्ठीय शल्क की कतारें 39 या अधिक..26

(4) सिर के शीर्ष पर अनियमित ढंग के छोटे शल्क, आगे बड़े विषदंत, मुख के अंदर ऊपर की ओर मुड़े हुए..5

सिर खासा तिकोना; आंख और नासाद्वारों के बीच गहन संवेदी गर्त अथवा गढ़ा..*ट्राइम रेसुरस* वंश के हरा घोणस

सिर के शीर्ष पर पट्टिकाएं बाकी लगभग वैसा ही; वैसा ही लोरियल गर्त

(लोरियल-आंख और शीर्षाग्र के बीच का स्थान)......................*एग्किस्ट्रोडन* वंश के हरा घोणस

सिर के शीर्ष पर बड़ी पट्टिकाएं; यदि आगे के विषदंत हैं तो छोटे और स्थिर...6

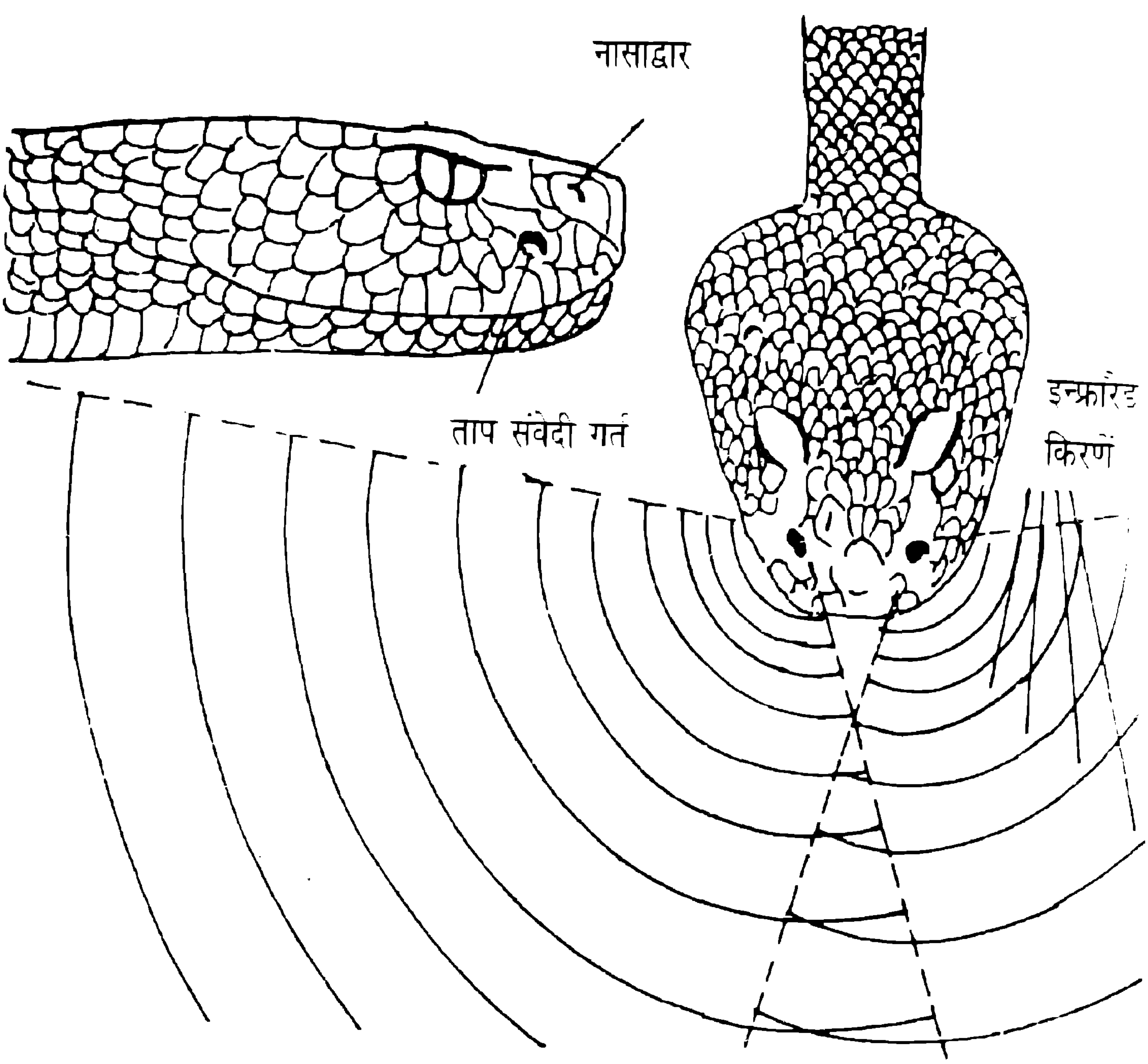
(5) बगल की शल्क पंक्तियां पृष्ठ शल्क पंक्तियों की अपेक्षाकृत छोटी और अधिक तिरछी; बीच की कतार पर हल्की चित्तियां तथा अगल-बगल हल्की लहरदार धारियां..सॉ-स्केल्ड वाइपर

नियमित शल्क पंक्तियां; शरीर के हल्के रंग की पृष्ठभूमि पर काले धब्बों की तीन कतारें..रसल घोणस

(6) विषदंत आगे; लोरियल विशल्क नहीं...7

विषदंत नहीं, लोरियल पर विशल्क प्रायः मौजूद...8

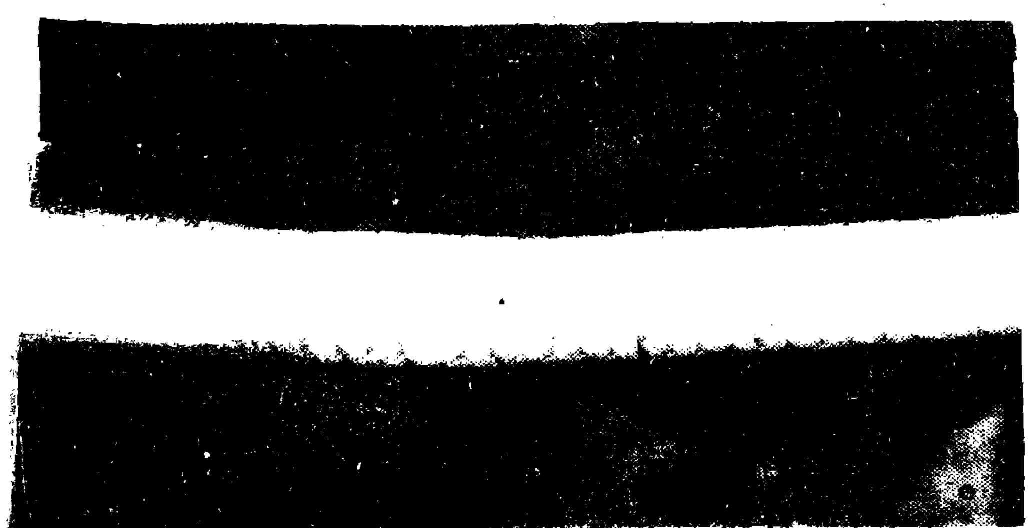
(7) सजीव हुड; ऊपर का तीसरा ओष्ठ नासा को छूता हुआ; कशेरुकी शल्क कतारें बढ़ी हुई नहीं; बंटा हुआ अधःपुच्छ..नाग



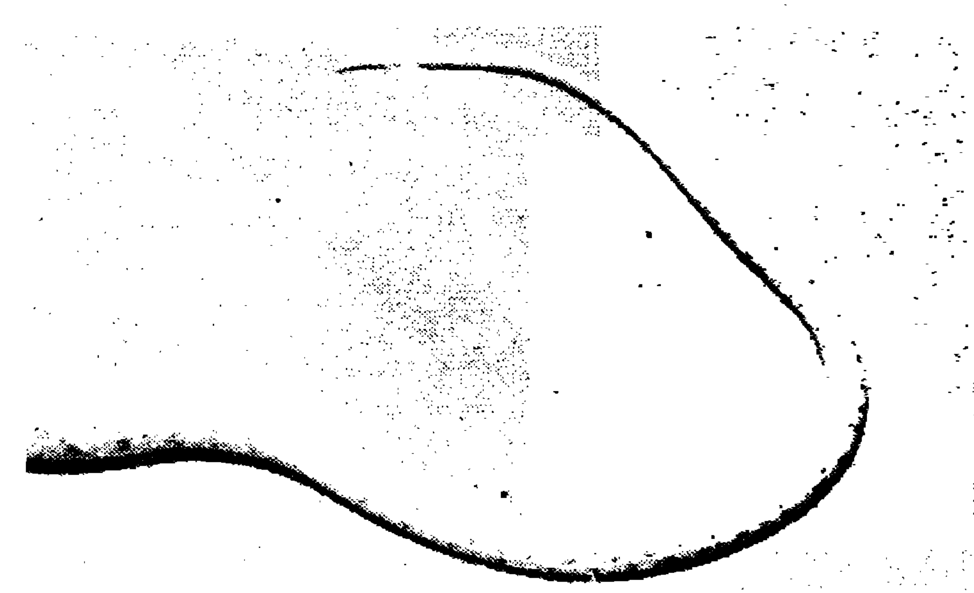
हरा घोणस का 'गर्त'



मिट्टी खोदते हुए सांप के पेट के छोटे शल्क



मैदानी, वृक्ष तथा मीठे पानी में रहने वाले सभी सांपों के पेट के चौड़े शल्क



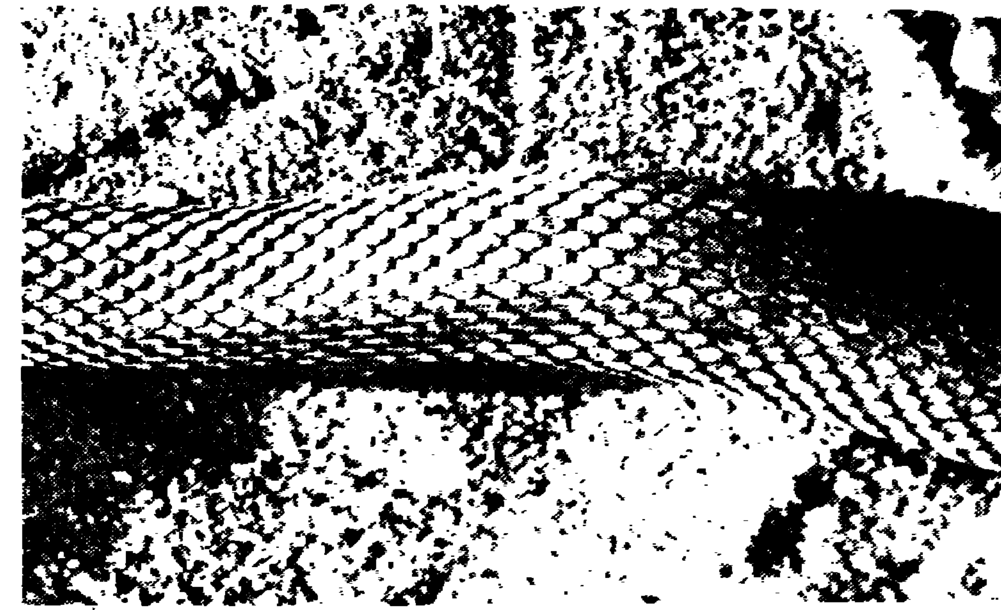
मैदानी, वृक्ष तथा मीठे पानी में रहने वाले सांपों की लंबी पतली शंडाकार दुम



धामन के चिकने चमकदार शल्क



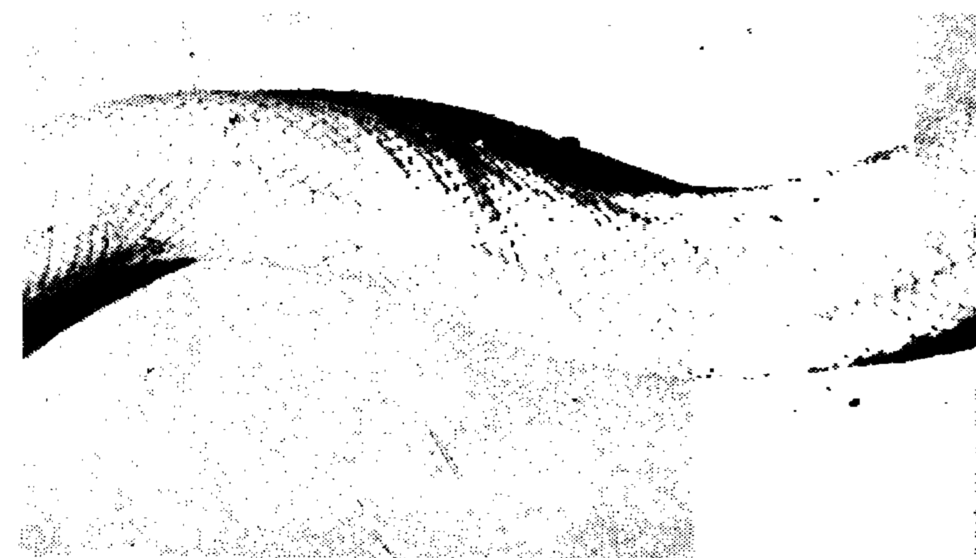
मिट्टी खोदते हुए माटी के सांप की छोटी भोथरी दुम



श्वानमुख जल सर्प (डौग फेस्ड वाटरस्नेक) के खुरदरे, ऊबड़-खाबड़ शल्क



समुद्री सांप की दुम



समुद्री सांप के अधर शल्क

हुड नहीं, ऊपर का तीसरा ओष्ठ नासाद्वार को नहीं छूता हुआ; कशेरुकी शल्क कतारें विशेष रूप से बढ़ी हुई; अधःपुच्छ बंटा हुआ नहीं.....................सामान्य करैत

(8) थूथन की ऊपरी सतह पर नासाद्वार वाल्व की तरह, अधर प्रशल्कों का साइज कम..9

अगल-बगल नासाद्वार, या लगभग ऐसे ही, वाल्वनुमा नहीं; अधर प्रशल्क बड़े..10

(9) चिकने शल्क; अधोभाग में धारियों का पैटर्न..

स्मूथ वाटर स्नेक नौतलित शल्क; शरीर पर काले धब्बों या क्रॉस-बार (आड़ी रेखाएं) वाला पैटर्न..डॉग-फेस्ड वाटर स्नेक

(10) पृष्ठ शल्क शुरू से आखिर तक चिकने..11

कम से कम कुछ पृष्ठ शल्क नौतलित..26

(11) आंखें गहरी काली, पुतली मुश्किल से ही दिखाई दें और काली या गहरी भूरी, जिसमें सफेद से लेकर फीके पीले चिह्न हों..12

(12) दोनों छोरों पर प्रशल्क कोणीय; नौ उपरि ओष्ठ..........................सामान्य संखारा

प्रशल्क कोणीय नहीं; आठ उपरि ओष्ठ..
बार्ड वुल्फ स्नेक

(13) प्रशल्क खांचेदार और अगल-बगल के नौतलित जिन पर चौड़ी काली पृष्ठधारी पट्टियां..लाल धामन

वैसे ही प्रशल्क, शरीर पर चमकदार चित्तियां या धब्बे..................उड़न सर्प

प्रशल्क ऊपर बताए जैसे नहीं..14

(14) आंखों की पुतलियां दीर्घवृत्ताका; गर्दन की अपेक्षा सिर बहुत अधिक चौड़ा..15

(15) सिर पर उल्टा 'वाई' के आकार का चिह्न अंकित; बगल की शल्क कतारें अत्यधिक तिरछी..मार्जार सर्प

(16) सिर और कंधरा काले या उन पर सुस्पष्ट काले चिह्न; वयस्कों की लंबाई 70 सें. मी. से कम; अधःपुच्छ 60 से कम; शरीर के मध्यभाग पर शल्क की 15 कतारें..रसल कुकरी सर्प

सिर और कंधरा पर गहरे या काले रंग का 'वी' का निशान; शरीर के मध्य भाग पर शल्क की 17 कतारें..पट्टित कुकरी सर्प

(17) शरीर के मध्य भाग पर शल्क की 19 से 23 कतारें; प्रशल्क 195 या इससे अधिक..18

(18) काले रंग पर हल्के क्रॉस-बैंड (नहीं भी हो सकते); शल्क की 21 या 23 कतारें..19

हल्के रंग पर गहरे चिह्न अक्सर दुम तक पहुंचते पहुंचते धुंधले या खत्म; शल्क की

19 कतारें..20

(19) अधःपुच्छ 100 से कम; ऊपर के ओष्ठ आठ..................................बैंडेड रेसर

(20) शरीर पर काली आड़ी रेखाएं (क्रॉस बार) या समचतुर्भज पैटर्न; छोटी कशेरुकी, गहरी धारी; गुदाद्वार के एकदम आगे 13 से 15 तक शल्क कतारें................ ....गलौसी बैलीड रेसर

(21) अवाक्षियों द्वारा आंखें ओष्ठ से विलग; शखास्थियां छोटी तथा क्रम में अनियमित; चोंच ऊंची कम चौड़ी ज्यादा; शरीर पर बने पैटर्न में अत्यधिक भिन्नता...रजत बांसी

(22) गुदा प्रदेश अविभाजित; प्रशल्क 217 या इससे अधिक...............अलंकृत सर्प
गुदा प्रदेश विभाजित; प्रशल्क 215 से कम..23

(23) शरीर के मध्य भाग में 23 से 27 शल्क कतारें; ऊपरी ओष्ठ सात................ ....ग्रीन
कीलबैक शल्क कतार 19; आठ या नौ ऊपरी ओष्ठ 24

(24) प्रशल्क 190 या ज्यादा; वयस्कों की लंबाई 195 सें.मी........................धामन

(25) प्रशल्क 160 से कम; अधिकतम लंबाई 1.25 मीटर से कम; पृष्ठवर्ती पैटर्न एकांतरित धब्बे वाला..पानी का सांप
पृष्ठवर्ती पैटर्न हल्की धारियों वाला...हुर्वा

(26) शरीर पर बड़े, भूरे, नियमित पर्याण; आगे के अध्योष्ठ विशल्कों पर संवेदी गर्त; वयस्कों की लंबाई 2 मीटर या ज्यादा.................................भारतीय अजगर
शरीर का पैटर्न ऊपर जैसा; अध्योष्ठ विशल्क नहीं; प्रशल्क 200 से कम अभ्यक्ष; लंबाई 1.5 मीटर से ज्यादा नहीं...27

(27) शरीर पर अनियमित काले और आंशिक रूप से मिले हुए धब्बों वाला पैटर्न; खुरदरी एकाएक शुंडाकार होती हुई दुम.......................................माटी का सांप
एक रंगी अथवा दूर दूर बने पट्ट; दुम बेहद भोथरी—लगभग सिर जैसी चौड़ी..दोमुंहा सांप

(28) रंग गहरे भूरे से लगभग काला; शल्क कतारें 18; शरीर का व्यास कुल लंबाई का पचासवां भाग; अधोभाग या पेट के शल्क दृष्टिगत नहीं............................ ....तनु अंधा सांप
शल्क कतारें 20, शरीर का व्यास कुल लंबाई के पचासवें हिस्से से ज्यादा नहीं...कॉमन ब्लाइंड स्नेक
रंग परिवर्तनीय शल्क कतारें 15,17; अधोभाग पर आमतौर पर चटख, सुस्पष्ट चिह्न; पेट के शल्क छोटे, लेकिन दिखाई देने वाले.............कोई भी शील्ड टेल स्नेक

(29) मैंटल शील्ड लंबे या बिदर में छिपे हुए; तुंड (रोस्ट्रल) का अग्रभाग सीधा और नोकदार..हुक नासीय समुद्री सर्प
मैंटल शील्ड तथा तुंड ऊपर जैसे नहीं..30

(30) शरीर के मध्य भाग पर छोटे प्रशल्क लेकिन अपने बगल वाले शल्कों से निश्चित रूप से बड़े..31
शरीर के मध्य भाग पर प्रशल्क नहीं या फिर बगल वाले या निकटतम शल्कों से बड़े नहीं..38

(31) प्रशल्क लगभग समान आकार के..32
सांप के अग्रभाग की ओर वाले प्रशल्क बड़े आकार के............................37

(32) सिर बहुत छोटा और गर्दन पतली, प्रशल्क 400 से ज्यादा..बैंडेड सी स्नेक
सिर और गर्दन ऊपर बताए जैसे नहीं, प्रशल्क 400 से कम.....................33

(33) शरीर के सबसे मोटे भाग के शल्कों के सिरे गोल या एकाएक नुकीले; सुस्पष्ट अथवा कुछ कुछ एक-दूसरे पर चढ़े हुए; जंभिकी (मैक्सिलरी) दांत आठ या कम..34
शरीर के सबसे मोटे भाग पर षट्कोणीय अथवा वर्गाकार शल्क, थोड़े थोड़े एक-दूसरे पर चढ़े हुए या साथ साथ जंभिकी दांत आठ या अधिक.........................35

(34) एक अग्रवर्ती शंख; काले छल्ले अंतरालों से, बहुत ज्यादा पतले.........यैलो सी स्नेक

(35) सिर के शीर्ष पर मोड़दार या घुमावदार पीला चिह्न, शिशु सर्पों में अधिक सुस्पष्ट, शरीर पर क्रॉस बैंड, शिशु सर्पों में काले, वयस्कों में कुछ हरापन लिए, प्रशल्क 314-372..पर्शियन गल्फ स्नेक
सिर के शीर्ष पर कोई चिह्न नहीं, काले से रंग के क्रॉस-बैंड या समचतुर्भुजी पैटर्न..36

(36) सिर का शीर्ष जैतूनी; गर्दन पर शल्क कतारें 30 या अधिक; प्रशल्क 302-390..बॉम्बे सी स्नेक

(37) प्रशल्क 225 या अधिक; अग्र प्रशल्कों की चौड़ाई शरीर की चौड़ाई से आधी...वाइपरीन सी स्नेक
प्रशल्क 200 से कम; अग्र प्रशल्क शरीर की चौड़ाई से आधे नहीं..मालाबार सी स्नेक

(38) पृष्ठ शल्क नोकदार तथा एक-दूसरे पर चढ़े हुए; सिर बड़ा तथा शरीर खासा मजबूत..लार्ज-हैंडेड सी स्नेक
पृष्ठ शल्क पास पास; आवास ऊपर जैसा नहीं..39

(39) सिर लंबा और चपटा; गर्दन छोटी; शरीर का पार्श्व बहुत अधिक चपटा..लौंग-नोज्ड सी स्नेक
सिर छोटा; गर्दन लंबी और पतली; शरीर कुछ कुछ बेलनाकार....................40

(40) प्रशल्क 350 से कम.......................................कॉमन स्माल-हैडेड सी स्नेक

(41) लंबे प्रशल्क वाला सी स्नेक दो प्रकार के एम्फीबियस सी स्नेक (*लैटिकौडा*) में से एक होगा

डा. एस.ए. मिंटन की पुस्तक
'एन एनोटेटेड की टू द एम्फीबियन्स एंड
रैपटाइल्स ऑफ सिंद एंड ला बेला' से रूपांतरित

विषैले सांपों की पहचान

खेत या मैदान में जिंदा सांप की पहचान आमतौर पर उसके रंग, पैटर्न या शरीर पर बने चिह्नों, आवास तथा उसके व्यवहार के आधार पर की जाती है। इस पहचान के लिए अनुभव और अभ्यास की आवश्यकता होती है। इसके लिए जिन सुरागों का इस्तेमाल किया जाता है, वो जबानी बताने-कहने से ज्यादा उपयोगी नहीं होते। एक मृत या पकड़े गए सांप की 'विषैला बनाम अहानिकर' के रूप में पहचान करना आसान है, विशेष रूप से यदि नमूना सांप ताजा है और उसे बुरी तरह कुचला या मारा नहीं गया है। पहचान के लिए जो गुर बताए गए हैं (चित्रों की सहायता से), उन्हें कोई भी ऐसा व्यक्ति इस्तेमाल कर सकता है, जिसे सांप के शरीर विज्ञान की थोड़ी सी भी जानकारी हो। किसी भी ऐसे जिंदा सांप को पकड़ना या हाथ नहीं लगाना चाहिए जिसके बारे में जानकारी न हो। जब तक कोई आम सांपों के बारे में न जानता हो, तो सकारात्मक पहचान मृत सांप के नमूनों पर की जा सकती है, जिन्हें फॉरमलिन में सुरक्षित रखा गया हो।

(1) यदि सांप की दुम चप्पू की तरह चपटी है और अधर प्रशल्क बहुत छोटे हैं या हैं ही नहीं, तो यह सी स्नेक यानी समुद्री सांप है और बेहद विषैला है। (एम्फीबियस सी स्नेक, *लैटिकौडा* के प्रशल्क काफी विकसित और चौड़े होते हैं।) स्थानीय प्रजातियों में 'हुक नासीय समुद्री सांप, पीत समुद्री सांप, रिंग्ड सी स्नेक, कोचीन बैंडेड सी स्नेक, कॉमन नैरो-हैडेड सी स्नेक तथा यैलो और ब्लैक सी स्नेक' के बारे में कहा जाता है कि इनका दंश बहुत घातक होता है। अन्य स्थानीय जातियों के बारे में जानकारी का अभाव है, लेकिन वे सब भी संभवतः खतरनाक ही होंगे।

(2) फण या हुड तथा झुकी हुई गर्दन से तुरंत पहचान की जा सकती है कि यह एक जिंदा नाग है। हालांकि कुछ अहानिकर सांप भी डराए जाने पर गर्दन थोड़ी चपटी या चौड़ी कर लेते हैं। मरे हुए नाग की पहचान करना ज्यादा मुश्किल है। गर्दन की खाल को खींचना कोई विश्वसनीय परीक्षण नहीं है। वैसे भी अधिकांश सांपों की गर्दन की खाल तभी तक खिंच सकती है जब वे ताजा ताजा मरे हों तथा उनके बदन में नमी या लचीलापन बरकरार हो। बाद में सख्ती आने पर नाग की गर्दन की खाल को भी फैलाया या खींचा नहीं जा सकता। यदि सिर बुरी तरह कुचला या क्षतिग्रस्त न किया गया हो तो उसके ऊपर के जबड़े के सामने के स्थिर लंबे विषदंत तथा एक बड़े तीसरे ओष्ठ विशल्क जो आंखों और

नथुनों के पास के विशल्क को स्पर्श करता है; का निरीक्षण करना चाहिए। इन दो अभिलक्षणों से सांप को निश्चित रूप से पहचाना जा सकता है। यदि इन पहचान चिह्नों को सुनिश्चित नहीं किया जा सकता हो तो फण या हुड के चिह्न को देखें, इसके बाद गर्दन के उस अधर भाग को देखें, जहां कि छत्र हो सकता है। नाग सांपों के शरीर के इस हिस्से पर चौड़ी काली पट्टियां होती हैं, जिनमें अक्सर बीच बीच में अनियमित ढंग से सफेद या पीली पट्टियां बनी होती हैं। शरीर का बाकी हिस्सा हल्का, गहरा या चितकबरा हो सकता है। भारत में किसी भी अहानिकर सांप के अधोभाग पर ऐसे चौड़े बैंड या पट्टियां नहीं बनी होतीं। (देखें—नाग का वर्णन)। नागराज दक्षिण-पश्चिमी घाट, हिमालय तथा बंगाल, उड़ीसा व अंडमान के मैंग्रोव जंगलों तक ही सीमित है। अपने बड़े आकार, पीली पट्टियों तथा हुड पर सुस्पष्ट उल्टे 'वी' के निशान के कारण यह आसानी से पहचाना जाता है।

(3) यदि किसी सांप के सिर का पूरा शीर्ष अनियमित ढंग से संयोजित छोटे शल्कों से ढका है तथा अधर प्रशल्क पेट की पूरी चौड़ाई तक फैले हुए हैं तो वह सांप निश्चय ही विषैला घोणस होगा।

फूर्सा खुश्क और खुले मैदानी इलाकों में आम पाया जाता है, जबकि रसल घोणस छोटी चट्टानी पहाड़ियों, खुले जंगलों तथा घनी बाड़ की झाड़ियों में पाया जाता है। इसके विपरीत लैवेन्टाइन घोणस आम पाया जाने वाला सांप नहीं है और यह सिर्फ कश्मीर के कुछ हिस्सों में ही पाया जाता है।

(4) अगर किसी सांप के नासाद्वारों और आंख के बीच गढ़ा या छिद्र जैसा हो (देखें : रेखाचित्र) तो वह हरा घोणस है, जो चौदह जातियों में से एक है और यह सिर्फ भारत के पर्वतीय जंगलों तथा अंडमान व निकोबार द्वीप समूह में ही पाया जाता है। हालांकि यह एक विषैला सांप है, लेकिन अपवाद रूप में सिर्फ बड़े सांप ही घातक दंश दे सकते हैं।

(5) यदि सांप के सिर का शीर्ष बड़े विशल्कों द्वारा ढका हुआ है, कशेरुकी शल्कों की कतारें निश्चित रूप से बढ़ी हुई हैं तथा दुम के अधोभाग के प्रशल्क एक कतार में हैं, तो वह करैत होगा जो बेहद विषैला होता है। सामान्य करैत की पहचान करने के लिए अन्य उपयोगी विशेषताएं इस प्रकार हैं –

(क) यह काला या गहरा भूरा होता है, जिसके शरीर पर पतली सफेद क्रॉस पट्टियां होती हैं, जो अक्सर शरीर के अग्र भाग पर धब्बों के रूप में बिखरी हुई होती हैं।

(ख) इसकी आंखें छोटी और काली होती हैं और पुतली तो लगभग दिखती ही नहीं....तथा;

(ग) आंखों व मुंह के बीच का विशल्क (देखें : रेखाचित्र) नदारद हो।

जहां तक उत्तर-पश्चिमी भारत में पाए जाने वाले पट्टित करैत का संबंध है, यह अपनी विशिष्ट रीढ़ की हड्डी तथा बराबर चौड़ाई की गहरी पीली और काली क्रॉस पट्टियों

के कारण दूसरे सांपों से स्पष्टतः भिन्न लगता है। अन्य करैत दुर्लभ हैं (देखें : जांच सूची) तथा इनकी पहचान उन सूत्रों से हो सकती है, जो 5 नंबर के वर्णन के प्रारंभ में बताए गए हैं।

(6) यदि शल्क कतारों की संख्या 13 या 15 हो, अधःपुच्छ शल्क युग्मित हों, लोरियल विशल्क गायब हों तथा आगे विषदंतों का जोड़ा हो, तो वह प्रवाल सांप होगा, जो विषैला होता है। क्योंकि भारत में पाई जाने वाली इसकी पांच जातियों के विष के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं है, अतः बड़े आकार के प्रवाल सांप से कुछ सोच-समझ कर और सावधानीपूर्वक ही छेड़छाड़ करनी चाहिए।

(7) यदि कोई सांप ऊपर बताए गए या पूर्ववर्ती छह वर्गों की कसौटियों पर खरा नहीं उतरता, तो समझिए कि वो विषैला नहीं है।

डा. एस.ए. मिंटन की पुस्तक
'एन एनोटेटेड की टू द एम्फीबियन्स
एंड रैपटाइल्स ऑफ सिंद एंड ला बेला' से रूपांतरित

संदर्भ-ग्रंथ सूची

बनर्जी आर.एन.; *थेरप्यूटिक एडवान्सेज इन द ट्रीटमेंट ऑफ पॉयजनस स्नेकबाइट;* चौथी अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस ऑफ टॉक्सीनोलाजी, तोक्यो 1974 की कार्रवाई

बेहुरा बी.के.; *स्नेक्स ऑफ उड़ीसा;* जूलॉजिकल सोसाइटी ऑफ उड़ीसा, 1966

बैलायर्स ए.; *लाइफ ऑफ रैप्टाइल्स;* खंड I तथा II वीडेनफील्ड एंड निकलसन, लंदन, 1969

भनोतर आर.के.; आर.के. भटनागर तथा डा. के.ठाकुर; *एक्सपोर्ट ऑफ इंडियाज वाइल्ड लाइफ एंड इट्स बायोलॉजिकल सिग्निफिकेंस;* चीतल, खंड 16; नं.3, 1975//

विश्वास एस. तथा डी.पी. सान्याल; ए *न्यू स्पीसीज ऑफ वुल्फ स्नेक (लाइकोडॉन) फ्रॉम द अंडमान एंड निकोबार आइलैंड्स;* जूलॉजिकल सोसाइटी, कलकत्ता की कार्य-विवरणी का एक अंश 18 : 137-141, 1965

बोगर्ट सी.एम.; *डेन्टिशनल फिनामिना इन कोबराज एंड अदर एलापिड्स;* अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री, खंड 81, अनुच्छेद 3; न्यूयार्क, 1943

बुशेर्ल डब्ल्यू. तथा ई.ई. बकले; *वेनोमस एनिमल्स एंड देअर वेनोम्स;* एकेडेमिक प्रेस, न्यूयार्क, 1971

कैरेस रोजर; *वेनोमस एनिमल्स ऑफ द वर्ल्ड;* प्रैंटिस हॉल इन्का.; न्यूजर्सी 1974

देवरस पी.जे., स्नेक्स ऑफ इंडिया, नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली, 1970

देवरस पी.जे. तथा एन.ई.वाड; *इकोलॉजी ऑफ एकिस कैरिनेटस;* जर्नल आफ द यूनिवर्सिटी ऑफ बॉम्बे, 1956

डेरानियागला पी.ई.पी.; *कलर्ड एटलस ऑफ सम वर्टिब्रेट्स फ्राम सीलोन* (स्नेक्स खंड 3); गवर्नमेंट प्रेस, सीलोन, 1955

डिटमार्स आर.एल.; *रैप्टाइल्स ऑफ द वर्ल्ड;* मैक्मिलन्स, न्यूयार्क, 1946

डिटमार्स आर.एल.; *फील्ड बुक ऑफ नॉर्थ अमेरिकन स्नेक्स;* डबलडे एंड कंपनी, इन्का; न्यूयार्क, 1949

डनसन, डब्ल्यू.ए. (संपा.) *बायोलॉजी आफ द सी स्नेक्स;* यूनिवर्सिटी पार्क प्रेस, बाल्टीमूर, 1975

फिटसिमान्स वी.एफ.एम.; *स्नेक्स ऑफ सदर्न अफ्रीका;* पुर्नेल एंड सन्स; केपटाउन, 1962

गैन्स, कार्ल; ए. डिबिलेयर्स तथा टी.एस.पार्सन्स; *बायोलॉजी ऑफ द रैप्टिलिया,* खंड 1-4, एकेडेमिक प्रेस, लंदन, 1969

गैन्स, कार्ल; *बायोमैकेनिक्स;* जे.बी. लिप्पिकॉट कंपनी, फिलाडेल्फिया, 1974
घारपुरे, के.जी.; *स्नेक्स ऑफ इंडिया;* पापुलर बुक डिपो, बॉम्बे, 1937
किंगहॉर्न, जे.आर.; *स्नेक्स ऑफ आस्ट्रेलिया;* एंगस एंड राबर्ट्सन, सिडनी, 1969
क्लौबेर, एल.एम.; *रैटल स्नेक्स;* यूनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया प्रेस, 1956
कुंट्ज,आर.ई.; *स्नेक्स ऑफ ताईवान;* यू.एस. नवल मेडिकल रिसर्च यूनिट, ताईवान, 1963
लीकी, जे.एच.ई.; *आब्जर्वेशन्स मेड ऑन किंग कोबराज इन थाईलैंड;* नेशनल रिसर्च काउंसिल आफ थाईलैंड की पत्रिका, खंड 5, 1969
मैक्कोलोह, एन.सी. तथा जे.एफ. गिनारो जूनियर; *इवैल्यूएशन ऑफ वेनोमस स्नेकबाइट इन सदर्न यू.एस.;* जे. फ्लोरिडा मेडिकल एसो. खंड 49, न. 12; 1963
मिंटन, एस.ए.; *एनोटेटेड की टु द एम्फीबियन्स एंड रैप्टाइल्स ऑफ सिंद एंड लॉ बेला,* वेस्ट पाकिस्तान, अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री, नं. 2081; न्यूयार्क, 1962
मिंटन, एस.ए. तथा एम.आर.मिंटन; *वेनोमस रैप्टाइल्स,* चार्ल्स स्क्रिब्नर्स सन्स; न्यूयार्क, 1969
मूर्ति, टी.एस.एन.; *सम स्नेक्स फ्राम द अन्नामलाइज एंड कार्डामोन हिल्स;* जर्नल ऑफ पुणे यूनिवर्सिटी, 1971
निकलसन, ई.; *इंडियन स्नेक्स; हिग्गनबाथम एंड कंपनी;* मद्रास, 1870
पार्कर, एच.डब्ल्यू.; *नेचुरल हिस्ट्री ऑफ स्नेक्स;* ब्रिटिश म्यूजियम (एन.एच.) लंदन, 1965
पीटर्स, जे.ए.; *डिक्शनरी ऑफ हर्पेटोलॉजी;* हाफनर पब्लि.कं.; न्यूयार्क, 1964
पिटमैन, सी.आर.एस.; *स्नेक्स ऑफ उगांडा;* कोडिकोट, व्हेल्डन एंड वेल्से लि.लंदन, 1974
पोप, सी.एच.; *द जियंट स्नेक्स;* रूटलैज एंड केगन पॉल, लंदन, 1961
पोर्टर, के.आर.; *हर्पेटोलॉजी;* डब्ल्यू.बी.सौंडर्स कं.; लंदन, 1972
राजेंद्रन, एम.वी.; *अवर कंट्रीज स्नेक्स (तमिल);* वेल प्रिंटर्स, पलयमकोट्टाई, 1968
रिचेनबाख- क्लिके; एच. तथा ई. एल्कान; *डिजीजेज ऑफ रैप्टाइल्स;* टी.एफ.एच. पब्लिकेशन्स, न्यू जर्सी, 1965
रीड, एच.ए.; *वेनोमस एनिमल्स एंड देअर वेनोम्स;* (डब्ल्यू.बुशेर्ल तथा अन्य); एकेडेनिक प्रेस, न्यूयार्क, 1968
रोमर ए.एस.; *ओस्टियोलॉजी ऑफ द रैप्टाइल्स;* यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, शिकागो, 1968
रोज वाल्टर; *रैप्टाइल्स एंड एम्फीबियन्स आफ सदर्न अफ्रीका;* मैस्क्यू मिलर, केपटाउन, 1962
रसैल, एफ.ई. तथा आर.एस. शर्फेनबर्ग; *बिबलियोग्राफी आफ स्नेक वेनोम्स एंड वेनोमस स्नेक्स;* बिबलियोग्राफिक एसोसिएट्स इन्का., केलिफोर्निया, 1963
रसैल, डा. पैट्रिक; *एन एकाउंट ऑफ इंडियन सर्पेंट्स क्लैक्टेड ऑन द कोरोमंडल कोस्ट;* शेक्सपीयर प्रेस, लंदन, 1796

सवाई, वाई. तथा अन्य; *इपिडेमियोलॉजिकल स्टडी आफ स्नेकबाइट्स इन साउथ-ईस्ट एशिया,* जेपनीज जर्नल ऑफ एक्सपेरिमेंटल मेडिसिन, खंड 42, नं. 3; 1972

सवाई, योशियो तथा मनाबू होम्मा; *स्नेकबाइट्स इन इंडिया;* न्यूजलैटर ऑफ द मद्रास स्नेक पार्क ट्रस्ट, खंड 7; 1975

शर्मा, बी.डी. तथा टी.शर्मा. *स्नेक्स ऑफ जम्मू एंड कश्मीर;* न्यूजलैटर आफ द मद्रास स्नेक पार्क ट्रस्ट, खंड 1, नं. 2

शॉ, सी.ई. तथा शेल्डन कैम्पबैल; *स्नेक्स ऑफ द अमेरिकन वेस्ट;* नॉफ, न्यूयार्क, 1974

सिंह, एल. तथा अन्य; *क्रोमोसोम्स एंड द क्लासीफिकेशन ऑफ द स्नेक्स ऑफ द फेमिली बोइदे;* सिटोजेनेटिक्स 7/3, 1968

स्मिथ एच.एम.; *स्नेक्स एज पैट्स;* टी.एफ.एच. पब्लिकेशन्स, न्यूजर्सी, 1965

स्मिथ, एम.ए.; *मोनोग्राफ ऑफ द सी स्नेक्स;* ब्रिटिश म्यूजियम (एन.एच.), लंदन, 1926

स्मिथ, एम.ए.; *फौना ऑफ ब्रिटिश इंडिया,* खंड 3, *सर्पेंट्स;* सर्वे ऑफ इंडिया रिप्रिंट, देहरादून, 1961

स्टीवर्ड, जे.डब्ल्यू.; *स्नेक्स ऑफ यूरोप;* डेविड एंड चार्ल्स लि.; ग्रेट ब्रिटेन, 1971

स्टिडवर्दी, जे.; *स्नेक्स ऑफ द वर्ल्ड;* पॉल हेम्लिन, लंदन, 1969

टेलर, ई.एच.; *सर्पेंट्स ऑफ थाइलैंड;* यूनिवर्सिटी ऑफ कानसास बुलेटिन 45, नं. 9; जून, 1965

टेरेंट, एव, पी.वी., *हर्पेटोलॉजी;* इजरायल प्रोग्राम फॉर साइंटिफिक ट्रांसलेशन्स, यरुशलम, 1965

अंडरवुड, जी; *ए कंट्रीब्यूशन टू द क्लासिफिकेशन ऑफ स्नेक्स;* ब्रिटिश म्यूजियम (एन. एच.), लंदन, 1967

विसेर, जॉन ; *पायजनस स्नेक्स ऑफ सदर्न अफ्रीका;* हावर्ड टिम्मिन्स, केपटाउन, 1964

वाल, मेजर एफ.; *पायजनस टैरेस्ट्रायल स्नेक्स ऑफ ब्रिटिश इंडिया;* बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी, 1928

वाल्टनर, आर.सी.; *ज्योग्राफिकल एंड आल्टीट्यूडिनल डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ एम्फीबियन्स एंड रैप्टाइल्स इन द हिमालयाज,* भाग 1-4; चीतल, खंड 16 नं. 1,2,3,4; 1975

व्हिटेकर, आर.; *बाइट्स ऑफ एचिस कैरिनेटस;* जे.बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी, 67(2), पृष्ठ 335-37; 1970

व्हिटेकर, आर; *पिट वाइपर बाइट्स एट ए साउथ इंडियन टी एस्टेट;* जे बी एन एच एस, 70(1), 1973

वारेल, एरिक; *डेंजरस स्नेक्स ऑफ आस्ट्रेलिया एंड न्यू गुवाना;* एंगस एंड राबर्ट्सन, सिडनी, 1963

अनुक्रमणिका